

वारविषघटी॥ ॥ नखाह्यं द्वादशदिक्कशैलाबाण
श्रुतत्वानि पथाक्रमेण॥ सूर्यादिवारेषु परंचतस्रो
नाड्यो विषं स्यात्तुल्यवर्जनीयाः॥ १००॥ ७७॥ ७८॥

टी० सूर्यदिशानीतकविषघटीचक्रमेदेखनापरंतु अंतर्काचारघटीनि
अवधारकोविवाहमेत्यागकरना विषघटीचक्रं॥

र	च	म	जु	शु	श
२०	२	१२	१०	७	५

दिनरात्रमुहूर्त॥ ॥ शिवसर्पमिश्रपित

रोवसुतलविश्राभिजिदुहिणः॥ मुरपट्टिदैवदनुजाः शंबर
नाथाऽर्यमाख्यभगाः॥ १०१॥ दिवसमुहूर्तः कथितादशपं
चमितास्तथैवरात्रेश्च॥ रुद्राजपादाबहिर्बुध्माख्यस्तत

श्वपूषाख्यः॥ १०२॥ अश्विपमवन्निधातुमुधाकरास्त्वदितिसु
रमंत्री॥ ह्रीस्तीक्ष्णकरस्त्वाष्ट्रः प्रभंजनाश्चतिपंचदश॥ १०३

टी० यहसत्रदिनकेमुहूर्त और रात्रीकेमुहूर्त पथाक्रमसेचक्रमेदेखना

आर्द्रा	आश्ले	अश्वि	म	प	पूषा	उषा	अभि	रो	ज्ये	वि	मू	श	उका	दूका	दिवा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त
आर्द्रा	उका	उका	रे	अभि	भ	उ	रो	मू	पुष्य	श्र	ह	विज्रा	स्वा	रात्री	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त

वारदुर्मुहूर्त॥ ॥ अर्यणोभानुवारे शशिधरदिवसे राक्षस
ब्रह्मसंतौपित्राग्नेयौकुजाहेशशिसुनदिवसे चाभिजित्संतकः
स॥ जीवाहे राक्षसान्तौ भृगुसुनदिवसे ब्राह्मपित्र्यावहीशौ
सौरावेते विवर्ज्यस्त्वथच निधनदामंगले दुर्मुहूर्तः॥ १०४

टी० सूर्यवारसे शनिवारतक जैसा रविवारको उत्तराफाल्गुनीहोनेसे
त्यागकरना इस्काक्रमचक्रमेदेखना वारदुर्मुहूर्तचक्रम॥ ॥

अभिजितमाह॥ ॥ वैश्वमुनराषा

हांतस्य प्रांत्यश्चतुर्थचरणः॥ अ

वणस्य पंचदशं शस्ताभ्यामिति

त्वाभिजिज्जागः स्यात्॥ १०५॥ ॥

सू	च	म	जु	शु	श
उका	मूल	म	अभि	मूल	रो
०	रो	क	०	मृग	म

टी० उत्तराषाढाका अंतका चतुर्थचरण और अवणका प्रथम १५ अंशमिल
करको अभिजितकी प्राप्तीहोतीहै इसप्रकारसे अभिजितकी उत्पत्ती जानना

वारमुहूर्तः ॥ बुधशुक्रदुर्जीकानादिनेरेतेर्निवा

हिता ॥ कन्यासुरवमवाप्तेति पुनारोग्यधनान्विता १०६

टी० बुधशुक्रचंद्रशुक्रनक्षत्रवारमेविकाहकरे तो कन्यासुख आरोग्य
ता धन इस करको शुभ होती है ॥ बाणमाह ॥ ॥

रुग्नेनाद्यायातति ध्येयंतकष्टः शोषेनामद्याभितर्कदुशोषे ॥

रोगोत्तरी राजचौरौ च मृत्युबाणश्चापराक्षिणात्प्रसिद्धः ॥

टी० विवाहलग्नमें शुक्रपक्षादि तिथी मिलावना रोगभाग है न श्रेष्ठ परहे रोगका
परीषरहे तो अग्निबाण शेष रहने रोगज बाण शेष रहने तो चौरबाण शेष रहने तो मृ
त्युबाण जानना यह योगदक्षिणदेशमें प्रसिद्ध है आगे चक्रमेतिथी सहित स्पष्टदे
खना

	मे	रु	मि	क	कि	क	जु	रु	प	म	कु	नौ	गो	मि	प्र	ले	क	म	ति
रोग बाण	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
अग्नि बाण	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
राज बाण	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
चौर बाण	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६
मृत्यु बाण	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९

बाणपरिहारः ॥ रात्रौ चौररुजौ दिवानरपतिर्वन्दिः

सदा संध्यो मृत्युश्चाथ शनौ नृपे विधिभृतिर्भौ मेघिरो

शैरवौ ॥ रोगो यत्र तगेह गोप नृपसेवाया नृपाणि प्रहे व

ज्योत्स्नक्रमशो नृपैरुगमलस्थापालचौरा मृतिः ॥ १०७

टी० रात्रीमें चौरबाण और रोगबाण का त्याग करना दिनमें राजबाण
का त्याग करना और अग्निबाण का सर्वकालमें त्याग करना मृत्युबाण
का त्याग संबंधी करना आगे चक्रमे शनिवारको राजबाण बुधवार
को मृत्युबाण वंगलवारको अग्नि और चौरबाण शनिवारको रोग
बाण यह गंधर्वाणमें मौजी बंधन घरका बनावना राजाकी सेवा
या आदिबाह्मणमें कर्म त्याग करना — चक्रमे स्पष्ट देखना

बाणपरिहारचक्रं

संक्रांतिघटी॥ देवद्वंद्वकर्तव्यो

रोग	अग्नि	राज	चौर	मृत्यु	यहबाण ५
सूर्य	मग	शनि	मंग	बुध	यह ५ बार
रात्री	सदा	दिन	रात्री	संधी	यहकाल
जनेउ	घर	सेवा	यात्रा	विवाह	यहवर्ज

शशेनाड्योकाः खनृपाः क
मात्॥ वज्याः संक्रमणेर्कादेः
आयोर्कस्यातिनिहिताः॥ १०९
टी० सूर्यसेशनीतकग्रहकी संक्रांत

की आदि अंत की घड़ी त्याग करना परंतु सूर्य सं
क्रांत की घड़ी निहित है सो चक्र पर से मालूम हो

सु	च	म	बु	शु	शु	शु
१३	२	९	६	८	९	१०
प	च	प	च	प	च	प

अंधादि संज्ञा॥ मेष वृष मृगेंद्रश्च दिवसेषां प्रकीर्तिताः॥ नृ
युक् कर्कटकन्याश्च रात्रावंधाः प्रकीर्तिताः॥ ११०॥ तुला च वृश्चि
कश्चैव दिवसे बधिरौ तथा॥ धनुश्च मकरश्चैव बधिरौ निषिकी
र्तितौ॥ १११॥ कुंभमीने च पंगू द्वौ दिवरात्रौ यथाक्रमं॥ ११२॥

टी० मेष वृष सिंह यह दिन में अंध रहते हैं मिथुन कर्क कन्या यह रा
त्री में अंध रहते हैं तुला वृश्चिक यह दिन में बहिर रहते हैं धन मकर
यह रात्री में बहिर रहते हैं कुंभ दिन में पंगू रहता है मीन रात्री में पंगू
रहता है चक्रमेष यथाक्रम से देखना— अंधादि चक्रम॥

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र	दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र
अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	बधिर	बधिर	बधिर	बधिर	पंगू	पंगू

अंधादि दोष॥ ॥ अंधे वैधव्यमाप्नोति दारिद्र्यं बधिर

तथा॥ अर्धनाशो भवेत्यंगाविति धात्रा विनिश्चितं ११२

टी० अंधलग्न में विवाह होय तो विधवा होय बधिर लक्ष में दरिद्रता पंगु
लग्न में द्रव्यनाश इस लग्न को विवाह में त्याग करना

रात्र पदोष॥ ॥ कर्कलग्न में यवा मेषघटांशो यदि दी

यते॥ तुलायां मकरे चंद्रवैधव्यं जायते ध्रुवं॥ ११३

टी० कर्कलग्न में अथवा मेषलग्न में कुंभांश जो होय तुला और मकर
इसमें चंद्रमा होय तो यह तीन योग वैधव्यकारक हैं इस्का त्याग करना—

तिथि पर त्वे लग्न वर्ज्य॥ ॥ प्रतिपदितुलामकरौ सिंह

मकरौ हतीयायां॥ कन्यामिधुने पंचम्यां सप्तम्यां चैव

भनुः कर्क ॥ ११४ ॥ नवम्या कर्क सिं हो एकादश्यांतु भनुमी

नौ ॥ चण्डेश्वर पंचमी नैऋत्यं कर्क मिति धियो गात् ॥ ११५ ॥

हो० प्रतिपदा के दिन मुला और मकर राशियां मूल होता है तभी या के दिन किं
ह और मकर रा० पंचमी के दिन कन्या और मिथुन रा० सप्तमी को पन और
कर्क रा० नवमी को कर्क और सिं रा० दशमी को मकर और मीन रा० चमो
दशी को मीन और मीन रा० यह लघु प्रतिपद्योग है मूल्य तो नई सो त्याग कर म

दोष निवारण ॥ ॥ शुनं विना के दृग्वौ मरे ज्येष्ठ

कोण गोवापि हिलक्षमेक म ॥ निर्दंति दोषां हि

रातं भृगुश्च रातं बुधो वापि हि चर्य मूर्तिः ॥ ११६ ॥

हो० गुरु के दूमे और त्रिकोण मे ॥ १४ ॥ ११ ॥ १५ ॥ तत मस्थान वर्जित होय तो
१००००० दोष कानाश करता है शुक्र १०० दोष कानाश करता है और बु
ध १०० दोष को नाश करता है ॥ राशी के उदय ॥ ॥

कुरुस्वरस्त्रा गुणवाण दस्त्रा येदाश्रमाय नवेद रासा ॥ ११

स विराभाशर रात्र रासा मे पात्वा दुल्लमतस्तुलाया ॥ ११७ ॥

हो० यह राशी के उदय चक्र मे देखना है तुलनात्थ कर राशी का मान जानना

मेष	वृषभ	मिथु	कर्क	सिंह	पुष्य	तुला	चिन्म	धन	मकर	कुंभ	मीन
१२९	२१३	३०४	१५३	३४५	३२५	३१५	३४५	३५२	३०४	२१३	१२९

हो० येषां दिवा रल स काश्रमाणां राहो और पल दस्त्रा क्रम चक्र मे देखना

म	र	मि	क	सि	र	तु	र	ध	म	कुं	मी	राशी
३	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	घड़ी
५१	५३	५	५३	५५	३५	३५	५५	५२	५	५३	५१	५३

लघु भोग काल ॥ मीन जेस प्रथम पंचम्या निविपत्तानि तु भवेकुं

भोती पुन शरादि विंशति न भुक् द मे ॥ ११८ ॥ कर्क चा ये भनाः स

यो सिंहात्पो कट्टु मिमना ॥ मुला गदिक च वट त्रीणि लघे स्वेकं प्रा संमि

हो० जिस राशी पर सूर्य रात है सोल प्र उदय काल मे एक दिन कितना एतिः

भोग करता है यह चक्र पर देखना मकरना — भोग चक्र म

म	र	मि	क	सि	र	तु	र	ध	म	कुं	मी	राशी
७	८	१०	११	१३	१०	११	१३	१३	१०	८	७	७
१५	१५	१०	१३	१३	१५	१५	१३	१३	१०	१५	१५	१५

उदयास्तलग्न॥यस्मिन् राशौ घटासूर्यस्तलग्नमुदयेभ
वेत्॥तस्मात्सप्तमराशिस्तुअस्तलग्नंतदुच्यते॥१२०

टी० जिस राशी पर सूर्य रहै सो उदय लग्न जिस लग्न पर अस्त होय सो
सूर्य से सप्तम स्थान ऐसा उदय और अस्त जानना—

नवांशमाह॥ ॥वृष मिथुन कन्या तुला धनी श्वष

स्तथा॥एते शुभानवांशास्तुततो न्येकनवांशकाः॥२२१

टी० वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन इस लग्नो के नवांश विवाह लग्न
ग्रमे १२ लग्न को होय तो शुभ इससे दूसरे लग्न अशुभ ये वादि १२ लग्न
और अंश ७ को एक मे है उस जे जिस अंशो को वर्ग शुद्धी आवे उस अंश के नी
चे को एक मे जो लग्न होय सो लेना और अंश घड़ी इसके अयनांश देना औ
र अपना भुक्त काल जानना को एक मे चार अंक है उसका नाम राशी अंश
कलाविकलाजानना राशी की संज्ञा शून्य होय तो मेष और एक होय तो वृ
षभ इस प्रकार से वारो राशी का ज्ञान करना— नवांशचक्रम् ॥

अष्टमविचार

लग्नादष्टमराशीशः

केंद्रगः शुभवीक्षितः

यदादष्टमलग्नोत्पं

दोषमाशुव्यगोहति१२३

टी० विवाह लग्न से अष्टम

राशी का स्वामी केंद्र मे हो

य अथवा शुभ ग्रह देखते

होय तो लग्न संबंधी दोष को

नाश करता है—

दृष्टकालीनस्पष्टसू

यैवनावनेकाक्रम-

गतगम्यादिनाहतद्यु

भुक्तेखरसात्रांशवि

युग्युतोग्रहः स्यात्॥

	वृ	मि	क	कं	सु	ध	मी
मेष	१०	६०	१०	१०	१०	१०	१०
वृषभ	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मिथुन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कर्क	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
सिंह	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कन्या	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
तुला	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वृश्चि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
धन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मकर	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कुंभ	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मीन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

तत्काल भवस्तथापदिष्ट्या रश्मि सैल अस्मानसं पुनस्त्वात्
 टी० पंचांगमे प्रहरे कोष्टकमे आठ दिनके अवधी का सूर्य है परंतु पौर्णि
 मा का सूर्य स्पष्ट है सो जिस दिन का अघाने को करना होय वह दिन मि
 न कोउ स्ते सूर्य की मती कोष्टक मे की गुण देना और ६० से भाग लेना जो अं
 क आवे सो अंश घड़ी पल जानना यह आगे का सूर्य वनावने का प्रकार अब
 पीछे का सूर्य वनावना केष्टक मे पौर्णिमा का सूर्य है तो अघाने को पीछे ल्या
 वना होय तो पंचांग स्पष्ट सूर्य मे अंश घड़ी पल कमती करना और आगे
 का सूर्य वनावना होय तो वह फल अंश घड़ी पल पंचांग स्पष्ट सूर्य पे पि
 लाय देना तो तत्काल सूर्य होता है कोउ दाहरण से स्पष्ट जानना—

भुक्त दिन का उदाहरण

शके १७९० माघ शुक्ल नवमी ९ शुक्रवार के दिन सूर्य

किंतु न सो ल्यावने का प्रकार चालन क्रम ६ दिन

सूर्य की गति

॥ ॥ स्पष्ट सूर्य का उत्तर

घटी	पल	रा. अं. क. वि
६१	५ गति गुण्य	पंचांग स्पष्ट वि ९ १६ २० ३१
६	६ गुणक ६ दि	चालन क्रम ६ ६ २०
	न २६ योगिमा	अंश स्पष्ट
	के अंश से गुणना	शेष संख्या ९ १० १४ ५

३६६ ३० गुणन फल भा ६०

यह स्पष्ट सूर्य जानना—

३६६ १६ सं

गुण्य ६ बाकी पल

गुणक ६०

उक्त ३६०

भा ६० ३६० (६ घटी

० ३० बाकी

भा ६० १००० (३० पल

० ० बाकी

अभुक्तदिनका उदाहरण ॥

शके १७९० माघ कृष्ण द्वाविंशति के दिन का स्पष्ट सूर्य बनावने की रीति पौर्णिमा का स्पष्ट सूर्य राशी ९ अंश १६ कला २० विकला ३५ अभुक्त दिन ६ और सूर्य की गती ६१५ यह गती को ६ दिन से गुण देना सो गुणन फल ३६६१३० इस्को ६० से भाग देना जो लब्धि आवे सो अंश ६ शेष ६० से गुण देना फिर नीचे का अंक जोड़ देना और ६० से भाग देना जो लब्धि आवे सो कला ६ शेष ३० इस्को ६० से गुण देना सो अंक १००० इस्को ६० से भाग देना जो लब्धि आवे सो विकला ३० यह फल पौर्णिमा के सूर्य में जोड़ देना सो सूर्य राशी ९ अंश २२ कला ३२ विकला ३९ इस रीति से अभुक्तदिन का फल ल्यावना सूर्योदयादिष्टं ५११०१ ॥

अयनांशा बनावने की रीति

शाको वेदाब्धिवे दोनः षष्ठि भक्तो यनांशकाः ॥

देयास्तेतुरवौ स्पष्टे चरलगादिसिद्धये ॥१२४॥

टी० अयनांशा बनावने का प्रकार वर्तमान शक में ४४४ कम करना और ६० से भाग देना जो अंक आवे सो अयनांशा जानना पर वह फल स्पष्ट सूर्य में देना तो चरस्थिर द्विस्वभाव यह ल प्रसिद्ध होगा है ॥

शके १७९० इस्ते
४४४ घटावना
१३४६

उदाहरण

भा० ६०) १३४६ (२२ अं

१२०

१४६

१२०

उ २६ बा

६० गुण

६०) १५६० (२६ कला

१२०

३६०

धनचालन

६१११४६

९ २२ ३२ ३९ स्वर

२२ २६ अयनांशा

१० १४ ५८ ३९

यह साधन सूर्य जान

ना

लग्न बनावने का क्रम ॥ ॥ तात्कालार्क सायनः स्वोद
य घ्रा भोग्यां शाः खच्युधुतो भोग्य कालः ॥ एवं पातां शैर्भ
वेद्यान कालो भोग्यः शोभ्यो भीष्टनाडी पलेभ्यः ॥१२५॥ तद
नुजहीहि प्रहोदयां श्रु शेषं गगनगुण ३० प्रमशुद्धलुवा

ज्योतिषसार १४६

द्य ॥ सीहतम जारि प्रहेर शुद्ध पूर्व भयतिरित प्रपटो पनांशहीनं
 तौ साधना वै जो है उ स्के अंश ३० अशान्न कला और शुद्ध विकला मे
 घटा घटेने से भोग्यांश सूर्य के होते है वह भोग्यांश को अपना ने उ द्य से
 गुण देना और ३० से भाग देना जो लब्धि आवे सो सूर्य का भोग्य काल जना
 नना पीछे जिसरी तसे भोग्य काल मिया उ सीरी त से भुक्त काल बनाव
 ना भुक्त काल ये विशेष की जो साधन सूर्य के अंश है उ स्को १० मे घटाव
 नान ही जो साधन सूर्य के अंश है सो आगे रखना अपना ने उ द्य से गुण
 ना ३० से भाग देना जो लब्धि आवे सो भुक्त काल जानना दूसरी तसे भो
 ग्य काल और भुक्त बनावना आगे जो अपना दृष्ट होय उ स्को ६० से श
 ग देना और नीचे का फल मिलाय देना उ स्के भोग्य काल अथवा भुक्त
 काल ही नकारना जो शेष बचे उ स्को अपना ने लय का उ द्य घटावना
 जिस उ द्य तक घटे उ सर द्य तक घटावना आगे जब न घटे तब लय
 कानाम अशुद्ध से सा जानना जो अंश न घटे तब शेष को ३० से गुण देना
 जो लब्ध अशुद्ध है सो भाग लेना जो लब्धि आवे सो अंश फिर ६० शेष से
 गुण देना अशुद्ध से भाग लेना सो घड़ी फिर ६० शेष से गुण देना फिर
 अशुद्ध से भाग लेना सो लय स्पष्ट होता है तब पूर्व मे अंश दि जो फल
 आवा है उ स्के रूप र अशुद्ध लय के पूर्व जितने लग्न आवे उ स अंश पर
 मे बादि राशी संख्या जो उ देना तो राशी पूर्व कल प्र होता है फिर वह
 लग्न मे अथवा नांश घटा घटेने से निरयन लग्न होगा सो जानना —

तत्काल सूर्य	उदाहरण	अपनांशः
२१२१२१२१	साधन सूर्य	२२१२६१००
६२५३०	१५१५१५०३१	३१
१४	५८	
१५	९	२५ भोग्यांशः
		३०४ उ द्य से गुणना
अश	क	वि०
४१६०	१०४	६०
१०७	१४६	६०
४५६०	५५०	२०१६

ज्योतिषसार १४७

३०)	४५६७	भोग्यकाल ६०)	४५०	(७	२८१६
	३०	(१५२	४२०		२४०
	१५६७				४१६
	१५०		०३०		३६०
	६७				०५६
	६०				
	७				

दृष्टघटीकाफलकरनादस्मेवहभोग्यकलाकमकरनातबउस्मे
उदयघटावना जोउदयनघटेसो अशुभजानना—
दृष्टघटी

५	१० गुण्य
६०	६० गुण्य
३००	६० ६०० (१०
१०	६००
यो ३१०	०००
भोग्य १५२	
शोध्य १५८	अशुभ
३०	२५३
२५३)	४७४० (१० अंश
	२५३
	३२१०
	२०२४
	१८६ गुण्य
	६० गुणक
२५३)	१११६० (४४ कला
	१०१२
	१०४०
	१०१२
	३८ गुण्य
	६० गुणक
१५३)	१६८० (६ विकला
	१५१८
	१६२

स्पष्टलग्नं

रा	अं	घ.	प
१०	१८	४४	६
	२२	२६	०
१०	२६	१८	६
निरयनलग्नं			

लग्नसेभुक्तकालवनावना
स्फुटसायनभागके भोग्यां
शफलसंमितः॥ सायनां
शस्तनोश्चापिभुक्तांशफ
लसंयुतः॥१२६॥ मध्य
लग्नोदयैर्युक्ताषष्ठिहृदि
ष्टनाडिकाः॥ ॥ ॥
टी० सायनसूर्यसेभोग्यऔर
सायनलग्नसेभुक्तकालवनावने

काप्रकार दूनोंकायोगकरना सूर्यऔरलग्नदस्केबीचकाउदययु
क्तकरनाऔर६० सेभागलेनातो लग्नसेसूर्यकाभोग्यकालस्पष्टहोताहै

उदाहरण शके १०९० माघ कृष्ण २ औसके दिन का सूर्य ता २२ क ३२ वि ३९ अश्विन मा ४४४ सूर्य के अंशादि कुंभ मिलावना सायन लू पें होता है या १० अं १४ क ५० वि ३९ तो यह कुंभ का सूर्य इसके अंशादि २० मैकम नौकरना तो कुंभ उदय है दृष्ट वा स्ते कुंभ का २ प से भोग्य शशुण देना ३० से भाग लेना तो सूर्य का भोग्य का लोता है आगे सायन लू का अंश घड़ी पर इस्को अश्विन उदय से गुण देना और ३० से भाग लेना तो लू का भुक्त काल होता है तो भुक्त और भोग्य इस्को एक करना और उदय से भाग लेना तो दृष्ट घड़ी स्पष्ट होती है इस प्रकार सि पहिले सूर्य स्पष्ट सायन सूर्य लू सायन लू और दृष्ट काल बनाना इसो सुभाषु भस्व दृष्ट काल होता है लू का भोग्य काल पूर्व में इस सायन लू के ऐसी क्रिया करना तत्काल लू १०२६/१८/१॥

सायन लू से भुक्त काल बनाने का क्रम

अंश	उदाहरण	सायन लू
१८	कला	१०१८/४४/१८
२५३	४४	विकला
४५ ५४	२५३	२५३ उदय
१८५ भुक्त काल	११११२	१५१८ (१५)
३०) ४७३९ (१५८ ६०)	२५	११०
१७३०	१११५७ (१८५)	३१८
१५०	६३	३००
२३०	५१५७	१८
२१०	४८०	
२०	३३७	
	३००	
	३७	

भोग्य काल और भुक्त काल इस्को एक कर योग करना और ३० से भाग लेना तो दृष्ट काल होता है

उदाहरण	भोग्य काल	दृष्ट काल योग	भुक्त काल
१५१८ (१५)	१५१८	१५१८	१५१८

३०)	१५१८	५०	५०
	१५१८	५०	५०
	१५१८	५०	५०

उत्तर	दृष्ट काल
५	१०

सूर्य और लग्न एक राशी होय तो दृष्ट पटी ॥ यदि तनु दिन नाथा
वेकराशी तदंशंतर रहत उदयः स्यात्वाग्निहृत्विष्टकालः ॥१२७॥
टी० सूर्य और लग्न एक राशी होय तो दूनों के अंश का अंतर करना और उसी राशी के
उदय से गुण देना ३० से भाग लेना जो आवे सो दृष्टकाल जानना रात्री काल ग्रह अथ
वा दृष्टकाल दना वना होय तो सूर्य के राशी में ६ मिलावना तो रात्री का दृष्ट होता है ॥

लग्न शुद्धी देखना ॥ लग्ने चंद्र खलारि पौशशिसितौ सर्व बुधने
खेबुधो ज्योतिषः मुखगोष्ठमा कुजशुभाः शुक्रस्तृतीयेशुचे
॥ लाभे सर्व खगाः शुभा भरिबलगास्त्र्यष्टारिणस्युः खला
श्रंद्रस्त्र्यंबुधने प्रियं शभट्टकेटस्या नृत्युवेषारिणः ॥१२८॥
टी० विवाह लग्न में चंद्रमा और पापग्रह षष्ठ स्थान में चंद्र शुक्र होय और सप्त
म स्थान में कोई ग्रह न होय दशम स्थान में बुध होय १२ स्थान में चंद्रमा हो
य चतुर्थ स्थान में राहु होय अष्टम स्थान में मंगल होय वा शुभग्रह तृतीय
स्थान में शुक्र होय ऐसा विवाह लग्न होय तो अनिष्ट शोक कारक होता है
एकादश स्थान में सब ग्रह शुभ पापग्रह तृतीय अष्टम षष्ठ यह स्थान में
शुभ और चंद्रमा तृतीय चतुर्थ द्वितीय ऐसा विवाह लग्न होय तो शुभ
लक्ष्मी कारक होता है और लग्न का स्वामी अथवा अंश का स्वामी अथवा
द्रेष्काण स्वामी यह षष्ठ अष्टम स्थान में मृत्युदायक होते हैं ॥

अन्य मत ॥ ॥ पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरिष्टमादेश्यं ॥

स्थानादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपिकथ्यते यवनेः ॥१२९॥

टी० विवाह लग्न से ५ ग्रह शुभ स्थान में होय तो पुष्ट कारक जानना अशुभ
होय तो अरिष्ट कारक और यवन के मत से चार ग्रह भी दृष्ट कारक जानना -

त्रिंशं शादिकथनं ॥ ॥ त्रिंशद्भागत्पकं लग्नं होरा तस्या

ह्यमुच्यते ॥ लग्ना त्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशवः

॥१३०॥ द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशं शस्त्रिंशदंशकः ॥ ॥

टी० ३० अंश काल ग्रह १५ अंश की होरा लग्न का त्रिभाग द्रेष्काण लग्न का जो
नवमांश सो नवांश लग्न का जो द्वादशांश सो द्वादशांश लग्न का जो त्रिंश
श सो त्रिंशं जानना इस प्रकार से सर्व जानना -

आदौ ग्रह देखना ॥ यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्ग्रहमुच्यते

होयक यम ॥ ॥ हारलो जराही सुरवीर कमल
पती ॥ समसही तुलसी ॥ हो रशी कमलतो वही ॥ ५३ ॥

५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२

देवाणकथन॥ देवाणभाशोरप्रस्थितीसंबंध
॥ देवाणभरतीमुक्तप्रान्तवर्गशिवः १३३

[illegible]

कुजाकीं ज्येष्ठ शुक्रा भाग्ये स्वयं भविष्यति

भागात्सुर्विषयेतेन समस्तं शेषविषयं याते ॥ १२॥

टी० मंगलशशि रहस्यगनी बुध सुक रहस्यगनी २४ विषयारथ
 मंगलशशिगनी २४ विषयारथ २४ विषयारथ २४ विषयारथ
 गुरु २ शनि २ २४ बुध २ सुक २ २४ अश्वि २ २४ विषयारथ
 विषयारथ २४ विषयारथ २४ विषयारथ २४ विषयारथ

ज्योतिषसार १५१

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु
५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु
८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु	८ शु
७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श
५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं

ली० यह सप्तांश चक्रदस्का सप्तांश मे प्रयोजन जानना सप्तांश चक्रं ॥

लग्ननवमांश
 मेषसिंह धनुर्लघ्ननवां
 शामेषतः स्मृताः ॥ एष
 कन्यामृगेश्लघ्नमकरा
 न्नवमांशकाः ॥ १३४ ॥
 कर्कालिमीनलघ्नेषु न
 वांशा कर्कितस्मृताः ॥

उप	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
१६	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
३७	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
५८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
७९	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
१००	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
१२१	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

नृयुग्मतौ लिङ्गं भेषु तौ लितः स्युर्नवांशकाः ॥ १३५ ॥

ली० मेषसिंह धन यह लग्नमे नवांशा मेषसे वृष कन्या मकर यह
 लग्नमे नवांशा मकरसे कर्क वृश्चिक मीन यह लग्नमे नवांशा कर्कसे मिथु
 न तुला कुंभ यह लग्नमे नवांशा तुलासे जानना आगे चक्रमे स्पष्ट देखना

		मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४
६	४०	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५
१०	०	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६
१३	२०	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७
१६	४०	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८
२०	०	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९
२३	२०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०
२६	४०	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११
३०	०	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२	उ ९	बु ६	बु ३	उ १२

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

一	二	三	四	五	六	七	八	九	十	十一	十二	十三	十四	十五	十六	十七	十八	十九	二十	二十一	二十二	二十三	二十四	二十五	二十六	二十七	二十八	二十九	三十	三十一	三十二	三十三	三十四	三十五	三十六	三十七	三十八	三十九	四十	四十一	四十二	四十三	四十四	四十五	四十六	四十七	四十八	四十九	五十	五十一	五十二	五十三	五十四	五十五	五十六	五十七	五十八	五十九	六十	六十一	六十二	六十三	六十四	六十五	六十六	六十七	六十八	六十九	七十	七十一	七十二	七十三	七十四	七十五	七十六	七十七	七十八	七十九	八十	八十一	八十二	八十三	八十四	八十五	八十六	八十七	八十八	八十九	九十	九十一	九十二	九十三	九十四	九十五	九十六	九十七	九十八	九十九	一百
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----

विष्णुत्रिंशत् ॥ कुजाकिं गुरुविष्णुः श्रीखिण्डो रागः

तयः कृत्वा लोचनं च शैलेषु भोजनं विधाय मेरुहो ॥ १२ ॥

टी-यहस्य एविवम त्रिंशद्द्वयमेकलसे अंशः ७५०॥

A close-up photograph of a 5x5 grid of 25 small, square, light-brown tiles, likely made of stone or ceramic, arranged in a regular pattern. The tiles are set in a grid with visible mortar lines. The surface of the tiles appears slightly textured and aged. The overall color is a warm, light brown or tan.

卷之三

इति श्रीराजराजः समेतः

इत्युक्तं च भाग्यं कथितं ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सं. ५५ सदिसनायला ११११११

पद १॥ ॥ अहो नमो भगवते

...

पुस्तक संख्या १२३४

श्री. लक्ष्मी. देव्या. नमः. रा. द. रा. रा.

त्रिंशंश यह उक्तांश षड्गुर्जानना सो
शुभग्रहका शुभअशुभका अशुभ

रुद्र	होरा	दिक्का	नवां	ह्राद	त्रिंश
वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग

उक्तांश॥ ॥ मेषेषषष्ठोवृषेविहृदिगिनाहंदेद्विगोर्का
ग्रयः कीदेव्यंगनवाद्रपोर्कभवनेगाश्चास्त्रियांन्य
कषट॥ नूकेर्काद्रिखगा अलौगवगषट्चापेविषट्
गोद्रपोनकेशास्त्ररुणाघटे द्वाषवृषौमीनेद्विगोषट्शुभाः।

टी० यह उक्तांशकाज्ञानचक्रपरसेज्ञानना उक्तांशचक्रम्॥ ॥

वर्गविचार

षड्गुर्गपंचवर्गवाच
तुर्वर्गमथापिवा॥ कै
श्चित्रिवर्गसत्प्रोक्तं
द्यौकवर्गेतनुत्यजेत

रा	उ	मे	रु	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
अंश	६	३	७	४	६	३	१२	९	३	३	१२	७	
०००	७	२	९	६	७	१२	७	७	६	१२	३	९	
०००	०	१२	१२	९	०	६	९	६	९	०	०	६	
०००	०	०	३	७	०	०	०	०	७	०	०	०	

टी० विवाहलग्नको ६ वर्ग आवेतो उत्तम ५ अथवा ४ मध्यमकोर्द वि
वर्गमध्यम कहते हैं जिस लग्नमे दो अथवा १ वर्ग आवेतो वह लग्न त्या
लग्नांशफल॥ ॥ लग्नेचतुर्दशे भागे वृषस्य मकरस्य

च॥ कन्या कर्कटमी नानामष्टमे द्वादशे लिनः॥ १४१

टी० विवाहलग्नमे वृष अथवा मकर दस्के १४ अंश शुभ कन्या कर्कट दस्के
अंश शुभ वृश्चिक के १२ अंश शुभ यह लग्न विवाह मे लेना होय तो अंश देखना

अन्यमत॥ ॥ एकविंशतिमे भागे मेष स्याष्टादशे
हरेः॥ संपूर्णफलदं चादौ मध्ये मध्यफलप्रदं॥ १४२॥

टी० विवाहलग्नमे मेष २१ अंश सिंह लग्न १० अंश यह संपूर्ण उत्तम
फल करते हैं मध्यम होय तो मध्यम फल जानना—

अन्यमत॥ ॥ कुंभ स्यांशोचषाद्विंशे चतुर्विंशे च तौ

लिनः॥ नृपुक्कामुं कयोर्लृग्रं शुभं सप्तदशांशके॥ १४३

टी० विवाहलग्नमे कुंभ २६ अंश शुभ तुला २४ अंश शुभ मिथुन धन १७
अंश शुभ यह लग्नमे जो अंश कथित किया सो शुभ जानना—

वर्गेन मलक्षण॥ ॥ अंते तुच्छफलं लग्नं यदि वर्गेन मं

नचेत्॥ लग्नस्य स्वनवांशोयः सवर्गेन मउच्यते॥ १४४॥

टी० लक्ष्मी तर्जनी मय होय तो अंतमे जो हाकल करता है लक्ष्मी का तेन
बलांश मे होय तो बहुवर्गोत्तम होत है सोच्य मानाने —

स्त्रीविचार॥ ॥ कीता द्रव्येण या नारी न स पत्नी विधीय

ते॥ तथापि न्योनमा है वैदातीता कश्य गोह पीत् ॥ १४५ ॥

टी० द्रव्य देकर के जो स्त्री से विवाह करते हैं सो वह स्त्री के बल भोग के का
मकी होती है औ पित्त जो द्रव्य के करते हैं वह स्त्री दैवता और पित्त
रके कामकी होती है ऐसा कश्यप उक्ति कहन है —

अन्यमत॥ ॥ दुर्भिक्षे राष्ट्र भोगे च पित्रोर्वाश्रय सकट

॥ शोहायामपि कन्यायां प्रति कूलं न दुष्यति ॥ १४६ ॥

टी० काल मड़े राज भंग पिता का शरण सकट ऐसा काल होय और कन्या
को भोग प्रप्राप्ति होय यह कन्या को अह बल न होय तथापि करना दोष नहीं

वेधन्य भगविचार॥ ॥ बलवद्विधवा योगे बाल्ये समि

स्योद्देशा॥ पितारहसि कुर्वीत तद्गं शास्त्र संमतं ॥ १४७ ॥

टी० कन्या को बल अवस्थामे बलवान् विधवा योग होय तो पित्ताने शास्त्र
के संमत से काल मे उस्का भंग होय के बाल्ये कुं भविष्यद विवाह के रीत से कन्या

पान्दमत॥ ॥ बाल्ये वेधन्य योगे पितुं भद्रु प्रणिवादिभिः॥

कत्वाह सं । द्र० पश्चात्कन्योहास्येति न्याये ॥ १४८ ॥

टी० कन्या को बल अवस्थामे वेधन्य योग होय तो पित्ताने पहिले पुरा
मे पौरो अथवा पेद से या विष्णु की प्रतिमा से इनने से विवाह कर को
तब पत्न्य से विवाह करना ऐसा कोई आचार्य कहते हैं —

अन्यमत॥ ॥ विवाहात् पूर्व काले तु चंद्रमा रावले

प्रे॥ विवाहोक्ते च गंधन्याकुपेन च सहोद्वेते ॥ १४९ ॥

टी० विवाह के पहिले चंद्र बल तारा बल सुभदिन मे विवाह के अथवा
मय नीले अथवा कुं भसे विवाह करना तो विधवा योग नारा होता है —

अन्यमत॥ ॥ स्वर्णोष्णिग्यस्तौ च प्रतिमा विष्णु

पिपी ॥ तथा सहविवाहेन पुनर्नृत्तं च कथ्यते ॥ १५० ॥

टी० सुवर्ण कलकुंभ विष्णु की प्रतिमा स्वर्ण साथ विवाह
करने से पुनर्नृत्त का दोष हो मानही सो जानना —

विवाहप्रकार॥ ॥ ब्राह्मोद्देवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्त

थासुरः॥ गंधर्वो राक्षसश्चैव पेशा चश्चाष्टमो धर्मः॥ १५१

टी० ब्राह्म-देव-आर्ष-प्राजापत्य-आसुर-गंधर्व-राक्षस-पिशाच-
यह ८ प्रकार का विवाह होता है -

ब्राह्मविवाह॥ ॥ ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शतचलं

कृता॥ तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिः॥ १५२

टी० प्रथम ब्राह्मविवाह ब्राह्मण को निमंत्रण कर को और अपने को जो
शक्ति होय उस कन्या को अलंकृत कर को ब्राह्मण को यथाविधी से कन्या
दान करना तो २१ पुरुष अपने पूर्व और २१ पुरुष नंतर पवित्र होते हैं -

दैवविवाह॥ ॥ यज्ञस्थकृत्विजे दैवः॥

टी० दैवविवाह कन्या अलंकृत कर को यज्ञमेकृत्विज को दान करे तो दैव वि
आर्षविवाह॥ ॥ आराधार्षस्तु गोद्वयमिति॥ (वाह होता है)

टी० आर्षविवाह पुरुष कन्या को बैल गाय अथवा दूध के मोल का द्र
व्य दे को कन्या का पूजन कर को विवाह करे तो वह आर्षविवाह जानना -

प्राजापत्यविवाह॥ ॥ सहधर्मचरतामिति भाषण पू

र्वकमलंकृता कन्या यत्र दीयते स प्राजापत्यः॥ १५३ ॥

टी० प्राजापत्यविवाह॥ धर्म के सहित आचरण करेगे ऐसा भाषण पू
र्वक अलंकृत कन्या जो दे तो वह प्राजापत्यविवाह जानना -

आसुरविवाह॥ आत्मार्यं द्रविणमादाय यत्कन्यार्पणं स आसुरः॥

टी० आसुरविवाह जो पुरुष ने अपने वास्ते द्रव्य कमाया और द्रव्य क
न्या के अर्पण कर को विवाह करे तो वह आसुरविवाह जानना -

गंधर्वविवाह॥ ॥ त्वं मे भार्या त्वं मे पतिरिति गंधर्वः॥

टी० गंधर्वविवाह स्त्री पुरुष यह दूनों वय प्राप्ती में आप को यह कह कि तुम
हमारे पती और तू हमारी स्त्री ऐसा परस्पर भाषण सो गंधर्वविवाह जानना -

राक्षसविवाह॥ ॥ राक्षसो युद्धहरणात्॥

टी० राक्षसविवाह दूसरे के राज्य में से कन्या जीत कर को ल्यावना
यह राक्षसविवाह जानना - क्षात्रविवाह

अलंकृतामभिजपन् क्षात्रद्वयमिधीयते॥

टी० शास्त्रविवाद सजासोक अन्तरा सहित क सको जीतो है
इसबास्ते यह शास्त्रविवाद जानना -

विशाचविवाह

कावेनस्वापायनस्यासुकन्यकाहरणै रान्योविवाह
टी० विशाचविवाह कथरकर को मित्र अवस्थामि क पाकी रहता
है जानना यह विशाचविवाह जानना -

उनविवाह ॥ गांधर्वादि विवाहे पुपुनै नै नाहिको विधिः

॥ कर्मन्वयविभिर्गैः समभिनमि साक्षि कः ॥ ११७ ॥

टी० गांधर्वविवाह राक्षस शास्त्र विशाच यह चार विवाहों में
र पुनर्विवाह विधी तीन वर्णों को है सो अभी साक्षी करको करना
रतु विवाह का समय होय तो उचित है -

अन्यमत ॥ ॥ चतुरो ब्राह्मणस्यान्यशस्त्रात्

वयोविदुः ॥ राक्षससन्निपत्यै कमासुरवैश्यसूद्रयोः ॥

॥ ११८ ॥ गांधर्वासुरपेशाचराक्षसाख्याश्च सर्वदा ॥ ॥

टी० ब्राह्मणको ब्राह्म्य देव आर्य राजापत्य यह चार विवाह
करना उचित है सन्निपत्यै राक्षसविवाह वैश्य सूद्र को भी उचित
जानना और गांधर्व आसुर विशाच राक्षस यह चारो विवाह
को सर्वकालमें करना इस विधी शास्त्र का विचार नहीं -

अन्यमत ॥ ॥ नशास्त्ररक्षाविदुषाकथविदुः

संपत्तीयाकुलदेशधर्माः ॥ मूलहितोच्यते नंद

शाखाभूयानधर्मः स्थितिभंगदोषात् ॥ ११९ ॥

टी० पंडितने बहुत शास्त्र देखको अथवा कुलधर्म कभीत्याग करना
ही कौंकि यह मूल अहोना है वेदधर्म होयको धर्मनाश होत है -

अन्यमत ॥ ॥ पुत्रोद्वाहात्तरं पुत्रीति वा होवक्तुं

वये ॥ न तयोर्जैतमुहसा न्यहनादपि पुंजन ॥ १२० ॥

टी० पुत्रो विवाह मंतर कन्याका विवाह ६ महिना करना नहीं
चाहिए जनेऊ करना नहीं जनेऊ बाद मुंजन करना नहीं -

व्रतं समावर्त्तनकः सचौलं केशानमेतानि वदन्ति तज्ञाः ॥ द्यौ
रं पुरस्कृत्य भवन्ति यस्माच्च त्वारितस्मादिह मुंडनानि १५८
टी० जनेऊ. समावर्त्तन. चौल. और १६ वर्ष में दाही. और द्यौर आ
दिले को यह ४ मुंडन होता है सो जानना -

अन्यदपि ॥ ॥ एकोदश्यादि चोदश्यादि नोदहने भवेत्ता

शः ॥ न ह्यंतर एकदिने प्याहुः संकटे च शुभं ॥ १५९ ॥

टी० दोकन्या की एक माता होय तो दूनों कन्या का विवाह एक दिन में करने से
नाश होता है जो अंतर न होय और संकट प्राप्ती होय तो करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ आदौ चौलं तनो मौं जी विवाहश्च शुभप्र

दः ॥ मातृभेदे बुधैरुक्तो पातुरैक्येन कर्हिचित् ॥ १६० ॥

टी० प्रथम चौल तब जनेऊ तब विवाह शुभ माता का भेद होय तो क
रना माता एक होय तो करना नही -

अन्यमत ॥ ॥ वरवध्वोऽपि ता माता पितृव्यश्च सहो

दरः ॥ एतेषां प्रतिकूलं चेन्महाविप्रकरं भवेत् ॥ १६१ ॥

टी० पुरुष अथवा कन्या दूनों के वंश में पिता माता चाचा भाई इन लोग को बि
होय तो वह प्रतिकूल होता है तो निश्चय के नंतर ऐसा होय तो विवाह करना नही

अन्यमत ॥ ॥ वाग्दानानंतरं यत्र कुलयोः कस्यचि

नृतिः ॥ तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् १६२

टी० विवाह का वाक्य सन भया नंतर दूनों के कुल में जो किसी का मृत्यु होय
तो १ वर्ष तक करना नही १ वर्ष के बाद करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ अन्येषां तु सपिंडानां माशौचं माससं

मितं ॥ न दंते शान्तिकं कृत्वा तनो लघं विधीयते ॥ १६३ ॥

टी० और जो अपने वंश के बाहर का अशौच होय तो १ मास पर्यंत
विवाह करना नही नंतर शांती कर को करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ श्रवः श्रविष्ठाश्च सनानुराधा

सविश्वपूर्वात्रयबन्धिभेषु ॥ निमित्तशुद्धां फल

पुष्पपूर्णः शुभे मुहूर्ते वरयत्कुमारीं ॥ १६४ ॥

टी० श्रवण. धनिष्ठा. स्वाती. अनुराधा. उत्तराषाढा. तीनों पूर्वा, क

विज्ञान रूपमेव साधने विना हरे के सहिते अतः पुनः पूर्व ज्ञान और वस्तु इ
को सुगम सुहृन् मेक साक्षात् ध्यान रूप मय रत्ना और अग्राने कुलानार
के जोरान विना हरे के सहिते अतः मेरी को वस्तु करना —

अन्ययत् ॥ ॥ पूजोन्नित प्रसादोपसृज्योन्नतं
तथा ॥ रोहिणीतत्रवरणे भगवत् सास्यते बुधैः ॥
॥ १६५ ॥ उपवीतं फलं पुण्यं सांख्य विविधानि च
॥ देवेन्द्राय वरिणो कल्याणं वाहिजे नमः ॥ १६६ ॥

हो। औषधों की हलिका औषधोत्तर रोहिणी इतने मन्त्रों के और त
रुद्र हरे के वरक विवाह के रहित औषधों की कलप और
मात्र कार के वरक को वरक पूजन करने। गाईने का हाण द्वारा
करना औषधोत्तर का पूजन करना —

अथ नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वेदमैत्रेय ॥ अथैकप्रकाराशनीपूजा पश्चात्
तस्माद्यमानरेता ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

श्री विनायक मूर्ति आरंभ होने ही पहिले वाद्य घोष के सहित और ज्ञापन
 के आह्वानों के साथ मनुष्य कल्याण से इच्छा की जाय तो न करायना और विनायक
 का आरंभ करना और विनायक के बाद जो कल्याण होय सो करना -

अन्वयतः॥ तथेति तत्तत्कन्यायाः स्वस्तिवाचनपूर्वकं॥

टीका कथा कागिता बबूल कोरि ह म सु म को क न्या देने है तब जे सगल
मनेव पैती कथा है र ह न स न मे या वि सा ह न स न मे या ता ता ता ता ता न न
पूर्व क कथा हान विधी म क को और ब्रह्म म न्निय है य द न को म
विधी सो कर न मूह को म प्रदे वि ना हा नि क से उर ना है सा क वि न है

॥ अथ मन्त्रः ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

टी-विनाहसजितनका... कीसगा... भावेद्विजायभावरुप... कादि
व्याख्यामनुष्यमेवैसाधकपाठे... विभावनेतुल्यविवाहेत्यस्यप्रमाणम्

घटिकाविचारमाह ॥ कुंडे भः परि पूरिने सुघटिका मर्हो दश

स्तेन्यसेत् स्तुत्वाग्नित्रयवायुगानशुभदा पूर्णाग्निपंचस्वथ ॥

टी० विवाह काल सिद्धी के वास्ते ज्योतिषशास्त्र के अनुसार काल साधन कुंड मे अथवा नाद मे घड़ी स्तूती कर को छोड़ देना दिन मे दृष्ट काल होय तो सूर्य का आधा बिंब उदय होय तब घड़ी छोड़ना और रात्री मे दृष्ट काल होय तो आधा बिंब अस्त होय तब घड़ी छोड़ना और छोड़ने ही अग्निदिशा दक्षिण नैर्ऋति वायु इनने दीशामे घड़ी गमन करे तो अशुभ और भरी घड़ी अग्नि दक्षिण नैर्ऋति पश्चिम वायु इनने दिशामे पूर्ण घड़ी गमन करे तो अशुभ जानना -

घटिकागमनफल ॥ ॥ पूर्वोशादिफलं कुर्यात्स्थिता मध्ये

धनप्रदा ॥ सौभाग्यं निर्धनैर्नार्या अपमृत्युरुजान्विता ॥

॥ १७० ॥ भर्तृप्रिया च वेश्या च मान्या विनमुतान्विता ॥

टी० घड़ी कुंड मे छोड़ने के नंतर आठ दिशामे गमन फल कुंड मे घड़ी छोड़ने ही मध्य मे रहे तो धन युक्त पूर्व दिशामे सौभाग्य अग्नि दिशामे दरिद्र दक्षिण दिशामे अपमृत्यु नैर्ऋत्य दिशामे रोग युक्त पश्चिम दिशामे प्रतिप्रिया वायु दिशामे वेश्या उत्तर दिशामे मान युक्त ईशान्य दिशामे धन पुत्र युक्त स्त्री होनी है ऐसा यह आठ दिशा का फल जानना -

लग्नविचार ॥ ॥ घटी लग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलिकं

स्मृतं ॥ शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न हि जानां कदाचन ॥ १७१

टी० दिन मे घड़ी लग्न मिले अथवा रात्री मे भी न मिले तो शूद्र को मान गोधूली लग्न कथित है ब्राह्मण को गोधूली लग्न कभी करना ही परंतु संकट काल मे करना -

गोधूलीलग्न ॥ ॥ पिंडी भूते दिन कृति हे मंततौ स्या

दह्नी स्ते तपस मये गोधूलिः ॥ संपूर्ण स्ते जलधरमा

ला काले त्रेधा योज्या सकल शुभे कार्या दौ ॥ १७२ ॥

टी० हे मंत क्रतू मे गोधूली सूर्य का बिंब संपूर्ण बाहर रहे उष्ण काल मे आधा अस्त पर गोधूली वर्षा काल मे संपूर्ण अस्त होय तब गोधूली हो ती है ऐसी तीन प्रकार की गोधूली शुभ कार्य मे शूद्र को कथित है ॥ -

अन्यमतः ॥ ॥ हस्तादिपंचमृगपूषभदक्षभेषुविष्णुह
येबुधदिनेगुरुशुक्रवारे ॥ स्त्रीणां शुभं प्रथमपल्लवधा
रणस्यात्याणि ग्रहोक्तसमयेखलुपीतवस्त्रैः ॥ १७७ ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा मृगशिरा अश्विनी अ
वधनिष्ठा यहनक्षत्रमे बुध गुरु शुक्र इनके वारमे और विवा
हनक्षत्रमे स्त्रीको प्रथमवस्त्र पीत धारण करना अर्थात् माथे पर से
धोनी पहिरावना शुभ-

शूद्रादिको पुनर्विवाह ॥ ॥ शूद्रांत्येषु पुनर्भवाप
रिणयः प्रोक्तो विवाहोक्तमैत्रीलोक्यं तिथिमास
वेधभुगुजेज्यास्तादितार्कभातः ॥ त्रिच्यर्क्षेषु मृ
तिर्धनं मृतिमृती पुत्रो मृतिर्दुर्भगं श्रीरौत्स्यम
योधृती शकृततत्त्वर्क्षेत्ययः साभिजित् ॥ १७८ ॥

टी० शूद्रादिजातीको पुनर्विवाह करनेका प्रकार विवाहके नक्षत्रमे क
रना परंतु तिथिमास और वेध गुरु शुक्र इनका अस्तोदय इस्का वि
चार करना नही सोइहा सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनना प्रथम १
मरण दूसरे १ धन तीसरे १ मरण चौथे १ मरण पंचम १ पुत्रलाभ-
षष्ठ १ मरण सप्तम १ दुर्भग अष्टम १ रुस्सी नवम १ श्रेष्ठता और सू
र्यनक्षत्रसे १८ ११ १४ १५ यहनक्षत्रका त्याग करना -

अन्यमतः ॥ ॥ इंद्रादिनिशि वाश्लेषा आश्लेषा वारुणा
तथा ॥ अश्विनी वसुदेवत्यं पट्टकालेषु भेषु मृतं ॥ १७९ ॥

टी० ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी
धनिष्ठा यहनक्षत्रमे शूद्रने विवाह करना सो स्त्रीका पुनर्विवाह हो
ता है भाषामे सगई ऐसा कहते है-

दत्तपुत्रमुहूर्तः ॥ ॥ हस्तादिपंचकभिषक् वसुपुष्यभेषु
सूर्यसमाजगुरुभार्गववासरेषु ॥ रिक्ताविवर्जिततिथि
ष्वलिकुंभलग्नेसिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोयं ॥ १८० ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य य
हनक्षत्रमे और रवि मंगल गुरु शुक्र इनके वारमे रिक्ता तिथी का

सांगकारके अन्तिम रूप यह है प्रकाशोत्पत्तिकारका और सिद्धिपत्र
यह प्रथम रूप प्रकाशोत्पत्तिकारका और सिद्धिपत्र -

1875

卷之四

मायादिभिरुक्तं ॥ मायादिरूपं न हि सांख्यप्रकृतं

स्य च ॥ यमपि यमसिद्धिर्न वा ॥ यमपि यमपि यमपि ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रह्वलः । । अमुं प्रादुर्भूतं पुनरुत्पन्नं च विवक्ष्यते

॥ २ ॥

[illegible]

संस्कृत-विद्यापीठ, मुंबई

सुवितापतिनामकृजादनामनरहमनचमक

टी. विवाह में जो मन्त्रोक्त कथित है उसका नाम निम्न ली डको नाम
करना रिनातिथी मंगलरति रविकाचार और चरहम चरहम
का अंश यह चरहना बने मेलग करवा

अन्वयः ॥ ॥ यत्कृत्वा के भूतानां भवेत्तु प्रसिद्ध

तविभु॥नुपेज्परदिगंन॥वि॥रादिहसु॥नह॥॥॥

टी० बंगला हूय दूवके अशा और दूव ने प्रसन्न हूय नंद दूवक
 दयाग करना विद्युत सम्पादन और नीन सहारा जाये सुख होय
 और घर बनावे नो सुखकारक होत है -

परमदि॥ ॥ परमदिनि विद्याने भवति रूपन

केतः॥ निष्पन्नवैदिकेन गुरु गणनात्प्राप्तं भवेत्

[illegible]

॥ अथ भगवत्पदविधिः ॥

तः॥ सग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततो न्यशा ६

टी० अपानेनामराशीसेग्रामकीराशी २५।९।११।१० आवेतो वह ग्रा
मशुभजानना और इस्सेविपरीत आवेतो अशुभजानना -

अन्यमतः॥ ॥ एकमेसप्तमेव्योमगृहहानिस्त्रिषष्ट

मे॥ नुर्थाष्टद्वादशरोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखं॥ ७॥

टी० अपानेराशीसेग्रामकीराशी एक होय अथवा सप्तम होय तो शू
न्यजानना तृतीय षष्ट होय तो घरकीहानी चतुर्थ अष्ट द्वादश होय
तो रोगकारक इस्से जो शेषस्थान रहै पूर्वमें लिखे सो शुभ -

गृहजातकमाह॥ ॥ अकचटतपयशवर्गारष्टौ क्र

मतः स्मृताः॥ एकोनखेषु वर्णानां स्वरशास्त्रविशा

रदैः॥ ८॥ अवर्गे षोडशज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु

॥ पंचपंचैव वर्णस्फुर्यं शौतुचतुरस्रौ॥ ९॥ ७॥

टी० अवर्गसे शवर्गतक अक्षर ४९ तिस्से अवर्गकास्वर १६ और क
वर्ग ५ चवर्ग ५ टवर्ग ५ तवर्ग ५ पवर्ग ५ यवर्ग ५ शवर्ग ४ ऐसास्वर
शास्त्रमें कथित है सो जानना -

वर्गस्वामी॥ ॥ तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्चासर्पारवुगज

सूकराः॥ वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमोरिपुः १०

टी० अवर्गकास्वामी गरुड कवर्गका मार्जार चवर्गका सिंह टवर्गका
कुक्कुर तवर्गका सर्प पवर्गका मूसा यवर्गका गज शवर्गका सूवर
यह क्रमसे आठ वर्गके स्वामी जानना और जिसवर्गमें अपना
नामाक्षर होय उसवर्गसे पंचम शत्रु होता है सो जानना -

काकिणी॥ ॥ स्ववर्गे द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजये

त्॥ अष्टभिश्च हरेद्भागं यो धिकः स क्रणी भवेत्॥ ११॥

टी० अपानेनामाक्षरकावर्गद्विगुणित करना और ग्रहकेनामाक्षरका
वर्गस्तेमिलाय देना और आठसे भाग लेना जो अधिक होय सो क्रणी जानना

भूमिलक्षण॥ ॥ श्वेताशस्ताद्विजेंद्राणां क्ता भूमिर्म

ही भुजां॥ विशांपीता च शूद्राणां रुष्णान्येषां तु मिश्रिना १२

टी० भूमीकी परीक्षा ब्राह्मणको श्वेत भूमी राजाको लाल भूमी वैश्यको पी

ली मूत्रकोलासी भूमी और बंडासादिक को मिश्रित सब वर्ण पुक्त
शुभकार कहोती है भूमि परीक्षा

इव भ्रंरुत्तानि शान्ता दो पानी मे नजर पेट

॥ प्रातर्देहे जले च हिः स मे रं कत्रणे स प ॥ ११२ ॥

टी० सत्री को भूमी हात १ खोदना उखोड़नी भर देना और दूसरी दिन
सबोरे देखना समान जल होय तो बुद्धी और कर्माती होय अथवा दीन
उहोय जल यतो ह्यपनाश कारक जलना -

खोदने का प्रकार ॥ ॥ जलांतं प्रस्तरांतं बाधु रुपात्मया

पिवा ॥ शीतं संशोध्य चोद्धृत्य शस्त्रं सदनमारमेत् ॥ ११३ ॥

टी० भूमी मे पानी लगेत बत कर खोदना अथवा पत्थर लगेत बत कर खोदना
अथवा एक पुरुष खोदना जगत्सु खरनार लयनिक सुहावना भीषा

शुभ भूमी असुभ भूमी ॥ ॥ इव न्यमाने यदा होत्रे पात्रा

णः प्राप्य ते तदा धनाय धिक् रता सस्यादि हृत्वा सुधना

यमः ॥ ११४ ॥ कपालांगार केशादौ व्याधिना पीडितो भवेत् ॥

टी० भूमी खोदने के काल मे नीचे पत्थर निकले तो धन आयु पाप पाप
बुद्धि जानना ईद निकले तो धन प्राप्ती जानना और हाड को दहा
केश नीचे निकले तो रोग पीडित हो जाहै -

खात पूनी ॥ ॥ कपि शीर्ष प्रमाणे च प्रावाणैः पूरयेत्

दृढं ॥ खातं तु तत्समं कृत्वा ततः प्राचीं प्रस्थापयेत् ॥ ११५ ॥

टी० भूमी खोदने के बाद उस भूमी मे बंडा के मस्तक के ऐसे पात्रा
से मजबूत भरना खात बराबर करना तब प्राची स्थापन करना -

वक्षत्रमे चंद्र विचार ॥ ॥ अन्यान् चैवान्नागर्षस्यो चंद्रो

न्योत्तराननं ॥ पित्रा दासवतस्तद्व्यामपरास्याह दं शुभं ॥ ११६ ॥

टी० कृत्तिका से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो परका सुखद सिपाही रागे
बनावना और अनुराधा से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो परका सुख उत्तर दि
शामे बनावना मघा से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो परका सुख पूर्व दिशा मे
करना धनि हासे ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो परका सुख पश्चिम दिशा मे बनावना

चंद्र विचार ॥ धन लाभ परका सुखदाह और मयंक मात ॥

दक्षाग्रवायपृष्ठस्थो गृहकर्तुर्निशाकरे ॥१८॥

टी० घर बनावने वाले को दहिने चंद्रमा होय और घर बनावे तो धन लाभ सन्मुख होय तो प्रवास बाँए होय तो आयुष्य बड़ी पीछे होय तो चौरका भय ऐसा चंद्रफल जानना -

आयादिसाधन ॥ ॥ गृहेशकरमानेन गृहस्यायादिसाध
येत् ॥ करैश्चेन्नेष्टमायादिसाध्य मंगुलिकस्तथा ॥१९॥

टी० जो घर बनावे उसके हाथ से घरनाचना और लाभार्थी इस्का साधना करना कदाचित् हाथ से अनिष्ट आवे तो अंगुली से साधन करना -
क्षेत्रफल ॥ ॥ विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं भ

वेत् ॥ तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायधजादिकः ॥२०॥

टी० स्थानकी चौडई लंबई से गुण देना और - से भाग लेना शेष जोर है सो धजादिक से आय होता है सो गृहका क्षेत्रफल जानना -

आयादिकनाम ॥ ॥ ध्वजो धूमो घसिंहः श्वा सौरभेयः ख
रोगजः ॥ ध्वांसश्चैव क्रमेणै तदोपाष्टकमुदीरितं ॥२१॥

टी० ध्वज धूम सिंह कुकुर बैल गर्दभ हाथी ध्वांस यह आय जानना -
वर्णपरत्वे ॥ ॥ ब्राह्मणस्य ध्वजो ह्येयो सिंहो वै सन्निभ
स्य च ॥ वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥२२॥

टी० ब्राह्मणको ध्वज आय शुभ सन्निभको सिंह आय शुभ वैश्यको बैल आय शुभ सर्वजातीको गज आय शुभ जानना -

फल ॥ ॥ कीर्तिः शोको जयो वैरं धनं निर्धनता सुखं
रोगश्चेति गृहारं भेधजातीनां फलं कमात् ॥२३॥ ॥

टी० ध्वज आय होय तो कीर्ति धूम होय तो शोक सिंह होय तो जय कुकुर होय तो वैर बैल होय तो धन गर्दभ होय तो निर्धन गज होय तो सुख ध्वांस होय तो रोग यह प्रकार से आठो मे आयका फल जानना -

नक्षत्रप रत्ने व्ययसाधन ॥ ॥ पूर्वद्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्रा
ग्यमदिद्व्युखः ॥ क्षेत्रमष्टाह तं पिष्येयैर्विभक्तं स्याद्गृहस्य
भम् ॥२४॥ भेष्टभक्ते व्ययः शेषमायादित्वा व्ययः शुभः ॥ ॥

टी० घरके पूर्वद्वार बनावने मे वृष आय श्रेष्ठ जानना और दक्षिण

हृत्कोणज आय सेव जानना अ० भावेको क्षेत्रफल व न पावे ३
८ सेवणदेना और २० से भागलेना ही परहे सो १५० नक्षत्रता
ना वहन हनको हिन आह से भाग लेना तो राश साव्य व होमा हो
आय से घोडा होय तो सु० अभिक होय तो अमृ न जानना —

गृह राशी ॥ ॥ अथि न्यादि र को मे से वथा दिनि न पद
रि० मूलदि प्रित मे धन्यो मह गं प्रो वरादि सु ॥ १२५ ॥
टी० गृहका नक्षत्र अथिनी भरणी कृत्तिका यह तीन नक्षत्र होय तो
घरकी पुत्र जायना सधा पूर्वा उत्तर यह तीन नक्षत्र मे सिंह
शी जानने मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा यह तीन नक्षत्र मे धन राशी
नना और जो नक्षत्र राशी इस्ते कम से ही रनक्षत्र १ राशी मे जानना
इसरीन से घरका नक्षत्र और राशी वत्का जानकरना —

गृहकानाम रथाव ने का प्रकार

गृहस्य पूर्वतो दिशि कृत्वा त फला विदंति म०

मर्यादा बालिद जानकास्तु नित्या घोड श गृहा ॥ १६ ॥

टी० घरके चारो दिशामे पूर्वादि कम से अफदे लना जो ता पूर्वा मे १ द
दिशामे २ पश्चिम मे ३ उत्तर मे ४ दक्षिण मे सोय स्थान नक्षत्र ओ
र गृहका मुख जिस दिशामे होय वह अंक लेना और घर मे जिस दिशा
मे दूहान १॥ घवा २ अमवा ३ अथवा जो होय वह सरण्या का अंक
लेना ऐसे पद दूनों अंक एक करना और उस अंक के ५ नै र मिला
वना जो संख्या अंक होय तो सोलहन म मे माया रनना —

गृहवेधाम ॥ ॥ पूर्वो जम्बं जम्बं नक्षत्रं कान्त मने

रमम् ॥ सुमुखं दुर्मुखं सुविपुर्धनं दुर्धनं ॥ २० ॥

॥ आनंदं विपुलं जेयं विजयं विजयं विजयं ॥ २१ ॥

हं भवादि संज्ञां नानां सुखं फलं वृद्धा ॥ २२ ॥

टी० घरके सोलहान धुर धान्य जय नद म्वा कोन मनोरम सुमुख
दुर्मुख विपुर्धन दुर्धन आय आनंद विपुल विजय यह धुन दि
सोलनाम है इनका मायके पुमान फल जानना —

अंशाल्पाद मे का प्रकार ॥ ॥ अथोत्तरं पुते से वे गृहना मानिने

द्वारे॥ त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषां द्वितीयोऽंशो न शोभनः॥२९॥

टी० पूर्वमे लाभ और खर्चा जो कहा है सो खर्चा भूमी के फलमे मि
लावना और घरकाना मास्तर मिलाय देना तीनसे भाग लेना शेष
२ बचे तो अशुभ और जो बचे सो शुभ जानना —

गृहका भाग॥ ॥ नवभागं गृहं कुर्यात्पंचभागं तु दक्षि
णे॥ त्रिभागं वामतः कुर्याच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत्॥३०॥

टी० घरका ९ भाग करना उसमे ५ भाग दक्षिणदिशामे घर बनावना
और ३ भाग उत्तरदिशामे और शेष मध्यमे द्वारकी योजना करना —

गृहद्वार॥ ॥ द्वारस्योपरि यद्वारं द्वारस्यान्यच्च संमु
खं॥ व्ययदंतनदातच्च न कर्त्तव्यं शुभेषुभिः॥३१॥

टी० अगने घर के दरवाजे के ऊपर दूसरा दरवाजा करना नही औ
र दूसरे का दरवाजा सामने होय तो अपना दरवाजा उसके सामने क
रना नही क्योंकि नाशदायक होता है —

गृह योजना॥ ॥ स्नानागारं दिशि प्राच्या माग्नेयां
पचनालयं॥ याम्यायां शयनागारं नैर्ऋत्यां शस्त्र
मंदिरम्॥३२॥ प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशु
मंदिरं॥ भांडकोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देवमंदिरं॥३३॥

टी० स्नान करने का स्थान पूर्वदिशामे करना अग्निदिशामे शक स्थान
न दक्षिणदिशामे शयनस्थान नैर्ऋतीदिशामे शस्त्रका स्थान पश्चि
मदिशामे भोजनस्थान वायुदिशामे पशुस्थान उत्तरदिशामे भांडार
और द्रव्यस्थान ईशान्यदिशामे देवतास्थान यह प्रकारसे आठो
दिशामे घरकी योजना करना —

अल्पदोष॥ ॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय न भवेद्
हं॥ आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भवंच वर्जयेत्॥३४॥

टी० घर बनावने मे थोड़े दोष आवे और गुण बहुत आवे तो वह घर दोषकारक हो
तानही परंतु आयव्यय और दोषितनदात्र दृष्टा विचार करके त्याग करना —

वास्तुचक्रकानाम॥ ॥ आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे शीघ्रं तु
कूर्मकं॥ प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम्॥३५॥

कर्म पहलममेशोषका मुख अधिष्ठाणेन तेन विरक्तो नो कोश मेव
तत्परना दुष्टयोग

वज्र व्याघात भूल कृष्ण नीपा तन्म गुरुकः ॥

विष्णु भूपति प्रौढ नौका रोमंगल भास्करो ॥ ५६ ॥

टी० वज्र व्याघात भूल अर्थात् पात विष्णु भूपति पदद्वययोग और
मंगल रौद्र इनके कारण परवना बनाना ही

कूर्मचक्र ॥ ॥ तिथिस्तु पंचगुणिता हस्तिक शृङ्ग
संयुता ॥ तथा ह्यदभिमिवाचनव भगव भालिता ॥ ५७ ॥
॥ फल ॥ जलं वेदो मुनिश्चंद्रस्य लेखं चंद्रवं वलुः ॥ ति
षट्कन वचा काशैश्चि विधं कूर्म लक्ष्यं ॥ ५८ ॥ जले
लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ॥ आका
शे मरणं प्रोक्तं पितृ कूर्मस्य चक्रकव ॥ ५९ ॥ ॥ ॥

टी० जिस तिथी में घर आरंभ हुआ हो पउस्ते कूर्म चक्र देखना ही
तिथी होयउस्ते पांचसे गुण है तो और कृत्तिकादि से जो वस्तु रहे
सो युक्त करना और ५२ विष्णु नामान्तर ९ से भाग देने पर शेष ४० ॥ ५१ ॥
हेतो कूर्म जलस्थान में जानना फल लाभ और शेष ५१ ॥ ५२ ॥ रहे तो
कूर्म भूमी पर जानना फल हाती और शेष ३५ ॥ ५३ ॥ रहे तो कूर्म आका
श में जानना फल मरण ऐसा तीन प्रकार का कूर्म चक्र जानना

स्तंभचक्र ॥ ॥ सूर्योपस्थितं बह्वयं प्रथमतो मध्योत्त
यादिं शतिस्तं भाप्रेरसंख्यया मुनिवरेकतं सुहृत्तं मु
निं ॥ फल ॥ संभाये मरणं भवेत्सुहृत्पते मूले धनाशेषो
मध्येनैव तु सर्वसौख्यमनुलभा प्रातिकर्ता ॥ ५४ ॥

टी० सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम दो चक्र
स्तंभ के मूल से फल धन लाभ और दूसरा ३० ॥ ५५ ॥ रहे तो भवेत्सु
ये फल सर्व सौख्यकारक और तृतीय ५५ ॥ ५६ ॥ रहे तो भवेत्सु
पा तो जिस नक्षत्र में शुभ फल आवे उसी स्तंभ तक जानना शुभ
धन लाभ देने का सुहृत्तं ॥ ॥ मूल के पंचे निम्न सुहृत्तं पति
मरण पंचगवै सुखे स्थाय्य भवेत्सुहृत्तं ॥ ५७ ॥

सुखदंपुच्छदेशेष्टहानिः॥ पश्चाद्देयं त्रिकुसं
गृहपति सुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्येर्साक्षं द्रुक्
संप्रतिदिनगणयेद्यो भवचक्रे विलोक्य ॥५१॥

टी० सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतक देखनेकाक्रम धरनरखनेकेवास्ते
देखना प्रथम ३ नक्षत्र धरनका मूल स्वातीसे जानना फल घरबनावने
वालेकानाश दूसरे ५ नक्षत्रमेगर्भसुख तीसरे ८ नक्षत्रमेमध्यधन
सुखसुख चवथे ८ नक्षत्रमेपुच्छ फल मित्रनाश पांचवेभाग ३ नक्ष
त्रमे घरबनावनेवालेकोसुख भाग्यपुत्र धन दायक जानना ऐसा
स्वातीनक्षत्रसे अभचक्रदेखना -

द्वारचक्रं॥ ॥ अर्कोच्चत्वारिक्रसाणि ऊर्ध्वं चैव प्र
दापयेत् ॥ द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्द्वै शाखायां च चतु
श्रतुः॥ ५२॥ अधश्चत्वारिदेयानि मध्ये त्रीणि प्र
दापयेत्॥ ऊर्ध्वं तु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषु च
॥ ५३॥ शाखायां लभते लक्ष्मीर्यध्ये राज्यप्रदं तथा॥
अधस्ते मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम्॥ ५४॥

टी० द्वारचक्रबनावनेकाप्रकार सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतक देखना
प्रथम ४ नक्षत्रमे द्वारका ऊर्ध्वभाग फल राज्यप्राप्ती द्वारकेकोण ४
तो द्वौ २ नक्षत्रमे कोण फल उद्वास द्वारकी शाखा २ तो द्वौ नोतरफ ४
नक्षत्रमे लक्ष्मीप्राप्ती द्वारका मध्य ३ नक्षत्र फल राज्यप्राप्ती द्वारकी
डेवडीपर ४ नक्षत्र फल मरण ऐसा यह द्वारचक्र जानना -

अग्निचक्रं॥ ॥ सेकातिथिर्वारयुता रूता प्रा
शेषे गुणे भ्रेभुविबन्दिवासः॥ सौरव्यायहोमेश
शिशुगमशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च॥ ५५॥

टी० जोतिषीमेशांतीकरना होय तो अघिकावास देखना तिथीमे
१ मिलावना और जो बार होय सो मिलावना ४ से भागले ना शेष ३ अ
थवा ० शून्य आवे तो अघीकावास मृत्युलोकमे जानना फल सौख्य
प्राप्ती शेष १ आवे तो अघीकावास स्वर्गमे फल प्राणनाश शेष २ आ
वे तो अघीकावास पानालमे फल अर्थनाश जानना -

ग्रहचक्रम् ॥ ॥ तरणि विडुपु भास विचित्र माः
 कुलसुखे ज्यविपुतुदवेतयः ॥ रविमनोदिनमाः
 जयेल्लमास्तति स्वगं विनयं नित वन्द्यसेत् ॥ ५६ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिनवस्तुवतकगिन्नेककम प्रथम २ नक्षत्रमेत
 र्वे कल असुभ द्वितीय ३ नक्षत्रमेतुव कल सुभ तृतीय ४ नक्षत्रमे
 शुभ कल सुभ चतुर्थ ५ नक्षत्रमेशमी कल असुभ पञ्चम ६ नक्षत्रमे
 चंद्र कल सुभ षष्ठ ७ नक्षत्रमेमंगल कल असुभ सप्तम ८ नक्षत्रमे
 गुरु कल सुभ अष्टम ९ नक्षत्रमैशह कल असुभ नवम १० नक्षत्रमे
 केतु कल असुभ ऐसा नवम कलानेक देखना -

शुद्धप्रवेशकाक्रम ॥ ॥ अथ प्रवेशेन वमंतिरस्थ
 पात्रानि रजालय भूपतीनां ॥ सौम्यायने पूर्वदि
 नेति पयं वास्त्वर्नैव भूत बलिश्च सम्यक् ॥ ५७ ॥

टी० पात्राके बाद नवीन पात्रे प्रवेश करना राजाका दर्शन करवा
 ती पहिले दिन वास्तु पूजन भूतपूजा करना अन्तरापणमे करना
 अन्यदीप ॥ ॥ विप्रानुसंधामृमयेष्वापुष्पाणा
 तीजविद्या भवणं चमूलं ॥ वरपत्न्यसूयं सिग्निजेष्वा
 रिक्ता तिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

टी० चिक असुराधा वगरेवती पुष्पास्वाती धनिष्ठा भवण भूल गृहतराव
 मघरे प्रवेश करना और रवि मंगल गहवार रिक्ता तिथी दस्तात्याम रास
 कल शचक्रं ॥ ॥ प्रवेशे कलशे के सोत्यं चना गाऊ बट
 कवात् ॥ असुभं च सुभं ते यमसुभं च सुभं तथा ॥ ५९ ॥

टी० कलशानेक देखना सूर्यनक्षत्रसे दिनवस्तुवतक देखना प्रथम
 पूनक्षत्र असुभ द्वितीय २ नक्षत्र सुभ तृतीय ३ नक्षत्र असुभ चतुर्थ ४
 सप्तम सुभ गृह प्रवेश काल मे देखना कलश चार भाग कल्याण करना
 योगाकलक्षण ॥ ॥ रक्षातु जाहना सायात्यं च संकेति
 ते कमात् ॥ ॥ रक्षादिगुणं गेहविशोक्तं नो भवेदतः ॥ ६० ॥

टी० घरमे प्रवेश काल मे सूर्यवायक गित है सोक मंत्र वदत मंत्र
 अष्टम स्थान मे वज्रगस्थान मे रघुवंताय ओम् घरका मुक्त पूर्वदि

शामे वैसा घर का मुख दक्षिण दिशामे और पंचम स्थान से पंचम स्थान
नमे सूर्य और घर का मुख पश्चिम दिशामे और द्वितीय स्थान से पंच
म स्थान मे सूर्य और घर का मुख पश्चिम दिशामे और एकादश स्थान
न से पंचम स्थान मे होय तो सो वा मार्क होना है प्रवेश मे शुभ-

गृह शुद्धी ॥ ॥ त्रिकोण केन्द्र गैः शुभैस्त्रिषष्टलाभ सं
स्थितैः ॥ असद्गृहैः स्थिते दये गृहं विशेषं लेविधौ ॥ ६१

टी० घर मे प्रवेश करने के वास्ते लग्न शुद्धी गृह प्रवेश लग्न से त्रिकोण १।५
केंद्र १।४।७।१० यह स्थान मे शुभ ग्रह होय और तृतीय ३।६।११ यह स्थान
मे पाप ग्रह होय स्थिर लग्न होय चन्द्र बल मे नवीन घर मे प्रवेश करना शुभ

अन्य मत ॥ ॥ त्रिषडा यगतैः पापैरष्टांतं तरगैः शु
भैः ॥ चंद्रे लग्नारि रंध्रात्पवर्जिते स्याच्छुभं गृहं ॥ ६२

टी० तृतीय ३।६।११ इतने स्थान मे पाप ग्रह शुभ और शुभ ग्रह ८।१२
स्थान छोड़ को शुभ और चंद्रमा १।४।८।१२ यह त्याग करना और गृह प्रवेश क
रना शुभ-

अन्य मत ॥ ॥ धन केन्द्र त्रिकोण स्थः क्षीण चंद्रो न शो

भनः ॥ शत्रोर्नवांशगः खेत्तः खास्त संस्थोपिनो शुभः ६३

टी० गृह प्रवेश लग्न से क्षीण चंद्रमा २।१।४।७।१०।१।५ इतने स्थान मे अशु
भ और शत्रू के नवमांश मे कोई ग्रह होय को १०।७ स्थान मे होय तथापि शु
भ नही ऐसा यह विचार कर कोतब घर मे प्रवेश करना शुभ-

गृहायुषप्रमाण ॥ ॥ रुग्ण जीवः सुखे शुक्रो बुधः कर्मण्य

रौरविः ॥ रविजः सहजे नूनं शतायुः स्यात्तदा गृहं ॥ ६४

टी० घर के आरंभ काल से लग्न मे १ गुरु होय ४ स्थान मे शुक्र १० स्थान मे
बुध ६ स्थान मे सूर्य ३ स्थान मे शनी यह ऐसी संस्था होय तो घर का आ
युष्य १०० वर्ष निश्चय कर को जानना -

अन्य मत ॥ ॥ भृगुर्लघु बुधो ज्योत्स्निला भेकः केन्द्र गो

शुरुः ॥ यस्यां भेचन स्यात्पुर्व सराणां शत ह्यं ॥ ६५ ॥

टी० घर के आरंभ काल से लग्न मे शुक्र १० स्थान मे बुध ११ स्थान मे सूर्य केंद्र मे
शुरु से ग्रह योग मे घर आरंभ होय तो वह घर का आयुष्य २०० वर्ष जानना

अन्यगतः ॥ स्वोच्चयनिनिपुणो विदुः प्रगेद्वे
मन्त्रिणिरसातले यथा ॥ स्वोच्चयनिनिपुणो विदुः प्रगेद्वे
यवेस्यास्ति निश्चयमुपि रंस इति वा ॥ १०५ ॥

टी० धारके आरंभकालमेव ॥ १०५ ॥ स्वोच्चयनिनिपुणो विदुः प्रगेद्वे
रु० स्थानमेवोप उच्चकाशनी ॥ स्थानमेवोप रेतकप्रमुखी मे
धरवनावनेको आरंभकरना नोल रेतकप्रमुखी मे

अन्यगतः ॥ जीवो बुधो भूग्नो मिला भगौ भूति

मानुजो ॥ प्रारंभे यस्य तस्यापुः सगाशीतिः सप्तमिका ॥

टी० एरु बुधस्य कयद १० स्थानमेवोप ११ स्थानमेवोप रेतकप्रमुखी मे
लप्रमेजो धारवनावनेको आरंभहोयश धनयुक्त ॥ १०६ ॥

अन्यगतः ॥ स्वर्गगेहि पगेला भौसुरे ज्येकेन्द्र सखि

ते ॥ धनधान्यसुतारो ग्य युक्तं भागनिर्भवेत् ॥ १०७ ॥

टी० कर्ककाच नृमा ११ स्थानमेवोप एरुकेन्द्रमे ॥ १०७ ॥ स्वोच्चयनिनिपुणो विदुः प्रगेद्वे
हृषधनधान्यसुतारो ग्य युक्तं भागनिर्भवेत् ॥ १०७ ॥

शल्यशोधनः ॥ कुंडाये पृथ्वीपरिशोध्य हेतवे प्रहृष्टा ग

प्रशमस्तुटी भवेत् ॥ वर्गो दिवर्णः किल तद्विदिश्वने शल्यं पु

नीदेहं पयस्तु मध्यतः ॥ १०८ ॥ स्वोच्चयनिनिपुणो विदुः प्रगेद्वे

नहार ॥ एहीला तुनन शल्यशल्यसम्यग् विचार्यते ॥ १०९ ॥

टी० कुंडाये वास्ते अथवा धरवनावने मे शल्यशोधनकारणा एव उरुमे
मुखका प्रथमाह २३ स कीवर्गसे रत्ना देखना अवगोहि श युती न आदि
तामे जान ना इह देवता का स्थापन रको ज्योतिषी से पूजा नात व लो
ल्य अने उस्का विचार कर ना कीवे कल मुती लिखी है

प्रश्नात्तरफलं ॥ पूर्व ॥ पृच्छायां यदि अश्रज्जा परश

ल्यतदा भवेत् ॥ साहैहस्त प्रकाशेयत नुमानुष्य मृत्यु

कृत ॥ ११॥ आग्नेय ॥ आग्नेयानि विदुः प्रश्ने रवर शल्य

करहये ॥ राजद्रो भवेत् न भवेत् नैव निश्चयं ते ॥ १२ ॥

दक्षिण ॥ वाय्वा यादि विजः प्रशेत दारवात्कटि सं

द्विष्यत ॥ नरशल्यं गृहे तस्या मरणा निश्चयं ॥ १३ ॥

नैर्ऋत्य ॥ नैर्ऋत्यां यदि तः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधस्थले ॥
 शुनोस्थिजायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ ७४ ॥ प
 श्चिम ॥ तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ॥
 सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७५ ॥ वाय
 व्य ॥ वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषां गाराश्चतुष्करे ॥ कुर्व
 तिमित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं तदा ॥ ७६ ॥ उत्तर ॥ उत्तरी
 च्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ॥ नच्छीघ्रं निधै
 न ताय कुबेर सदृशस्य हि ॥ ७७ ॥ ईशान्य ॥ ईशान्यां यदि
 शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः ॥ न ह्योधनस्य नाशाय जा
 यते गृहमेधिनः ॥ ७८ ॥ मध्य ॥ हृषयामध्यकोष्ठे च वक्षो
 मात्रं भवेदधः ॥ नृकपालमशोभस्मलो हंत कुलनाशक ॥ ७९

टी० प्रश्नकालमे पृच्छकके मुखसे प्रथम अवर्गका अक्षर होय तो पूर्व
 के तरफ १ ॥ हाथ के नीचे मनुष्य के हाड है ऐसा जानना वह न निकाले
 तो मृत्युकारक होता है १ और कवर्गका अक्षर प्रथम होय तो अग्निदि
 शामे २ हाथ के नीचे गदहेका हाड है ऐसा जानना वह न निकाले तो राजा
 से दुंड होता है २ और चवर्गका अक्षर होय तो दक्षिणदिशामे कमर भर
 के नीचे खोदना तो मनुष्य के हाड है वह न निकाले तो मरणसमान बहु
 त काल रोगी जानना ३ टवर्गका अक्षर होय तो निर्ऋतीदिशामे १ ॥ हाथ के
 नीचे खोदना तो कुत्तेका हाड है वह न निकाले तो पुत्रकानाश जानना
 ४ तवर्गका अक्षर होय तो पश्चिमदिशामे लडकेका हाड है वह न
 निकाले तो घरमे स्वामीका वास होता नही ५ पवर्गका अक्षर होय तो
 वायुदिशामे ४ हाथ के नीचे भूसाको दला है वह न निकाले तो मित्रका
 नाश दुष्ट स्वप्रद्वयवर्गका अक्षर होय तो उत्तरदिशामे १ हाथ के नीचे ब्राह्म
 णके हाड है वह न निकाले तो कुबेर ऐसा पनी होय तथा पितृही होय
 ७ शवर्गका अक्षर होय तो ईशान्यदिशामे १ ॥ हाथ के नीचे गौका हाड
 है वह न निकाले तो गोधनकानाश ८ हृषय यह मध्यभागमे जानना इ
 स्से कमर भर खोदना नीचे मनुष्यका कपाल भस्मलोह है वह न नि
 काले तो कुलकानाश जानना ऐसा जो वर्ग और दिशा इस्का विचा

रकरको प्रत्यक्ष देखना -

अन्यमत ॥ ॥ अकाल में नाकून्य मंद चरित्तो

जन ॥ गृह न प्रविशेत्तु विपदायां करिहत ॥ १७८ ॥

टी० जिस घर का कनाडीन होय जिस घर की पाटनम होय जिस घर में बली पूजान बई होय उस घर में प्रवेश करना ही दुःखदायक होय तो ज

अन्यमत ॥ गृह आर्भोद्वैर्गो सैर्धिष्यैर्वीरैश्चैव ॥

टी० जिस मास में घर बनावने को और भलीय इसी में प्रवेश करना न हन्यकार सब गृह आर्भोद्वैर्गो सैर्धिष्यैर्वीरैश्चैव -

अन्यमत ॥ विप्रोत्तोम्यापवेहस्यैतृणागारंतु सर्वदा ॥

टी० घर में प्रवेश उत्तरायण में करना और रूप्पर का घर होय तो तब काल में प्रवेश करना हे साधर का विचार कर को तब घर में प्रवेश क

॥ इति वास्तुप्रकरणम् ॥

अथ यात्राप्रकरणं

शुक्रसन्मुख ॥ ॥ एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिस्ते राष्ट्रनि

पुवे ॥ विवाहे तीर्थे यात्रायां प्रति शुक्रो न विद्यते ॥ १७९ ॥

टी० गांव के गांव में अथवा शहर के शहर में होय दुर्भिस्ते राष्ट्रनि पुरे वापि पुवे ॥ विवाहे तीर्थे यात्रायां प्रति शुक्रो न विद्यते ॥ १७९ ॥

अन्यमत ॥ ॥ पोष्णादावग्निशदोतं यावत्तिष्ठति तं ॥ १८० ॥

टी० तावच्छुक्रो भवेत्तुः सन्मुखे गमनं शुभम् ॥ १८० ॥

टी० रेवती अग्निनी भरणी कृत्तिका बहनहा जे प्रथम चरण में शुक्र आया होता है तो सन्मुख शुक्र होय और यात्रा करे तो दोष नही -

शुभाशुभफल ॥ ॥ दक्षिणोदः पदः शुक्रः सन्मुखोदनि

मंगलम् ॥ वापि पृष्ठे शुभो नित्यं यो धयेदक्षिणः शुभः ॥ १८१ ॥

टी० यात्रा काल में दक्षिण शुक्र होय तो दः सुदायक होय तो सन्मुख शुक्र में यात्रा करे तो मंगलनाश वापि शुक्र होय तो शुभ

पृष्ठ शुक्र होय तो शुभ पूर्व में आस्त होय तो प्रथम में यात्रा शुभ और पश्चिम में अस्त होय तो पूर्व में यात्रा शुभ पहल कार से शुक्र

का विचार करना -

घातचंद्र॥ ॥ प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्यसं

ग्रहे ॥ वादे चैव गृहारंभे वर्जयेत् घातचंद्रमाः ॥ ४ ॥

टी० यात्राकालमे युद्धकालमे खेती करनेमे बनिपाईमे वाद करनेमे
घरके आरंभ करनेमे इतने कर्ममे घातचंद्रमा का त्याग करना -

घातप्रकार॥ ॥ घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च

॥ यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनं ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

टी० घाततिथी घातवार और घातनक्षत्र इस्का त्याग बुद्धिवानने या
त्रामे मात्र करना और सब कर्ममें शुभ जानना -

मेघेरविर्मघाप्रोक्ता षष्ठी प्रथमचंद्रमाः ॥ वृषभे पंचमो

हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ६ ॥ मिथुने नवमस्वाती अश्व

मीचंद्रवासरः ॥ कर्के द्विरनुराधा च बुधः षष्ठी प्रकीर्ति

ता ॥ ७ ॥ सिंहे षष्ठश्चंद्रमाश्च दशमी शनिमूलके ॥

कन्यायां दशमश्चन्द्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ८ ॥ तुल्ये

रुहो दशमस्याच्छते तृतीयचंद्रमाः ॥ ९ ॥ श्रिकेरे वतीस

प्तदशमी भार्गवस्तथा ॥ १० ॥ धने चतुर्थी भरणी द्वितीया

भार्गवस्तथा ॥ मकरेष्टमो रोहिणी द्वादशी भौमवासरः ॥

॥ ११ ॥ कुंभे एकादशश्चाद्र्वाचतुर्थी गुरुवासरः ॥ मीने

च द्वादशः सार्पे द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ १२ ॥ ॥ १२ ॥

टी० यह श्लोक का अर्थ चक्रमे देखना परंतु अपने राशीसे घातचतुष्ट
य यात्रामे त्याग करना -

॥ घातचक्रम् ॥

राशी	मे	रु	मि	क	सिं	क	तु	रु	ध	म	कुं	मी
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	शुक्र	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु	मूल	श्रव	शत	रेव	भर	रोहि	आर्द्रा	आश्ले
तिथी	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

कालचन्द्र ॥ ॥ मेघे वेदार्थेष्टौ च मिथुने चतृतीयकः ॥

दशकर्के रविः सिंहे कन्या अंकः प्रकीर्तितः ॥ १२ ॥

वस्तुनेषु अन्येषु धनेषु दद्यात्प्रतिनिताः ॥ मरु

रेवमथः प्रोक्तानि भेषाणि तानि ह तः ॥ १३ ॥ धीने

मिथः कालवद्विनिर्गच्छद्वयवर्तमानः ॥

टी० ॥ धनार्थीको ४ चंद्रमणिको ५ चंद्रमिथुनको ६ चंद्रमरुको ७ चंद्रमि
को ८ चंद्रकन्याको ९ चंद्ररहको १० चंद्ररश्मिको ११ चंद्रधनको १२ चं
द्रमरुको १३ चंद्रमको १४ चंद्रमीनको १५ चंद्रऐसाबारहोंशमीमेजा
नयनकालचंद्रमोनको कहा है सो सब शुभकर्ममें लायकरना

नियोजित्वेव प्रकात्याग

नंद्यामातिहयैस्तु तुलामकरपोरुक्ता ॥ मद्रा

यंभीनधनुषोऽकालस्तिष्ठतिसर्वे ॥ १४ ॥ ज

या नक्षत्रीमिथुनपोरिक्तायां मेव कर्कशोः ॥ मू

र्णायकुंभधनुषयोर्मनुष्यमरणं धुवम् ॥ १५ ॥

टी० ॥ नंद्यातिथीको नक्षिक सिंह तुलामकर पुरुषकात्याग करणा
नक्षत्रांशको भीन धनुषकात्याग करना जयातिथीको कन्या और मि
थुनकात्याग करना रिक्ता तिथीको मेव कर्कशकात्याग करना पुर्ण
तिथीको कुंभ और धनुषकात्याग करना क्योंकि मृत्युकारक होने है

यात्राकोनेसव ॥ ॥ हस्तदुर्गेश्वरवर्णास्तिनिष

पोष्याः अतिशान् पुनर्वसु च ॥ प्रोक्तानि पिष्य

मितवप्रकाशेत्प्रकाशितं नक्षत्रसप्तनाराः ॥ १६ ॥

टी० ॥ हस्त मृग अश्लेषा अवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु
पहलवनक्षत्र पावाकरने को कथित है औरताश्चिचार तीमरीता
पंचवीताश्च अन्यताश्च सातवीताश्च ३ ४ नाराकात्याग यात्रा में करना

मध्यमनक्षत्र ॥ ॥ रोहिणी उत्तराश्रिचा मूल आर्द्रा

चमणलोत्तराभाद्रपदे प्रथम मध्यमास्त्युक्ताः ॥ १७

टी० ॥ रोहिणी उत्तराश्रिचा मूल आर्द्रा पूषीषाहा उत्तराभाद्रपदा प्रथ
मपादा पहलवक्षत्र पावा करने को मध्यमनक्षत्र

दुर्गमनक्षत्र ॥ ॥ मीनापूर्वीमघाज्येष्ठा मर्यासना

तिक्ताः एतानि दिशोऽप्यनित्यं गमयन्तं येन

कृतिका एकविंशत्या भरण्याः सप्तनाडिकाः ॥ एकादशमघाया
 श्रत्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ १९ ॥ विशाखा सार्षप चित्रा सुखाती रौद्र
 चतुर्दश ॥ आद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषां रोगमनं शुभं ॥ २० ॥
 टी० तीनो पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी जन्म नक्षत्र कृतिका आश्लेषा स्वाती
 विशाखा यह नक्षत्र यात्रा मे त्याग करना कदाचित् बहुत संकट पड़े तो
 कृतिका की २१ घड़ी त्याग करना भरणी की ७ घड़ी मघा ११ घड़ी तीनो
 पूर्वा की १६ घड़ी विशाखा आश्लेषा चित्रा स्वाती आर्द्रा यह ५ नक्षत्र की
 १४ घड़ी यात्रा मे त्याग करना तो शुभ -

शुभाशुभवार ॥ ॥ अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे
 च बंधुप्रियं चांगारेन लतस्करे ज्वरभयं प्राप्नोति चार्थं
 बुधे ॥ हेमारे ग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रेशुभो
 मंदे बन्धनहानि रोगमरणान्युक्तानि गर्गादिभिः ॥ २१ ॥
 टी० रविवार को गमन करे तो महाक्लेश और बहुत अनर्थ प्राप्ती सोमवार को
 बंधुप्रिय दर्शन मंगलवार को अग्नि चौर ज्वर भय प्राप्ती बुधवार को धन
 प्राप्ती गुरुवार को हेम आरोग्य सुख प्राप्ती शुक्रवार को लाभ प्राप्ती श
 निवार को बंधन हानि रोग मरण प्राप्ती यह गर्गादिक मुनीने कथन किया सो
 होरा कथन ॥ ॥ वारात् षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्द्धं (ज्ञानना
 द्विनाडिका ॥ अर्कं शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवधरा सु
 तौ ॥ २२ ॥ गुरुर्विवाहे गमने च शुक्रो बौधे सौम्यः सर्वका
 र्येषु चंद्रः ॥ कुजे च गुरुं विराजसे वामं देव विजं इति
 होरयोगाः ॥ २३ ॥ यस्य ग्रहस्य वारस्य कर्म किंचित्त्वकी
 र्तिनम् ॥ तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्म विधीयते ॥ २४ ॥

टी० प्रथम होरा ज्ञान जिस दिन जो वार होय उस वार का होरा प्रथम २॥
 घड़ी बाद उसे जो षष्ठवार उसकी होरा ज्ञान ना रविवार को प्रथम ३॥ घड़ी
 सूर्य की होरा दूसरी २॥ घड़ी शुक्र की होरा तिसरी २॥ घड़ी बुध होरा चवथी
 २॥ घड़ी चंद्र होरा पाचवी २॥ घड़ी शनि होरा षष्ठ २॥ घड़ी गुरु की होरा
 सातवी २॥ घड़ी मंगल की होरा यह क्रम से जो वार होय उसकी होरा पहि
 ले होती है आगे कौन होरा मे क्या करना गुरु के होरा मे विवाह शु

के होरा में गमन बुध के होरा में बुध चंद्र के होरा में सब काम मंगल
के होरा में बुध सूर्य के होरा में राज सोबा शमी के होरा में द्रव्य संग्रह
बहक मंगल होरा में करना शुभ जिस बार में जो कर्म है सो पूर्व में करि
न हो सो कर्म उसके होरा में करना —

सूर्य होरा ॥ सूर्य स्य होरे रज की सुव स्त्र कुमा
रिका विप्र चतुष्टयं च ॥ काकदंष्ट्र न कुलीन ये व
त्ता वस्तु को ह्य मस्तु गोश्व ॥ २५ ॥ ७ ॥

टी. सूर्य होरा में गमन करे तो रस्ते में थोड़ी न स्थिर रहित मिलेगा कुमा रिका
चार ब्राह्मण ३ की बा १ रे ३ २ नील कंठ १ वै ७ १ गी हतने में से कोई भी श
कुन वस्ते में मिलेगा ऐसा जानना —

चंद्र होरा ॥ चंद्र स्य होरे हित पुष्प का क मे
री मृदंगा न कुलः खरोष्ट्र ॥ हयश्व गो मे व शु
न स्याथै व पुण्याणि न रीति म ये व मार्गे ॥ २६ ॥

टी. चंद्र के होरा में गमन करे तो रस्ते में दो ब्राह्मण मिलेंगे कौरा न गारा
मृदंग गार गदहा ऊट घोड़ा गौ मेहा कुत्ता और कुल दो स्त्री दू तो
से कोई भी शकुन रस्ते में मिलेगा ऐसा जानना

मंगल होरा ॥ मंगल स्य दुर्ग कलह कुटुंबर ज स्वला स्त्री मुन

स्पृहा ॥ न पुंसक श्व नित यं हित श्व न तो वि मुक्तो धरणी धर स्य

टी. मंगल के होरा में गमन करे तो रस्ते में बिलाई की लड़ाई कुटुंब में
लड़ाई मत मती स्त्री पराजय लना न पुंसक ३ कुत्ता न ब्राह्मण से
सुदन में से कोई भी शकुन मिलेगा ऐसा जानना

बुध होरा ॥ बुध स्य होरे शकुन श्व सर्व स्त्री पुत्र पुत्रा कुल शस्तु

पूर्व ॥ पुचातक श्वा व गौ कुमा र पुण्याणि न रीति म दुर्ग पशु

टी. बुध के होरा में गमन करे तो रस्ते में सर्व शकुन स्त्री पुत्र पुत्रा पूर्ण
लगा बात कपड़ी नील कंठ पक्षी हाथी कुत्ता कुल स्त्री ऐना दूत में
से कोई भी शकुन मिलेगा ऐसा जानना —

शुक्र होरा ॥ शुक्र स्य होरे शकुन श्व सर्व स्त्री पुत्र पुत्रा कुल शस्तु

शुभ मणां च को न कुलीन व श्व न स्यात्ता न व द वस्तु श्व ॥ २७ ॥

टी० गुरूकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेवैश्या गौस्त्रीबालयुक्त
जलकाघडा कंबलबादुशाला काक नेर बगुला पक्षी हंसपक्षी राजा
बहुत बनिया इतनेमेसेकोईभीशकुनमिलेगा ऐसाजानना —

शुक्रहोरा॥ ॥ शुक्रस्यहोरेगणिकाहिजेन्द्रः
काकत्रिकंचाद्यनपुंसकोवा॥ मयंहिमासेगण
कश्चधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः॥३०॥

टी० शुक्रकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेवैश्याब्राह्मणकाकरनपुंसकम
द्यमांसज्योतिषीगौअन्न तीनशूद्र बनिया इतनेमेसेकोईभीशकुनमि
लेगेऐसाजानना शनिहोरा

पतंगमूनोर्यवनश्चनग्नौरजस्वलास्त्रीचमृतंतथैव॥ पि
शाचगृध्रौविधवाचवन्दिर्नैपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः॥३१॥

टी० शनीकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेनंगा मुसलमानक्रतुमतीस्त्री प्रे
तपिशाच गृध्रपक्षी विधवास्त्री अग्नि नपुंसक जवान बडापराक्रमी इत
नेमेसेकोईभीशकुनरस्तेमेमिलेगा ऐसाजानना यहसातग्रहकाहोराफल
प्रश्न॥ ॥ गमनंप्रतिरातस्तुसन्ध्यादर्शनेनच॥ (जानना)

प्रतस्तांचैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्त्तयेत्॥३२॥

टी० राजाकोयात्राकालपेजोपूर्वमेशकुनकहासो होय अथवाउत्तम
वाणीकाश्रवणदर्शननहोय तोउस्कामनमेचितनकरकोगमनकनाशुभ
वस्त्रधारण॥ ॥ रवौनीलंबुधेपीतकृष्णवर्णशनैश्च

रे॥ श्वेतंगुरौभृगौभौमेरक्तंसोमेतुचित्रकं॥३३॥ ॥

टी० रविवारकोनीलवस्त्र बुधकोपीत शनीकोकृष्ण गुरूऔरशु
क्रकोसफेद मंगलकोलाल सोमवारको चित्रविचित्र यहप्रकार
से७ बारमे वस्त्रपहिरको यात्राकरना —

पूर्वदिशामेवर्ज्य॥ ॥ मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नव

मीषुच॥ शनौसोमेबुधेचैवपूर्वस्यागमनंत्यजेत्॥३४॥

टी० मूलश्रवणज्योष्ठा यहनक्षत्रमेप्रतिपदा नवमी यहतिथीमे श
निवारसोमवारबुधवार यहवारमेपूर्वदिशामेयात्राकरनानही —

हस्तिगदिशामेवर्ज्य॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्योपंचमीचत्रयो +

दृष्टी॥ गुरुभीदेवाद्यादी चयाम्ये सप्तनिवर्जयेत् ॥ ३५॥
 टी० पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी चंद्रमसत्रमे पंचमीचंद्रे दृष्टी गतिभीमे
 रुक्मिणी और पवित्रा आश्विनी चंद्रमसत्रमे दक्षिणदिशामे यात्रा करना नही-
 पश्चिमदिशामे वर्ज्य॥ रोहिण्यां चतुष्पादेषु भीमे न तु
 दृष्टी॥ जीमाकां गुरुचारे पुनश्च ज्येष्ठाभिमुद्रां दिशं ॥ ३६॥
 टी० रोहिणी पुष्य चतुष्पादेषु भीमे न तु पूर्वा दृष्टिभीमे मंगल रवि
 गुरु इनके चारे में पश्चिममे यात्रा करना नही-

उत्तरदिशामे वर्ज्य॥ करे नोत्तरफालगुन्यां हि ती गदश
 भीतया ॥ बुधेरवौ भौमवारे न च्छेदुत्तरदिशं ॥ ३७॥
 टी० हस्त उत्तरा फालगुनी यह नक्षत्रमे हिती या दशमी गतिभीमे
 बुध रवि मंगल इनके चारे में उत्तरदिशामे यात्रा करना नही-
 विदिकमूल ॥ ॥ ईशान्यां शनौ मूलो आग्नेयां गुरु
 सोमयो ॥ नामव्याभूमिमुग्रस्तु नेर्कत्यां शुक्र सूर्ययोः ॥ ३८॥
 टी० ईशायादिशामे बुध और शनीको दिशा मूल जानना अग्निदिशामे
 गुरु और सोमको दिशा मूल जानना राघुदिशामे मंगलको दिशा मूल
 जानना विर्कतिदिशामे शुक्र और रविको दिशा मूल जानना -

मूलदोषनाश होने दे तास्ते भक्षण
 सूर्यचारे घृते प्रीत्यागच्छेत्सोमं पयस्तथा ॥ गुरुमंगलको
 तु बुधचारे नित्यमपि ॥ ३९॥ गुरुचारे दधिते पंशुक्रचारे प
 वानपि ॥ माघ पुच्छाश्विने चरे मूलदोषो वशान्तये ॥ ४०॥
 टी० रविवारको घीय नारनकरको तब या चारे सोमवारको दूध म
 गलको पुष्य बुधवारको नित्य गुरुचारे दही शुक्रवारको जव शनि
 वारको उहदि यह नक्षत्र अशुभकारको तब यात्रा करे शुभ -

दिक्करो हहं ॥ ॥ वाची गच्छेत्तं वा शक्रं क्षिपाशानि
 लोहना ॥ ॥ अश्विनीं ददं मीनां शुक्रं च तु पयस्तथा ॥ ४१॥
 टी० पूर्वादिशामे घृतभाक्षण करको मलवकर या दक्षिणदिशामे त
 रुभक्षण पश्चिमदिशामे पल्लवभाक्षण उत्तरदिशामे दूधमल
 वकरको यात्रामे मलवकरना -

पंचकवर्ज्य ॥ ॥ शय्यावितानं प्रेताग्नि क्रिया काष्ठ

पार्जनं ॥ याम्यदिगामनं कुर्यान्न चन्द्रे कुंभमीनगे ॥ ४२

टी० कुंभके और मीनके चंद्रमामे खटिया बनावना नही प्रेतकी अग्नि क्रिया कराना नही लडकी भूसा यह खरीद कराना नही दक्षिणदिशामे यात्रा कराना नही इतने कर्म पंचकमे कराना नही.

सन्मुखचन्द्र ॥ ॥ करण भगण दोष वार संक्रांति दोष कुंति

थिकुलिक दोष याम यामार्द्ध दोष ॥ कुज शनि रवि दोष राहु

केत्वादि दोष हरति सकल दोष चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥ ४३ ॥

टी० करण दोष नक्षत्र दोष वार दोष संक्रांति दोष दुष्ट तिथी दोष कुलिक याम दोष यामार्द्ध दोष मंगल शनि रवि इनके वारका दोष राहु और के तु इनके दोष यात्रा काल मे चन्द्रमा सामने होय तो यह सब दोष नाश होते हैं.

चंद्रविचार ॥ ॥ मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे वृषे च कन्या म

करे च याम्ये ॥ तुले च कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्का लि मीने

दिशि चोत्तरस्यां ॥ ४४ ॥ फल ॥ सन्मुखे अर्धलाभाय दक्षिणे

सुरवसं पदा ॥ पृष्ठतः प्राणनाशाय चामे चंद्रो धनक्षयः ॥ ४५ ॥

टी० मेष सिंह धन यह राशीका चन्द्रमा पूर्व मे रहता है और वृष कन्या म कर यह राशीका चन्द्रमा दक्षिण मे रहता है मिथुन तुला कुंभ यह रा शीका चन्द्रमा पश्चिम मे रहता है कर्क वृश्चिक मीन यह राशीका चंद्र मा उत्तर मे रहता है आगे फल देखना यात्रा काल मे सामने चंद्र होय तो द्रव्य लाभ दहिने चन्द्रमा होय तो सुख धन पीछे चंद्रमा होय तो प्राण नाश वाम चंद्रमा होय तो धन नाश यह विचार यात्रामे करना शुभ -

कालविचार ॥ ॥ पूर्वाण्हे चोत्तरांगच्छेत्वा च्यामध्यान्ह

के तथा ॥ दक्षिणे अपराण्हे तु पश्चिमे अर्द्धरात्रिके ॥ ४६ ॥ ॥

टी० दिनके प्रथम भाग मे उत्तर दिशामे गमन करे और मध्यान्ह मे पूर्व दिशामे गमन करे और दिनके तीसरे भाग मे दक्षिण दिशामे गमन करे और अर्धरात्री मे पश्चिम दिशामे गमन करे ऐसा कथित है सो जानना -

योगिनी विचार ॥ ॥ प्रतिपन्न वमी पूर्व हिती यादिशि चोत्त

रे ॥ तृतीये कादशी वहौ न तुर्थादशि नैर्जते ॥ ४७ ॥ पंचत्र

योदशीका म्येवमे भूतचरणिमे ॥ सप्तमी पूर्ववायव्ये अमा
वास्या सुभाषिणे ॥ ५५ ॥ अथ फल ॥ एते च सुभवा प्रोक्तवानेति
विशेषतः ॥ योगिनीसा भवेत्तत्त्वप्रमाणसु भद्रं नृणां ॥ ५६ ॥
टी० प्रतिपदा और नवमीको पूर्वदिशामे योगिनी जानना द्वितीया र
मीको योगिनी उत्तरदिशामे तृतीया एकादशीको योगिनी अग्निदिशामे
चतुर्थी द्वादशीको योगिनी निर्ऋतीदिशामे पंचमी पौर्णमासीको योगि
नी दक्षिणदिशामे षष्ठी चतुर्दशीको योगिनी पश्चिमदिशामे सप्तमी
योगिप्रयोगिनी वायुदिशामे अमावास्या अष्टमी को योगिनी ईशान
दिशामे जानना इस प्रकार से योगिनी देखना आगे कलयात्राकालमे
योगिनी पीछे होय तो सुभवा होय तो सुभवेसादिचारकर को यात्रा करना
काल राहु ॥ अर्को नरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां युधमे
केनेच ॥ याम्येगुरौ बन्दिदिशा च शुक्रमे मंदे च पूर्व प्रवदंति कालं ५
टी० कलविचार रविवारको काल उत्तरदिशामे जानना सोमवारको का
ल वायुदिशामे मंगलको काल पश्चिमदिशामे बुधवारको काल निर्ऋ
तीदिशामे गुरुवारको काल दक्षिणदिशामे शुक्रवारको काल अग्निदिशा
मे शनिवारको काल पूर्वदिशामे जानना यह प्रकार से कलराहुका विचार करना
अन्यमत ॥ रविदिन गुरुपूर्व सोमशुक्र च वायव्यं वरु
णदिशितु भौमे यो नरे तोरि संस्थे ॥ प्रतिदिन प्रतिमत्वा का
ल राहुदिशामें सकल रासन का र्ये वाम पृष्ठे वसिद्धिः ॥ ५७ ॥
टी० रविवार और गुरुवारको पूर्वमे यात्रा करे तो काल राहु वाम और
पृष्ठ भागमे आचना है फल सर्वकार्य सिद्धी सोमवारको और शुक्रवा
रको दक्षिणदिशामे यात्रा करना मंगलको पश्चिमदिशामे यात्रा करना
शनिवारको उत्तरदिशामे यात्रा करना ऐसा कलराहुका विचार क
र को तब यात्रा करना -

सुधित राहु ॥ ॥ इंद्रवायौ यमे रुद्रतो येनौ शशि
रहसोः ॥ यामाई सुधितो राहु भ्रमत्येव दिगा एके
॥ ५८ ॥ रविशिनं च नक्षत्रं न यो नो न च चंद्रमोः ॥ नि
ध्याति सर्वं कार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ ५९ ॥ ॥

टी० पहिले प्रहर के अर्धमे सुधित राहु पूर्व मे रहता है दूसरे प्रहर के अर्धमे वायु दिशामे तीसरे यामार्द्ध मे दक्षिण दिशामे चवथे यामार्द्ध मे ईशान्य मे पाँचवे यामार्द्ध मे पश्चिम दिशामे षष्ठ यामार्द्ध मे अग्नि दिशामे सप्तम यामार्द्ध मे उत्तर दिशामे अष्टम यामार्द्ध मे निर्ऋति दिशामे सुधित राहु जानना ऐसा क्रम से आठो दिशामे राहु जानना या जाल मे दक्षिण सूर्य होय तो सर्वकार्य सिद्धी उस्मेति थी नक्षत्र योग चन्द्रमाइस्का विचार करना नही —

काल स्थान विचार ॥ ॥ कालं फलं घातक लोह पाते दा
वानलः खड्ग कचश्च कांतिः ॥ नखाश्चतुर्विंशति षट् तथा
दिक्कुरुद्राधृतिर्वेदगुणाः क्रमेण ॥ ५४ ॥ तिथ्यामुतं चैव सु
भाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदन्ति ॥ फल ॥ कालं च पृ
ष्ठे फलसन्मुखेन घातं च लोहं वडवां च पृष्ठे ॥ खड्गे च चापे क
चं च वामे कांतिश्च योन्यादि शिदक्षिणस्याम् ॥ ५६ ॥

टी० काल नाम काल १ फल २ घातक ३ लोह पात ४ दावानल ५ ख
ड्ग ६ कच ७ कांति ८ यह आठ जानना इनके आठ ध्रुवांक बास दे
खने के बास्ते कहते हैं २०।२४।६।१०।११।१८।४।३ यह आठ ध्रुवांक जा
नना अपाने को जिस तिथी मे गमन करना होय उस तिथी मे ध्रुवांक मि
लावना और ८ से भाग लेना जो शेष रहे सो दिशामे काल है ऐसा जान
ना सो आठो का क्रम पृष्ठ भाग काल शुभ सन्मुख फल शुभ पृष्ठ भाग
मेषातक लोह पात और वडवानल यह ३ शुभ अग्र भाग मे खड्ग शु
भ वाम भाग मे कच शुभ और दक्षिण भाग मे कांति शुभ ऐसा दि
शा मे दे दे स्वकी नवशा करना शुभ —

पथाराहुः ॥ ॥ सूर्य मे दक्ष पुष्यो रगवसुजलप
ही शमैत्राप्यथार्थे याम्या जांघ्री द्रुकर्णादिति पितृ
पवनोऽन्यथा भानिकामे ॥ वन्याद्राबुध्यचित्रानि
र्ऋतिविधिभगारव्यानि मोक्षोद्यरोहिण्यर्यम्याप्येदु
विश्वंतिममं दिनकराणि पथ्यादिराहो ॥ ५७ ॥ ॥

टी० नक्षत्र २८ इस्के चार भाग तो प्रथम धर्म मार्ग दस्येन क्षत्र ७ दूसरा

अर्थमार्गसंग्रहः ॥ तीक्ष्णराकायसंग्रहः नक्षत्रः ॥ चतुष्पादोऽस्यार्गसंग्रहः
 नक्षत्रः ॥ दसप्रकारसे चारो मार्गके नक्षत्र जानना और दस स्थे स्वर्ये एक मार्ग
 के रहने संद चारो मार्ग के पूरे गति स्का फल आगे दे लना ॥ चतुष्पादोऽस्यार्गसंग्रहः

धर्म	अर्थमार्ग	दुष्पा	अर्थमार्ग	दुष्पा	अर्थमार्ग	दुष्पा	अर्थमार्ग
नक्षत्र	मार्ग	उत्तराश्वि	नक्षत्र	मार्ग	उत्तराश्वि	नक्षत्र	मार्ग
काम	अर्थमार्ग	उत्तराश्वि	काम	अर्थमार्ग	उत्तराश्वि	काम	अर्थमार्ग
दोष	मार्ग	उत्तराश्वि	दोष	मार्ग	उत्तराश्वि	दोष	मार्ग

धर्ममार्गसंग्रहः ॥ धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये अर्थमार्गसंग्रहः

यदि ॥ तदा शत्रु भयनस्य ते ये नुविषुधेः शुभम् ॥ ५८

टी० धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये होय और अर्थमार्गसंग्रहे चंद्रमा होय यात्रा करते यात्रा से
 अन्य मत ॥ धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये चंद्रमा होय ॥ ५८

यदि ॥ तदा शत्रु भयनस्य ते ये नुविषुधेः शुभम् ॥ ५८

टी० धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये होय और अर्थमार्गसंग्रहे चंद्रमा होय यात्रा करते
 यात्रा का र्थ भंग हानि यह है यात्रा जानना ॥

अन्य मत ॥ धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये चंद्रमा होय

यदि ॥ विग्रहं दारुणं चैव नीराकुलं स मुह्यते ॥ ५९

टी० धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये होय और अर्थमार्गसंग्रहे चंद्रमा होय यात्रा करते
 यात्रा पीडा चोर से भय प्राप्ती जानना ॥

अन्य मत ॥ धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये चंद्रमा होय

॥ गृहं लभो भवेत्तस्य विज्ञेयं नोदसंशयः ॥ ५९ ॥

टी० धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये होय और अर्थमार्गसंग्रहे चंद्रमा होय यात्रा करते
 घर मिलेगा और सुख प्राप्ती होगी स्थापना जानना ॥

अर्थमार्गसंग्रहः ॥ अर्थमार्गसंग्रहे स्वर्ये चंद्रमा होय

यदि ॥ तदा शत्रु भयनस्य ते ये नुविषुधेः शुभम् ॥ ५९

टी० धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये होय और अर्थमार्गसंग्रहे चंद्रमा होय और यात्रा
 करते तो यात्री मिलेगा और सुख प्राप्ती होगी ॥

अन्य मत ॥ धर्ममार्गसंग्रहे स्वर्ये चंद्रमा होय

प्रशमं जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ ५३

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और अर्थमार्ग मे चंद्रमा होय और यात्रा करे तो पहिले कार्य होगा. फिर भंग हो जायगा. —

अन्यमत ॥ ॥ अर्थमार्ग गते सूर्य चंद्रका मे शसं

स्थिते ॥ सर्वसिद्धि भवेत्तस्य ज्ञानी यान्त्रात्र संशयः ५४

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और काममार्ग मे चन्द्रमा होय यात्रा करे तो सर्वसिद्धि होगी ऐसा जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ अर्थमार्ग स्थिते सूर्य चंद्रे मोक्ष स्थिते

यदि ॥ भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ५५

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और मोक्षमार्ग मे चन्द्रमा होय यात्रा करे तो भूमिलाभ हर्ष युक्त सुखी होगा. —

काममार्ग का फल ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे तत्रैव

संस्थिते ॥ गजाश्वाश्च विलभ्यते राजसन्मान संभवात् ५६

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और धर्ममार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो राजा के इहां से हाथी घोडा इस्की प्राप्ती जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चन्द्रे चैवार्थ सं

स्थिते ॥ सकलं जायते तस्य विघ्नभंगो विनिर्दिशेत् ॥ ५७

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और अर्थमार्ग मे चन्द्रमा होय यात्रा करे तो सर्वकाम होय विघ्नका भंग होय जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे तत्रैव संस्थि

वे ॥ विघ्नहंटरुणं चैव कार्यं नाशविनिर्दिशेत् ॥ ५८

टी० काममार्ग मे सूर्य और काममार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो यात्रा से भय कार्य नाश जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे मोक्ष गतेपि

वा ॥ राजलाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिर्दिशेत् ॥ ५९

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और मोक्षमार्ग मे चन्द्रमा होय यात्रा करे तो राजदर्शन सुवर्णलाभ जानना. —

मोक्षमार्ग का फल ॥ मोक्षमार्ग गते सूर्य चंद्रे धर्म स्थिते यदि ॥ +

हे नलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यप्रसिध्वाति ॥६९॥

टी० मोक्षमार्गमेसूर्यहोय और धर्ममार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो सुवर्णकालाभ और सर्वकार्यकी सिद्धी जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये अर्थांश्चंद्रमा यदि विफलतस्य कार्यं चोत्तराज्जरिपुर्भयं ॥७०॥

टी० मोक्षमार्गमेसूर्यहोय और अर्थमार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो कार्यविफल होय और राजाशत्रुदूतका भय जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे कामस्थि ते यदि सर्वसिद्धि मवाप्नोति कार्यं च जय मेव च ॥७१॥

टी० मोक्षमार्गमेसूर्यहोय और काममार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो सर्वसिद्धी प्राप्ती और कार्यमजय जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थि ते विप्रहं हारुणैश्च विप्रस्तस्य भविष्यति ॥७२॥

टी० मोक्षमार्गमेसूर्यहोय और मोक्षमार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो शत्रुभयविप्रहोना जानना —

पंचाराहमे कर्म ॥ यात्रायु हे विवादेन प्रवेशेनगरादिषु ॥ व्यापारेषु च सर्वेषु पंचाराहुः प्रशस्यते ॥७३॥

टी० यात्राकालमे सुहमे विवादे मे शास प्रवेशमे व्यापारमे सर्वकार्यमे पंचाराह देखना —

गर्गचार्यमुहूर्त ॥ ॥ उषःप्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहत्पतिः ॥ अंगिरा यनउत्ता हो विप्रवाक्ये जनादेव ॥७४॥

टी० गर्गचार्यका वचन प्रातःकालमे यात्रा करना बृहत्पति का वचन शकुनदेहको यात्रा करना अंगिरा का वचन यनउत्ता हमे यात्रा करना अधवा ब्राह्मण के वचन से यात्रा करना शुभ —

शुभाशुभसाहचर्य ॥ आत्मनो जन्मनस्तत्तद्दिनस्तत्र मेव च ॥ एकीरत्वाद्देवानं रशो मेव साहचर्यं ॥७५॥

सोमोष्णो गतो मेघो जने बुद्धौ सिंह संशयकः ॥ काकश्चैव मयूरश्च हंस इत्येव बाह्वना ॥७६॥

+ श्वहंस इत्येव बाह्वना ॥७६॥ रशो अर्धयाशश्च

धनलाभश्चवाहयः॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्येयं मेघे च
मरणं ध्रुवम्॥ ७७॥ जंबुके स्वल्पलाभश्च सर्वसिद्धि
श्च सिंहगे॥ काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सुखावहं
॥ ७८॥ हंसे तु सर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानां फलस्मृतं॥

टी० अपनाजन्यनक्षत्र दिननक्षत्रमे मिलावना और ९ से भाग लेना
जो शेष रहे सो क्रमजे जानना शेष १ रहे तो गदहा फल अर्घनाश २ शेष
परहे तो घोडा फल धनप्राप्ती ३ शेष रहे तो हाथी फल लक्ष्मी प्राप्ती ४
शेष रहे तो मेढा फल मरण ५ शेष रहे तो सियार फल थोडा लाभ ६
शेष रहे तो सिंह फल सर्वसिद्धी ७ शेष रहे तो काक फल निष्फलकार्य
८ शेष रहे तो मोर फल सुखप्राप्ती ९ शेष रहे तो हंस फल सर्वसिद्धि इस
प्रकार से यात्राका विचारवाहन से करना शुभ आवे तो यात्रा करना

अंकमुद्धर्त्ते॥ ॥ निश्चयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजि
ताश्च तः॥ वारस्युर्वन्दिगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः
॥ ७९॥ चतुर्गुणानि भान्यंगभाजितानि यथाक्रमान्॥

टी० जिस तिथी में गमन करना होय उस तिथी को दूना करना ७ से भाग
लेना गमन में जो बार होय उसको तीन से गुण देना ८ से भाग लेना गम
न में जो नक्षत्र होय उसको ४ से गुण देना ६ से भाग लेना तिथी वार नक्षत्र यह
तीनों शेष अंक होय तो शुभ शून्य आवे तो अशुभ यह अंक के कथित किया
है।
फल॥ ॥ पीडा स्यात्प्रथमेशून्ये मध्ये शून्यं महद्वयं॥

अंत्यशून्ये तु मरणं त्र्यंके च विजई भवेत्॥ ८०॥

टी० तिथी के शेष में शून्य आवे तो पीडाकारक वार के शेष में शून्य आवे तो महा
भय नक्षत्र के शेष में शून्य आवे तो मरण और तीनों अंक आवे तो विजयकारक
भ्रमणाडल मुद्धर्त्ते॥ ॥ सूर्य भाद्रपदे चान्द्रसप्त (जानना)
भिर्भागमाहरेत्॥ त्रिषट्क भ्रमणं चैव हि सप्त महदाडलं
॥ ८१॥ प्रथमं पंचचत्वारिंशदलो नास्ति निश्चितं॥ आ

डलं ताडनं प्रोक्तं भ्रमणे कार्यनाशनम्॥ ८२॥ छ॥ ॥

टी० सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनना ७ से भाग लेना शेष तीन अ
थवा ६ रहे तो यात्रा होगी परंतु कार्यनाश शेष दो अथवा ७ रहे तो आडल

योग आचारकरनाही आदल जोवये लाहन और शेष अथ
ना ५ पा ५ रहे तो आदल नही गमन कर ना कथित है -

हेवर मुहूर्त ॥ ॥ सूर्य भाद्र पंचमांश पक्षादिति

शिवारपुक ॥ नवभिस्तुह रेङ्गांगं स प्र शेष तु हेवर ॥ ॥ ५३

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्र कगिन नाउत्तरे भूतिरिति कीमिलावना
कारमिलावना ९ से भागलेना शेष ३ रहे तो हेवर मुहूर्त जानना सो पायावेक

पवाड मुहूर्त ॥ ॥ सूर्य भाद्र पंचमांश त्रिगुणं तिथि

मिथित ॥ नवभिस्तुह रेङ्गांगं ग्रीणि शेष पवाड कं ॥ ॥ ५४

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्र कगिन नाउत्तरे तीन से गुण दे कागमन की
तिथी मिलावना ९ से भागलेना शेष ३ रहे तो पवाड मुहूर्त जानना सो पायावे

वार परत्वे स्वर शकुन ॥ ॥ पुरौश नीर को भी मे शुभ

वैदक्षिण स्वर ॥ अन्य चारे बुध मस्तु स्वर अवे शुभः

स्मृतः ॥ ॥ ५५ ॥ निर्गमे वा मस्तु उः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥

यः स्वरः सौवनासा ये बीजी ना मल मी दशं ॥ ॥ ५६ ॥

टी० पुरुशानि रवि मंगल एह चारे वार ये अपना दक्षिण स्तर चलता हो
पतो प्रवेश मे शुभ और सो पबुध पुक पद तीनो वार ने अपना काम कर

र चलता हो पतो गमन काल मे शुभ यह स्वर यो गियो ने कथित कि गो
वार परत्वे छाया शकुन ॥ ॥ अष्टौ वादा बुधे स्थुर्नव

परिणुते सप्तजीवे पदा नि जेयं चैकादशार्क शनि

शशि भूपु पुके तम र्थे चतुर्थे पन सिन्हा सि मुहूर्ते

सकल गुण युते कार्य सिद्धिः शुभो भूना स्थि नै न

ग शुहिर्नखल शशि वलं भाविनं गर्ग मुरख्ये ॥ ॥ ५७

टी० बुधवार को - गोह छाया आवे तो गमन करना मंगल को - गोह
छाया आवे तो गमन करना - शुरुवार को - गोह छाया आवे तो गमन

करना रवि शनि स्थेम शुभ यह चारो वार मे ५ गोह छाया आवे तो
गमन करना - नोस वगुण युक्त सर्व कार्य सिद्धि शुभ हो तो पंचांग मुही

चंद्रबल रस्का विचार करना ही है समर्थ कहते है -

१ कान शब्द शकुन ॥ ॥ काय मय नव शुभ ता न पदा

यांतु कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वा षड्विंशभागमा
हरेत् ॥ ८८ ॥ फल ॥ लाभः खेदस्तथा सौख्यं भोजनं

च धनागमः ॥ अशुभं च क्रमेणैव गगर्गस्य वचनं तथा ८९

टी० यात्राकालमेकाकशब्दसुनकेअपनीपादछायाजोहोयउस्मे १३

मिलावना ६ सेभागलेनाजोशेषरहेउस्काफल १ शेषरहेतोलाभ २

शेषरहेतोखेद ३ शेषरहेतोसुख ४ शेषरहेतोभोजनप्राप्ती ५ शेषरहेतोध

नप्राप्ति ६ शेषरहेतो अशुभमहक्रमसेदेखनायहगगर्गमुनीनेकथितकि

पिंगलाशब्दशकुन ॥ ॥ उल्हासः किल्विलेचैव चि (याहै -

ल्लित्या भोजनं तथा ॥ वंधनं खिदिखिदि स्यात्कुर्कुशैर्मेहद्वयं ॥

टी० यात्राकालमेपिंगलकाकिलबिलशब्दहोयतो आनंदचिलपिल

शब्दहोयतोभोजनप्राप्तीऔरखिटखिटशब्दहोयतोबंधनकुरकुरश

ब्दहोयतोमहाभयइसप्रकारसेपिंगलकेशब्दकाविचारकरना -

छायाशकुन ॥ ॥ बुधैः शिंकारं वंशुत्वा पादछायां च

कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥

९१ ॥ फल ॥ लाभः सिद्धिर्हानि शोक भयं श्रीदुःखनिःफ

ले ॥ क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गगर्गेण च यथोदितम् ॥ ९२ ॥

टी० यात्राकालमेछीकहोतेहीअपनीछायापांवसेगिननाउस्मे १३

मिलावना ८ सेभागलेनाफल १ शेषरहेतोलाभ २ शेषरहेतोसिद्धी

३ शेषरहेतोहानी ४ शेषरहेतोशोक ५ शेषरहेतोभय ६ शेषरहेतो

लक्ष्मी ७ शेषरहेतोदुःख ८ शेषरहेतोनिष्फलहेसाक्रमसेदेखना -

छिकाशकुन ॥ ॥ छिकाप्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशु

भं फलं ॥ आग्नेय्यां शोक दुःखं स्यादरिष्टं दक्षिणे तथा

॥ ९३ ॥ नैर्ऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टं वा

यव्ये धनलाभस्त उत्तरे कलहस्तथा ॥ ९४ ॥ ईशान्यां

च शुभं ज्ञेयमात्मशिकामहद्वयं ॥ ऊर्ध्वे चैव शुभं ज्ञेयं म

ध्ये चैव महद्वयं ॥ ९५ ॥ आसने शयने चैव दाने चैव तु भो

जने ॥ वामांगे पृष्ठतश्चैव षट्शिकांश्च शुभावहाः ॥ ९६

टी० यात्राकालमेआठोदिशामेछीकहोयतिस्काफलपूर्वदिशामेहो

यतो भस्त्रुभ अग्निदिशामे होयतो ह-यतो अग्निदिशामे होय
तो अग्निदिशामे होयतो शुभ पश्चिमदिशामे होयतो मि
श्रान्न भोजन वायुदिशामे धन लाभ उत्तरदिशामे होय तो लब्ध
ईशान्यदिशामे होयतो शुभ कदाचित् अपने को लोकी क आवे तो न
हो भय अपने ऊपर लोकी होयतो शुभ पश्चिममे होयतो अहा भय
र आसन्न पर निद्रा काल मे दान काल मे भोजन काल मे वा शांति मे
लगने वह इन गे लो की कने का फल शुभ जानना -

पद्मोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥
 सांशोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥
 समुद्रोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥ निम्नोपशान्तकुम्भः ॥

[illegible]

पहली पतन ॥ ॥ सन्यस्त शिरसि ने पंख लाटे बंधु प्रीति ॥

भूमिपराज्यसन्मानमुत्तरोदयनस्य ॥ १८ ॥ अधरोद

यनम् यैनासा प्रेव्याधि पीदने ॥ आसुष्यं दक्षिणे कर्णे ॥

॥ १० ॥ अथैवास्वयं पश्यतीति ॥

॥ अथ ज्ञानसंनिधिस्तु ॥

[illegible]

सप्तमः अध्यायः

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय नमः

दशपामणिचमनस्तापपुनस्तथा॥मणिचमनस्तथा॥

मन्त्रातिशयः पत्रप्रदः ॥ १०० ॥ नविषुधान् नशाभान् नृकेशि

शानभोजनं ॥ मुन्ययोर्वधनतेयकेशतेमरुणप्रदं ॥ १७ ॥

अध्वानंरुशिपणामेवासेनंभुदिनाशतंरुत्तमंमातरुत्तरं

दम जे शहीने मार भवित ॥ १५ ॥ यत्न मारिय लगे ने पंख

दस्याधिरोहणे॥ यत्रोद्युक्तं मनुष्यस्य शुभाशुभहिसू-
चकं॥१०६॥ तिलमाषादिदानं च त्वात्वादेयं द्विजन्मने॥ पिका
किनं न मस्कृत्य जपेन्मंत्रं षडक्षरं॥१०७॥ शतं सहस्रं मथ वा स-
र्वदोषनिवर्हणं॥ शिवालये प्रपद्याद्वैदी पदोषोपशान्तये १०८
टी० पुरुषअथवास्त्री इनके यात्राकालमें शरीरपर बिस्तुयागिरे अ-
थवागिरिगिदानचढ़े तो शुभाशुभशरीरके स्थानसे मालूम करना-

॥ शरीरस्थानपरत्वे शुभाशुभफल ॥

१ शीर्षः राज्यप्राप्ती	११ वामभुजा राजक्रोध	२१ कटिभाग घोडाप्राप्ती
२ कपालः बंधुदर्शन	१२ कंठ शत्रुनाश	२२ द.कंकणस्थान धनस्य
३ भोवः राजमान्य	१३ स्तन दुर्भाग्य	२३ बा.कंकणस्था कीर्तिध-
४ ऊपरका ओठ धनस्य	१४ पेट शुभमंडन	२४ नवः धान्यलाभ
५ नीचेका ओठ धनश्रेष्ठी	१५ पीठ बुद्धिनाश	२५ मुख मिष्टान्नभोजन
६ नाक व्याधिपीडा	१६ जानु शुभ	२६ गुल्फ बंधन
७ दक्षिणकान आयुष्य	१७ जंघा शुभ	२७ केश मरण
८ वामकान बहुलाभ	१८ हाथ वस्त्रलाभ	२८ दक्षिणपाद गमन
९ नेत्र बंधन	१९ स्कंध विजई	२९ वाम पाद वंधुताश
१० भुजा राजासमान	२० नाभि बहुधन	३० पावकामध्य स्त्रीनाश

टी० आगेपल्ली शरीरपरगिरे औरसरटचढ़े तो तत्कालवस्त्रसहित
स्नानकरना और ब्राह्मणको तिल उडि दान देना और महादेवका
दर्शनकरना षडक्षरमंत्रका १०० शत अथवा १००० जपकरना सर्वदो-
षनाश होनेके वास्ते शिवालये मे दीपलगावना शुभ-

अंगस्फुरण॥ ॥ ब्रूहि मे त्वं निमित्तानि अशुभानि शुभा-

निच॥ सर्वधर्मभृतश्चेष्टत्वं हि सर्वविबुध्यसे॥१०९॥

टी० मनुमत्स्यको प्रश्नकरते हैं हे सर्वधर्मभृत सबधर्मके जाननेवा-
ले हो दस कारण अंगस्फुरण का शुभाशुभ कथन करो -

अंगस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत्॥

अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च॥११०॥

टी० शरीरके दक्षिणभागमें पुरुषको स्फुरण होय तो शुभ और वाम

नगमेष्टु हृदयसुरणोपतो ननुयजानना —

अंगस्फुरणफल ॥ ॥ अंगमां स्वदं नचैव शुभाशुभदि
 नैषितं ॥ तं गविस्तरतो ब्रूहि येन स्यात्तद्विधं शुदि ॥
 १११॥ पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रवि नन्दन ॥ स्थानं
 विरहिषायाति भूतसौः प्रियमंगमः ॥ ११२ ॥ मृत्पुरुषि
 आसितेशोदरुपात्ते धनागमः ॥ उत्कटोपममायधेद
 एराजनिचस्योः ॥ ११३ ॥ दृग्वधने संगरे च जयशीघ्रम
 वा पुयात् ॥ योपिल्लाभो पांशुदेशे अयणांते प्रियश्रुतिः ॥
 ११४ ॥ नासिकायां प्रीति सौर्यप्रिया प्रिरधरो हयोः
 ॥ करेणुभोगलाभस्याङ्गेन हृद्दिरथांसयोः ॥ ११५ ॥
 सुहृन्मित्रश्च बाह्या ॥ हस्ते चैव धनागमः ॥ पृष्ठे पराज
 यो मुहेजयो वसुस्थले भवेत् ॥ ११६ ॥ कुक्षिभ्यां प्रीति
 रुद्दिष्टास्त्रिधाः प्रजनने ममे ॥ स्थानभ्रंशो नाधिदेशे
 आत्रै चैव धनागमः ॥ ११७ ॥ लागुसंधौ परैः संधिर्नैलव
 डिभवेन्मृषा ॥ एकदेशे परित्वा मीजं पाभ्यं रवि नन्दन
 ॥ ११८ ॥ उत्तमस्थानमान्येति पञ्चांगप्रस्फुरणे नृप ॥
 अलाभं चाप्यगमनं भवेत्पादतले नृप ॥ ११९ ॥ ॥

टी० अंगकाशुभाशुभजोफल कथिनं है सो विस्तार कर को शरीर
 के स्थानसे यह जगत जे जानना —

१ मस्तकस्फुरण पृथ्वीला	१६ नाक प्रियवाजी	१८ भग प्रसूती
२ लेलाट स्थान हृदी	१७ नाक प्रीति सुख	२० लिंग स्त्री प्राप्ती
३ भोवके मध्यमे निभेद	१८ ओर विवेक रस्तुमा	२१ नाभी स्थान भ्रम
४ नेत्रे मध्यमे निभेद	१९ कंठ रेणुयं प्राप्ती	२२ आंत धन प्राप्ती
५ नेत्र धन प्राप्ती	२० स्तन भोग हृदी	२३ मोड कीसं धी वल
६ नेत्रकापलक १ रात प्राप्ती	२१ बाहू मित्र प्राप्ती	२४ बाहू राजा
७ नेत्रकापलक २ संया	२२ हाथ धन प्राप्ती	२५ जघा एकदेश स्त्री
८ नेत्रकापलक ३ संया	२३ पीठ दूसरे से	२६ पांव उत्तम स्थान
९ नेत्रकापलक ४ संया	२४ छाती जय प्राप्ती	२७ पाद कातल गमन

स्त्रीका अंगस्फुरण ॥ ॥ लांछने पीठकंचैव ज्ञेयं स्फुर
णवत्तथा ॥ विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः
॥ १२० ॥ दक्षिणे विप्रशस्ते गप्रशस्तं स्याद्विशेषतः ॥

टी० मसातिल यह स्फुरण के स्थान मे जानना दूस्को उलटा करको
स्त्रीको वामांग शुभ और दक्षिणांग अशुभ जानना -

दुष्टस्थाने स्फुरणदाना ॥ ॥ अनन्यथा सिद्धिरजन्म
न स्य फलस्य शस्तस्य च निन्दितस्य ॥ अनिष्टरिष्टो
पगमे हि जानां कार्यं सुवर्णे न तु तर्पणं स्यात् ॥ १२१ ॥

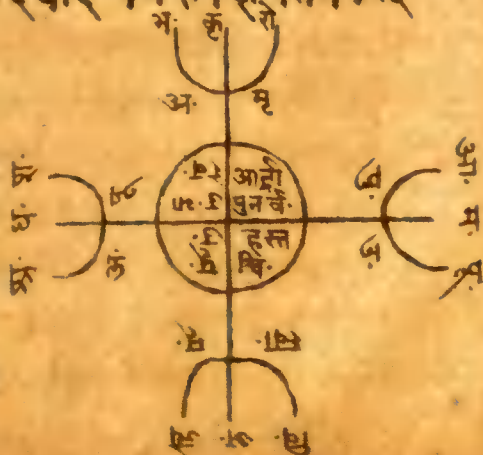
टी० यह जो अंग स्फुरण कहा सो राजाने अनिष्ट फल ना शहो ने के
वास्ते ब्राह्मण को सुवर्ण दान करना और ब्राह्मण भोजन करना -

नेत्रस्फुरण ॥ ॥ नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मान
संदुःखजालं नेत्रोपांते दिशति च धनं नासिकांते
च मृत्युः ॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्संगरे भंगहे
तुर्वामे चैतत्फलमविफलं दक्षिणे वैपरीत्यं ॥ १२२ ॥

टी० नेत्रस्फुरण का फल नेत्र के ऊपर स्फुरण होय तो मन के दुःख काना
शनेत्र के दूनो कोने मे स्फुरण होय तो धन प्राप्ती नाक के अग्र मे स्फुरण होय तो
मृत्यु नेत्र के नीचे स्फुरण होय तो संग्राम मे भंग होय यह पुरुष का वाम मे जान
ना दक्षिण मे विपरीत जानना स्त्री को दक्षिण मे जानना वाम मे विपरीत जाना ॥

त्रिशूलयंत्र ॥ ॥ रोगिणो च कुजाद्यर्क्षदिनाद्यर्क्षचयु
ह्यातः ॥ कृतिकागमने दद्यादन्यत्र रवि दीयते ॥ १२३ ॥

टी० त्रिशूल चक्र का विचार ।
रोगी का प्रश्न होय तो मंगल के न
क्षत्र से स्थापन करना पुद्गल प्रश्न मे
चंद्रनक्षत्र से स्थापन करना और
रयात्रा प्रश्न मे कृतिका से आरं
भ करना और अन्यत्र कार्य मे
सूर्यनक्षत्र से जानना यह स्था
पनक्रम आगे फल देखना -



फल ॥ ॥ विष्णुसाधने प्रत्युत्पन्नं भयं बहिर्गते

॥ सा भवेद्यजपारोग्यं चंद्रोदयसंमिने ॥ १२४ ॥

टी० पूर्वमेव नक्षत्रा पत्रकहा सो इत्का कदा देवता जो प्रपन्नान
दाव विष्णु के अग्रमे आवे तो मृत्यु ताकना मध्यमे अष्टक म आवे तो
मध्यमे और बीच के गोल मे जो नक्षत्र आवे तो सा भवेद्यजप आरा
ग्यता चंद्रगोल मे होय नो जानना

परिधिविचार ॥ ॥ अपिधि विष्णुसाधन संप्रक्रमान्ति

अपानि पूर्वतः ॥ वा अपिदि शतं दंडं परिधंतुन रूपयेत् ॥

टी० कृत्तिका से ३ नक्षत्र पूर्व मे स्थान करना और दक्षिण दिशामे
३ और पश्चिम दिशामे ३ और उत्तर दिशामे ३ ऐसे क्रम से नक्षत्र
पत्रकना और पूर्व के नक्षत्र मे पश्चिम मे गमन करना ही और प
श्चिम के नक्षत्र मे पूर्व मे गमन करना ही और दक्षिण के नक्षत्र मे
उत्तर मे गमन करना ही उत्तर के नक्षत्र मे दक्षिण मे गमन करना
ही और अपिदिशामे और वास्तु दिशामे परिध दंड है इत्का उल
पत्रक को आधा करना ही परिध दंड नक्षत्र ॥

कालज्ञान

कोवेरी तो वै परीत्येन
कालो वारेक च संसुतेन
स्वपाश आयावेतो वैप
रीत्येन गण्यो वात्रा सुदेन
सुखेन ते नीचो ॥ १२५ ॥



टी० उत्तर दिशामे उत्तराश्व जो
दिनांक से सुख काल जानना रात्री
मे भी उत्तराश्व जानना ऐसा काल
चक्र जानना - योगिनी चक्र

कालचक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२

१	२	३	४	५	६	७	८
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

यह वार के क्रम से योगिनी का दि
शा आरंभ चक्र पर से जानना

रवावुत्तरतः कालः सोमेवायव्यभागके ॥ भौमे तु प
श्विमे भागे बुधे नैऋत्यकोणके ॥ १२७ ॥ जीवे तु याम्यदि
भागे शुक्रे चाग्नेयकोणके ॥ शनौ तु पूर्वदिभागे काल
चक्रं प्रवर्तितं ॥ १२८ ॥

टी० इस प्रकार से चक्र पर से का
ल का ज्ञान करना —

र	च	म	बु	गु	शु	श
उ	वा	प	नै	द	आ	पू

पाश ज्ञान ॥ ॥ सौम्या दौ वाम मार्गे णरवितः काल
संस्थितिः ॥ तत्संमुखे भवेत्पाशो रात्रौ ज्ञेयो विलोमतः
॥ १२९ ॥ दक्षिणस्थः स्थितः कालः पाशो वामदिगाश्रयः ॥

टी० उत्तर मार्ग से सूर्य से काल स्थि
ती सन्मुख जानना रात्री मे दक्षिण स्थि
ती काल होय तो वाम मे जानना —
गमने लग्न शुद्धी

पाशचक्रम्						
र	च	म	बु	गु	शु	श
द	आ	पू	ई	उ	वा	प

चरलग्न प्रयातव्यं हि स्वभावे तथा नरैः ॥

लग्नस्थिरेन गंतव्यं यात्रायां क्षेममौघुभिः ॥ १३० ॥

टी० यात्रा काल मे लग्न प्रकार चरलग्न मेष कर्क तुला मकर दस्ये या
त्रा करना और हिः स्वभाव लग्न मे यात्रा करना यह ८ लग्न मे गमन क
थित है स्थिर लग्न मे यात्रा करना नही कल्याण की इच्छा होय तो ल
शुद्धी देख को गमन करना —

दूसरा प्रकार ॥ ॥ लग्नैकार्शुक मेष नौ लिगमने कार्ये

विलंबो नृणां पंचत्वं मकरे तथैव च घटे तद्दत्तं कलं वृश्चि
के ॥ सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत् क
न्यामी न गतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नं वसुः ॥ १३१ ॥

टी० धन मेष तुला यह लग्न मे यात्रा करे तो कार्य विलंब से होगा और
मकर कुम्भ वृश्चिक यह लग्न मे यात्रा करे तो मृत्यु कारक और सिं ह
कर्क वृष यह लग्न मे गमन करे तो सर्व अर्थ सिद्धि कन्यामी न मिथु न
यह लग्न मे यात्रा करे तो सौख्य अन्न भूमी इस्की प्राप्ती जानना आ
ये यात्रा लग्न मे वारों स्थान का फल कहते हैं —

प्रथमस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

अथमन ॥ ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

द्वितीयस्थानम् ॥ ॥ जीवोद्योगाभ्युपगमनम् ॥ जीवोद्योगाभ्युपगमनम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

अथमन ॥ ॥ कुशलस्थानम् ॥ कुशलस्थानम् ॥ कुशलस्थानम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

तृतीयस्थानम् ॥ ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥ स्थानेयत्स्थानम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

चतुर्थस्थानम् ॥ ॥ कुशलस्थानम् ॥ कुशलस्थानम् ॥ कुशलस्थानम् ॥

टी० यात्राकालमेतत्स्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥ जन्मस्थानम् ॥

होय तो दैव योग से कार्य सिद्धी ३ मास मे अथवा १० दिन मे जानना -

पंचम स्थान ॥ ॥ गुरु भृगु शुक्र बुधोपदा स्यात्
शुभे चलये तु सुते च युक्ताः ॥ कुर्वन्ति कार्यं स्य च सि
द्धि मिष्टं मास ह्येनापि वदन्ति सत्यम् ॥ १३८ ॥

टी० यात्रा काल मे पंचम स्थान मे गुरु शुक्र चन्द्र बुध ग्रह चारो मे से को
ई ग्रह होय तो सर्व कार्य सिद्धी २ मास मे जानना -

षष्ठ स्थान ॥ ॥ जीवश्च मुक्तश्च बुधश्च षष्ठे करो
न्यात्रा सफला विलयात् ॥ पक्ष द्वयेनापि वदन्ति
सत्यं सौम्य र्संस्थः सबलश्चन्द्रः ॥ १३९ ॥ ॥

टी० यात्रा लघु से षष्ठ स्थान मे गुरु शुक्र अथवा बुध ग्रह होय तो या
त्रा सफल जनना और मिथुन का चन्द्र मा होय तो षष्ठ स्थान मे बल
वान् होय तो १ मास मे कार्य सिद्धि जानना -

सप्तम स्थान ॥ ॥ चेत्सप्तमस्था गुरु सौम्य सौम्याः
कुर्वन्ति यात्रा विजयं नृपाणां ॥ सर्वे नृपास्तस्य भ
वन्ति वश्या मास ह्येनापि वपंच धिदिनैः ॥ १४० ॥

टी० यात्रा लघु से सप्तम स्थान मे गुरु चन्द्र अथवा बुध होय और रा
जा यात्रा करे तो विजय प्राप्ती और उसको सब राजा वश होय २ मास मे
अथवा ५ दिन मे से सा जानना -

अष्टम स्थान ॥ ॥ क्रूरश्च सर्वे यदि रुद्रकाले मृत्यु
स्थिता मृत्युकरा भवन्ति ॥ सौम्यो गुरुर्वा भृगु नन्द
नश्च दीर्घा युषं मृत्युकरश्चन्द्रः ॥ १४१ ॥ ॥

टी० यात्रा लघु से अष्टम स्थान मे क्रूर ग्रह होय तो मृत्यु कारक औ
र बुध गुरु शुक्र ग्रह अष्टम स्थान मे होय तो आयुष्य युक्त चंद्र मा
होय तो मृत्यु कारक से जानना -

नवम स्थान ॥ ॥ धर्मस्थिता यदि भवन्ति हि पाप
खेत्त प्रयाण काले च तथैव चन्द्रमाः ॥ तदा जपं वै स
वले च चन्द्रे मास त्रयेणापि दिनैश्च तूर्भिः ॥ १४२ ॥

टी० यात्रा लघु से नवम स्थान मे पाप ग्रह होय और उसी स्थान मे च

[illegible][illegible]

मन्मथसुखद्विहसमकले ॥ अमेरवगतिव

... १००० ...

गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।

॥ कर्मरिक्ताय नमः ॥

कुर्वन्तः कार्यं शान्तिवर्जिताम् ॥ तत्रैव च गच्छति च

सिद्धिर्वासासत्रयेणापि न चैकमासतः ॥१४४॥

[illegible]

सप्तदशस्थानाः । अथ भविष्यते पुरुषोत्तमः ।

सर्वज्ञानसंग्रहः

निम्न भवति हि सात्रापि वन भवति वनपत्र ॥ १७५ ॥

टी० राजालप्रसेयकादशस्थानमे गुरुमुखमुक्त अथवा कुरप्र
 मारकोमुक्तलोचने १५५५ अथवा ३६६६ मे कलयात्रीजायका -

॥ सर्वेषु भावद्वारा संविद्यता ॥

पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः पञ्चमः

समस्तनिवासासुनिवृत्तः ॥४६॥

लो० पात्रालयसे प्राप्त शास्त्रानामे सर्व सुप्रसिद्ध होय तो निश्चित लाभ
और समस्त पात्र प्रहोय तो कर्षा कराने ऐसा पात्राफल सर्व सुप्रसिद्ध
विनियोग है सो जानना -

॥ सुखे जासंगते जीवेन नृपसुपागते ॥

ममोनील्येन धने च सायात्रा योगदा ॥ ५० ॥

श्री. यथाकालमे शुक्लं अतस्त्वय शुक्लं अतस्त्वय अतस्त्वय
अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय
अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय
अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय अतस्त्वय

गमनेत्याज्य॥ ॥ निंदो निरिवल यात्रा सुघटल प्रघटां

शकं॥ वक्रः पंथा मीनलग्नया तु मीनां शकेपि वा॥ १४८

टी० यात्राकालमें कुम्भलग्न और कुम्भलग्नकानवमांश निंद्य है त्याग करना कारण द्रव्यनाश और मीनलग्न और मीनलग्नकानवमांश दुस्कात्याग करना कारणर स्ताजलदी घूमता है कार्य हो तानही सो चक्रमें देखना -

११	११	१२	१२	ल अं
द्रव्य नाश	द्रव्य नाश	वक्रः पंथा	वक्रः पंथा	दुस्कात्या ग करना

गमने शाह्य॥ ॥ वर्गोत्तमांश गेल ग्रेत्वथवापि सुधा

करे॥ यात्रा काम दुघा यात्रा तु मीना पुत्रस्य वै यथा॥ १४९॥

टी० यात्राकालमें लग्न वर्गोत्तम होय अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तम होय और यात्रा करे तो सर्व सुख प्राप्ती जैसी पुत्रको माता से सुख प्राप्ती -

दिग्द्वारमाह॥ ॥ पूर्वदिदिक्षु मेषाद्यैः क्रमादिग्द्वाररा

शयः॥ दिग्द्वारराशयः सर्वे तदिज्ञातुः शुभप्रदाः॥ १५०॥

टी० पूर्वदिशा में दिग्द्वार की राशी मेषादी से जानना और जिस दिशा में गमन करना हो यतो उस दिशा की जो राशी उ स्थे गमन करना -

पूर्वादीनां स्वामी

१	२	३	४	५
१	२	३	४	
५	६	७	८	
९	१०	११	१२	
अशु	अशु	अशु	अशु	
५	६	७	८	

दिगीश्वराभास्करशुक्रभौम

रहर्किचंद्रजसुरार्चितास्युः॥

टी० आठ दिशा के स्वामी सूर्य शुक्र

मंगल राहु शनि चन्द्र बुध गुरु

यह दिशा पती चक्रमें देखना -

लालादि योग

गमनचक्रम्॥

इ	उ	सूर्य	दि	शु	आ
गु	उ	सूर्य	दि	शु	आ
बुध	दि	शु	दि	शु	आ
ग	उ	सूर्य	दि	शु	आ

लग्ने भानुः सुतरिपुगनशुद्ध आरोग्यस्थः पातालस्थो हिमकर

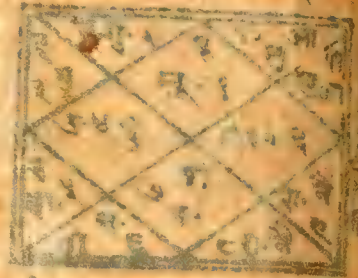
सुतः स्वन्निगो देवमन्त्री॥ तद्दृष्ट्वा को व्यपभगवतो भास्करिः

सप्तमस्थो राहुर्नित्यनिधननवगः स्वादिशं वारयन्ति॥ १५१

टी० यात्रारूप में सूर्य होय तो लालादि योग होमा है तो पूर्व में यात्रा कर नानही चन्द्रमा अथवा पशु होय तो वायु दिशा में लालादि योग या

आकरानही संगत १० स्थानमे होय तो ला० दक्षिणदिशा मे या आकरानही
वर्त्य ४ स्थानमे होय तो ला० उत्तरदिशा मे या आकरानही
२ स्थान मे १ स्थान मे गुरु होय तो ला० ईशान्य मे या आकरानही

१२ स्थान मे शुक्र होय तो ला० अग्निदिशा
मे या आकरानही ७ स्थान मे शनि होय तो
ला० पश्चिम मे या आकरानही ८ स्थान
मे ९ स्थान मे गुरु होय तो ला० दक्षिण
मे चर्चनी दिशा मे या आकरानही -



या विचार ॥ ॥ उपः कालो विना पूर्वा मे भू लौ पश्चिमादि
ना ॥ विनोत्तरा निशीथ श्वराने पाव्या विना भिक्षु ॥

टी० या विचार प्रातः काल मे पूर्व मे या आकरानही सायंकाल मे
पश्चिम मे या आकरानही और आधी रात मे उत्तर मे या आकरान
नही मध्याह्न मे दक्षिण दिशा मे या आकरानही -

सर्वे वा विचार ॥ ॥ फल सिद्धि योग वशात् शो विप्रस्यधि

व्ययतः ॥ मुहुर्त्त शान्ति तो न्य पाश कु नेस्त स्वर स्प ॥ ५३

टी० या जरा जा को योग कर ते फल सिद्धि का हण तो न स प्रबल से
मिद्धि और अथ नुप्य को मुहुर्त्त वल से सिद्धि और पाश कु न
से सिद्धि ऐसा जाती से विचार करना या सिद्धि ही न वा स्ते -

या वा योग ॥ ॥ लघु गुरु पृथग् गृह तु का ता ज स्यौष

शौकु नार्क तन यौ दिन च तृतीय ॥ नंद स्य वर द श

मे भवति प्रयास स्या भि गं दित फल त्ति रलं नृ प स्य ॥ ५४

टी० ऐसे पापा काल मे कुंडली मे ग्रह हो

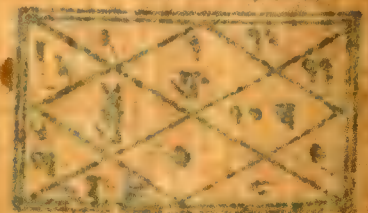
या वा योग वक्र ॥

य औ पापा कर तो अ न वा वि फल

जाती जानना यह पांच कुण्डली मे मे

बल प्रसे सोन ही सोल्य होय वर नुप

व न सरील से होय ऐसा जानना -



मुक वा रूपानु धेर्प न स्ये म न मे श शि ल ग म ले के न

निर्गतो न रीत रे न क तारी येन ते य व री नि नि त स्य ॥ ५५ ॥

टी० यात्राकालमेऐसाग्रहहोय
औरराजायात्राकरेतोशत्रूकोबहु
तजलदीजीतेजैसागरुडसर्पको
जीतताहैयहफलजानना -

यात्रायोगचक्रं

३ बु. गु. शु.	१२	११
३	४	१०
५	६	९

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुकसहोदरला

भग्रहस्थैः॥ कविरिहकेन्द्रगीष्पतिदृष्टेवसु

चपलाभकरःखलुयोगः॥१५६॥ यात्रायोगचक्रं

टी० यहप्रकारसेग्रहहोय यात्रा
करेतोद्रव्यलाभमुखहोयऐसा
जानना -

२	१	१२
शु. ३	पा. ४	११
पा. ४	७	९

सिनेलग्नगतेसूर्यलाभ

मेखुस्थितेविधौ॥ ततोराजारिपून्हंतिकेस

रीवेभसंहनिम्॥१५७॥ यात्रायोगचक्रं

यात्रायोगचक्रं

टी० ऐसेयोगमेयात्राकरेतोजै
सासिंहगजकेसमूहकोनाश
करताहैउसीरीतसेराजाशत्रू
कानाशकरताहै -

२	१	१२
३	४	११
५	६	९

रविषष्ठेसितःक्षुद्रेतृतीयेभूमिनन्दने॥ पिनाकि

योगेविरव्यतोयातुर्विजयकारकः॥१५८॥ यात्रायोगचक्रं

टी० ऐसेयोगमेयात्राकरेतोवह
पिनाकिनामयोगहोताहै सो
गमनकरनेवालेकोविजयकार
कजानना -

३	१	१२
४	७	१०
५	६	९

गुरौकर्कटगेलग्रेभानावेकादशस्थिते॥ पुंडरीकोम

हायोगःशत्रूपक्षविनाशकत॥१५९॥ पुंडरीकयोगचक्रं

टी० यात्राकालमेकैलग्नमेगुरुहोयऔर११
स्थानमेसूर्यहोयतोवहपुंडरीकनामयोगहो
ताहैयात्राकरेतोशत्रूपक्षकानाशजानना -

५	३	१२
६	४	११
७	८	९

॥ कामधेनुसंयोगः ॥ कामधेनुसंयोगः ॥ कामधेनुसंयोगः ॥

...वाचाकारुमेहपराशीकावमुमाएवा
...मामानमेहोमभौरेकैरुमेगहहोपनोवा
...मधेनयोगहोताहैरणमेकामदेनाहै -

विषयसूचकः श्रीमद्भारविमं रत्नसूचकः श्रीमद्भारविमं

होमः पूर्णः सप्तमः ॥ ११ ॥ पूर्णः सप्तमः

श्री-पाशाकालमेनुग्रहे ३ स्थान मेनु
 ग्रहे ४ श्रीरक्षस्थानवेशाणीहोग श्रीर
 ११ स्थान मेनुग्रहोपग्रहयोगमेपा
 शाकलेहीराष्ट्रलग्नकज्ञानना --

समस्त भक्तानां धर्मोपदेशार्थं श्रीगुरुदेवकी कृपावशात्

गविस्वामोवातः सर्वोपि पञ्चः ॥ ५५ ॥

ली० आचार्य महाराज महोदय के शुक्र
संस्थान में चन्द्रधौर संस्थान में
एक ही मनोमूर्ति हो गई है। य
मनको तोलें वे सिद्धी जानना —

आपोक्कम गते च नरे के द्रस्यो मुर पुजिते ॥ योग के नृ

निष्कालाया नुरिष्टाय नमः ॥ ५४ ॥ केन जगत्

श्री साक्षात्कृतमे ३४:१५२ इति
 स्यात्मेचद्वयाहोपऔरकेन्द्र ३४:१५
 १२ इति स्यात्मेचद्वयाहोपऔरकेन्द्रनाम
 मेचद्वयाहोपऔरकेन्द्रनाम

[illegible]

प्राप्तमार्गान्तरात्प्राप्तमार्गान्तरात्प्राप्तमार्गान्तरात् ॥ १५४ ॥

टी० साक्षात्कालमे लउउने पुष्यहोम और सूर्यमंडलस्थानमे होय
११ स्थानमेहु रहोय सोमलायापुनरुत्पत्तिसमयमे तहें जानकर हो

शत्रुवर्णकानाशजानना -

पाशुपतयोगचक्रम् ॥

प्रस्थानमुहूर्तः ॥ सुमुहूर्तेस्वयंगमना

संभवेप्रस्थानंकार्यं ॥ शूलो बज्रोपवीतः

कंशस्त्रं मधुचस्थाययेत्फलं ॥ विप्रादि

क्रमतः सर्वस्वर्णधान्यांबरादिकं ॥ १६५ ॥

३	२	१	१२
	४	५	११
६		७	१०
८	९	१०	११

टी० सुमुहूर्तेमेयात्रानकरसकैतोप्रस्थानरखना ब्राह्मणनेप्रस्थानयज्ञोपवीतकरना क्षत्रियनेप्रस्थानशस्त्रकरनावैश्यनेप्रस्थानमधुकरना शूद्रनेप्रस्थानफलकरना यहचारोवर्णकाप्रस्थानऔरसुवर्णधान्यवस्त्रयहसबकोकथितहै -

अन्यमतः ॥ ॥ राजादशाहंपंचाहमन्योन्यप्रस्थितोव

सेतः ॥ अंगप्रस्थानेसम्पूर्णवस्तुप्रस्थानकेऽर्धकं ॥ १६६ ॥

टी० राजानेप्रस्थानरखनेपर१०दिनरहना औरअन्यको५दिन औरअंगप्रस्थानकरेतोसंपूर्णफलवस्तुप्रस्थानकरेतोअर्धफलजानना

अन्यमतः ॥ ॥ गेहाहेहान्तरंगर्गः सीमः सीमांत

रोभृगुः ॥ बाणक्षेपंभरद्वाजोवसिष्ठो नगराद्दहिः ॥ १६७ ॥

प्रस्थानेपिरुतेनोयान्महादोषान्वितेदिने ॥ १ ॥ ॥

टी० प्रस्थानप्रकारगर्गकावचन प्रस्थानअपनेघरसेदूसरेकेघरमेरखना भृगुकावचन प्रस्थानशहरकेसीमापररखनाभरद्वाजकावचन प्रस्थानजितनेदूरबाणजायउतनेदूररखना वसिष्ठकावचन प्रस्थानशहरकेबाहूररखना औरप्रस्थानकियाकहाचित्त उसदिनमहादुष्टयोगहोयतोयात्राकरनानही -

यात्राकेदिनवर्ज्यः ॥ ॥ क्रोधसौररतिश्रमामिषगुडद्युता

श्रुदुग्धासवसाराभ्यंगभयासितावरषमिस्तैलंकटू रसै

जमे ॥ सौरसौरतीः क्रमास्त्रिशरसन्नाहंपरंतेदिनेरोग

स्त्र्यार्तवकंसितान्यतिलकंप्रस्थानकेपीतिच ॥ १६८ ॥

टी० यात्राकरनेकेदिनत्याग कोपसौरस्त्रीसंग महिनतमांसगुडद्युतरोहन दूध मद्य क्षार सुगंधतैल भय कृष्णवस्त्र अमन तैल कडुवापदार्थ यहयात्राकेदिनत्यागकरना औरदूधसौरस्त्रीसंग यहतीनक्रमसेया

जो देवहिले ३५०० इन्नेदिगलन करना और रोग विना विषय
 चिंता और श्वेतनिलकसे अन्यविषय कपूत स्थान विना कदना
 पाया मेरा हज विना ॥ प्राणागले तुलनेन विना ही
 स्यात्ते नहि ॥ दिशि प्रतीक्या म विना योरी च्या नर ॥ १०००
 टी० पूनीदशमे पात्रा लकी पर बैठ को करना और दक्षिण दिक्का में
 यपर बैठ को करना और पश्चिम दिक्षामे पोट्टा म बैठ को करना और
 ए उत्तर दिक्षामे पात्रा लकी पर बैठ को पात्रा म करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ पूर्व दिक्षामे दक्षिण पाद पात्रा म
 धिप ॥ हात्रि शत पद गत्या घन भास्वत जनेन ॥ १००१ ॥

टी० पात्रा कल मेरा जाने पहिले दक्षिण करण आगे रखना और ३२
 गोड चरु म पिंसा वा री पर बैठना अथवा गोड से पात्रा करना -

अन्यमत ॥ ॥ ता प्रपात्रे तिला कृत्वा स घृता नैव
 संघृता ॥ निवेद्य पुरा विना यदैव ता य विरोधत ॥ १००२ ॥

टी० पात्रा का म मेरा घृता निल युक्त घृत मुबन युक्त उन्नमत्रा ल
 ग को देना पर नु त्यो गिपी को देना न स्थापन के मास्ते ॥

पात्रा से आय के गृह प्रवेश ॥ ॥ शुभ प्रवेशो म पुनि
 ध्रुवा रणे धि प्रै धरै स्यात्स नरेव या ज ॥ दधै रूपा दारुण
 नैः कुमारी राक्षसी विशाखा सुविना प्रयेति ॥ १००३ ॥

टी० पात्रा कर के आय मे ही गृह प्रवेश करने के वास्ते न कपर से शुभ पुन
 न सत्र जानना -

अन्यमत ॥

निर्गमाय न से मा
 सि प्रवेशे नैव शोभ
 न ॥ म म मे दिव से नै
 व प्रवेशे नैव का
 येत् ॥ १००४ ॥ ॥

घट्ट	व	र	उ	अ	ग	गहन मन्त्र
वृ	उ	उ	उ	उ	उ	गहन मन्त्र
वि	ह	अ	उ	आ	ग	गहन मन्त्र
च	र	उ	प्र	प	ग	गहन मन्त्र
उ	र	उ	प्र	प	ग	गहन मन्त्र
रा	र	उ	प्र	प	ग	गहन मन्त्र
०	र	०	०	०	०	गहन मन्त्र
०	र	०	०	०	०	गहन मन्त्र

टी० पात्रा के चार नवम मास मे गृह प्रवेश करना न और न कपि
 न मे प्रवेश करना न ही शुभ प्रवेश न ही -

- मत्स्यकथितदुष्टशकुन॥ औषध्याचनियुक्तोहिधान्यंरु
 षांतुयद्भवेत्॥ कार्पासश्चतृणंशुष्कंशुष्कं गोमयमेवच॥१७४
- टी० यात्राकालमेघरसेनिकस्तेहीदुष्टशकुन औषधी युक्त मनुष्य
 काला अन्न कपास भूसा गोइठा यह सामने अशुभ
 दन्धनंचतथांगारंगुडं सर्पिस्तथाशुभं॥ अन्य
 तोमलिनोमन्दस्तथाग्नश्चमानवः॥१७५॥
- टी० काष्ठ अग्नि गुड घीव और दुष्टपदार्थ तेललगायापुरुष मलिन
 मूर्ख नग्न पुरुष यह यात्रामेनिकस्तेही सामने आवेतो अशुभ -
 युक्त केशोरुजार्तश्चकाषायंवरधारिणः॥
- उन्मत्तःकंथितोसत्वोदीनोवाथनपुंसकः॥१७६
- टी० पुरुष बाल खोले रोगी सन्यासी उन्मत्त गुद डाल पेढे पुरुष पा
 पी पुरुष नपुंसक यह यात्रामेनिकस्तेही सामने अशुभ -
 आयःपंकस्तथाचर्मकेशबंधनमेवच॥ तथै
 वोद्धृतसाराणिपिण्याकादितथैवच॥१७७
- टी० लोहा कीचड चमड़ा बाल बांधते होय तक्रखड़ी यह यात्रा
 मेनिकस्तेही सामने अशुभ जानना -
 चाण्डालस्यशवंचैवराजबंधनपालकाः॥
- वधकाःपाककर्माणोगर्भिणीस्त्रीतथैवच॥१७८
- टी० डोमकाप्रेत बेडीवान् नाश करनेवाले पापकर्मीगर्भिणीस्त्री
 यह यात्रामेनिकस्तेही सामने अशुभ जानना -
 तुषंभस्मकपालास्थिभिन्नभांडानियानिच॥
- रक्तानिचैवभांडानिमृतस्त्रारंगस्तथैवच॥१७९
- एवमादीनिचान्यानित्यप्रशस्तानिदर्शने॥१८०॥
- टी० भूसा भस्म कपाल हाड जूटाजूटाबरतन तांबेकाबरतन मृ
 त्तिकाकाबरतन अथवा रांगेकाबरतन यह त्याग करना औरभी
 दुष्टपदार्थ त्याग करना सो यात्राकाल मे सामने अशुभ -
 कयासितिष्ठ आगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु॥
- अन्यशब्दाश्च ये निष्ठास्तेविपत्तिकरा अपि॥१८०॥

टी० पात्राकालमेनिकस्तेहीकोर्वहतेनुमकहासेआयेखडेहोकरहा
जाओगेऔरऐसेअन्यशब्दहोयतोपिपनिवारकहोताहैऐसाजान
धजादोवायसास्थानकेज्यादानविगर्हित॥

सबहुनवाहनानांचनस्त्रसंगस्त्रयैवच॥१८१॥

टी० पात्राकालकेऊपरकोवावेठनाअपिलेकोउत्तमआवनावाहनपरसमि
तनायस्यपहिरनापुरुषयहवाक्यमेनिकस्तेहीसाधनेअशुभजानना
हुऐनिमित्तप्रथमेअमंगल्यचिनाशानम्॥

वैशंपूजयेदिहान्स्त्रवेनमधुसूदनम्॥१८२॥

टी० पात्राकालमेपूर्वमेशकुनकहाहैनिस्सेदुसराकुनअहिलेदे
खेतोहोपनिवारणकेवास्तेविष्णुपूजनकरनामधुसूदनकासा
धनकरनाशुभफिरपात्राकरना-

हिनीयेचततोदृष्टेयतीपेप्रविशेहृहं॥

अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि विप्राकानिमयानघ॥१८३॥

टी० दूसरेपात्राकालमेदुष्टशकुनहोयतोवरनेआवनापि
शुभशकुनआवेनोगमनकरनासाशुभशकुनकहतेहैं-

पात्राकालमेउत्तमशकुन॥ ॥ प्रशस्तोनायशब्दस्तु
भिन्नमेरीरवास्तथा॥ पुरतःशब्दएहीतिशस्यतेस्तु
पृष्टत॥१८४॥ गच्छेन्नैवयथायथास्तादृविगर्हित॥

टी० पात्राकालमेउत्तमशकुनवायशब्दनगारेकाशब्दअपनेअ
ग्रभागआओऐसाशब्दहोयतोउत्तमजाननायहशब्दरीछे
अशुभऔरजाओयहशब्दरीछेअच्छाआगेअशुभ-

अन्तमत्त॥ ॥ श्वेताःसुमनसःश्रेष्ठःपूर्णकुम्भस्तथैव
च॥ जलजाःपक्षिणश्चैवमांसमत्तस्यपार्थिव॥१८५॥

टी० पात्राकालमेनिकस्तेहीसामनेसफेदफूलउत्तमपूर्णकुम्भ
मच्छवहीमच्छकायांसयहशुभजानना-

गवस्तुंगमोनागोहइसकःपशुस्तज्जा॥

विदशाःसुहरेविवाज्वलितमहुताश्वः॥१८६॥

टी० पात्राकालमेनिकस्तेहीसामनेगोबोवाकापीरकरदणशुभकीदे

वताकीमूर्तीमित्रब्राह्मण २ प्रज्वलितअग्निग्रहशुभजानना-

गणिकाचमहाभागादूर्वाश्वाद्राश्चगोमयं॥

रुक्मंस्तूप्यचनाग्रंचसर्वरत्नानिचाप्यथ॥१८७

टी० यात्राकालमे—निकस्तेहीसामने वेश्यादूर्वा ओदागे

वर सुवर्ण रौप्य ताम्र और सर्वप्रकार के रत्न यह शुभजानना-

औषधानिचसर्वज्ञायवाःसर्वार्थकास्तथा॥

खड्गपात्रपताकाचमृत्तिकायुधपीठकं॥१८८

टी० यात्राकालमेनिकस्तेहीसामने औषधी उत्तमपंडितसफेद

सरसोखड्गपात्र पताका मृत्तिका शस्त्र आसन यह शुभजानना—

राजलिंगानिसर्वाणिशवंरुदितवर्जितम्॥

घृतंरधिपयश्चैवफलानिविविधानिच॥१८९॥

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामने राजचिन्ह देखे प्रेत रोदनवर्जित

घीव दहीदूध और नाना प्रकार के फल यह शुभ—

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नद्यावर्तःसकौस्तभः॥

वादित्राणांशुभःशब्दोगंभीरःसुमनोहरः॥१९०

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामने स्वस्ती आशीरवादवचनकाशब्दकौस्तुभ

मणिघुक्तमाला और नाना प्रकार के उत्तम वाद्य के शब्द गंभीर मनोहर यह

गांधारषड्जक्रषभापे गीताःसुस्वराःस्वराः॥ (शुभजानना)

वायुःसशर्करोत्पुष्पाःसर्वविघ्नविनाशकृत्॥१९१

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामने उत्तम प्रकार का गाधन स्वर सहित

तवायु मधुर अथवा उष्ण यह हो घनो सर्वविघ्ननाशजानना—

प्रतिलोमस्तथानीचोविज्ञेयोभयकृद्भिजः॥

अनुकुलोमृदुःस्निग्धोसुखस्पर्शःसुखावहः॥१९२

टी० यात्रामेवर्णसंकरवैसानीचयवन ब्राह्मण भयंकर अपने

को अनुकूल पदार्थ उत्तम सुखसंग और सब सुखावह जानना—

शस्तान्येतानिधर्मतयत्रस्थान्यनसःप्रियं॥

मनसस्तुष्टिरेवात्रपरमंजयलक्षणम्॥१९३॥

टी० यह जो पूर्वमेकथित किया शकुन सो उत्तम परन्तु मनको प्रिय

होयनयात्राकरना जयप्राप्तीजानना -

मनोत्पुस्वत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो विजयप्रवादः॥

मांगल्यरुचिः अचणं च राशं ते रागिनिर्त्यं विजयावहानि॥

टी० मनसु हर्षने यात्राकरने सेवा दमे किअप मांगल्य प्राप्ती अत
यात्राजाने विचार करको यात्राकरना - शुभ

क्षेमं करा नीलकण्ठाः शोभन्तु कवराजं बुकाः॥

प्रस्थाने वामतः प्रेक्षाः प्रवेशोददिग्भाः शुभाः ॥ १९५

टी० यात्रामे निकस्ते ही अपने बाए तरफ मौरकुत्ता र लुकपक्षी गद
हासि बारबह कल्याण कारक जानना - और प्रवेश काल मे दहिने शुभ
नौवा नमिष्टं जल राशिल ये तदंश के बान्य प्रहोदयेपि॥

टी० नाव की यात्रा सब यात्रा के ऐसी विशेष जल राशी काल मे और जल रा
शी का अंश होय संकट मे अन्य ग्रह के राशी मे भी करज - इमि यात्रा प्रकर

अथ विषय प्रकरणम्॥

पं॥

आनंदादि योगः॥ ॥ सूर्यै विभातु हिनरौ विविचंद्रविष्णवा

त्तापी च भूमितनये च बुधे च हस्तात्॥ मैत्राहुरौ भृगुसुनेव तु

वैरवदेवाब्जाय सुतेवरूपाभाक्रमशः स्मुरेव॥ १॥ आनंदः का

लदंडश्च धूम्राख्योऽथ प्रजापतिः॥ सौम्योऽब्जासौ ध्वजा नाका

श्रीवत्सो वज्रमुद्गरः॥ २॥ ह्रंमैत्रो मानसश्च पद्मारख्योऽनुवक

लया॥ उत्पातो मृत्युकाणारब्धः सिद्धिश्चैव शुभो मृतः॥ ३॥ सुस

लोचनदारव्यश्च मानसगौराक्षसश्चरः॥ स्थिरः प्रवर्षमानश्च यो

गोऽष्टाविंशतिः क्रमात्॥ ४॥ फलः॥ आनंदे लभते सिद्धिं काल

दण्डे मूर्तिं तथा॥ धूम्राख्येऽनुवर्षेऽनं सौभाग्यं च प्रजापतौ

॥ ५॥ सौम्ये चैव महत्सौख्यं चैव ध्वजनाम्नि

च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यं संपदः॥ ६॥ वज्रेऽयं यो मुद्गरे च श्री

नाशस्तु तथैव च॥ कृत्वे च राजसंन्याने वै चैव हि न स यथा॥ ७

मानसे चैव सौभाग्यं पद्मारख्ये च धनागमः॥ अनुवर्षेऽनं हानि

श्च कृत्याते प्राणनाशनः॥ ८॥ मृत्युचो मे भवेन्मृत्युः काले च

त्रैलोक्यादि योत्॥ सिद्धि योगे भवेत्सिद्धिः शुभे कल्याण मेव च॥

॥९॥ अमृते राजसन्मानो मुसले च धनस्यः ॥ गदाख्ये च
 स्याद्विद्यामानं गेकुलवर्धनं ॥ १० ॥ राससे तु महत्कष्टं च रेका
 र्ये च सिध्यति ॥ स्थिरयोगो गृहारंभे प्रवृद्धे पाणिपीडनं ॥ ११ ॥
 टी० आनन्दादिभट्टादिसयोगद्वये एकेकयोगमेव बार और ७
 नक्षत्रक्रमसेचक्रमे देवना.

योगनाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	फल
१ आनन्द	अश्वि	मृग	आश्ले	हं	अनु	उ.वा	श	सिद्धि
२ कालदंड	भर	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	मृत्यु
३ धूम्र	कं	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्रव	उ.भा	असुरव
४ प्रजापती	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.वा	धनि	रेव	सौभाग्य
५ सौम्य	मू	आश्ले	हं	अनु	उ.वा	शत	अश्वि	बहुतसुख
६ ध्वांस	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	भ	धनस्य
७ ध्वज	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्र	उ.भा	क	सौभाग्य
८ श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा	वि	रू.वा	ध	रेव	रो	सौख्यसंपत्ती
९ वज्र	आश्ले	हं	अनु	उ.वा	शत	अश्वि	मू	स्य
१० सुहृद	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	भ	आश्ले	लक्ष्मीनाश
११ छत्र	रू.फा	स्वा	मू	श्र	उ.भा	क	पुनर्व	राजसन्मान
१२ मैत्र	उ.फा	वि	रू.वा	ध	रेव	रो	पुष्य	पुष्टी
१३ मानस	हं	अनु	उ.वा	शत	अश्वि	मू	आश्ले	सौभाग्य
१४ पद्मारव्य	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	भर	आश्ले	मं	धनप्राप्ती
१५ लुब्धक	स्वा	मू	श्र	उ.भा	क	पुनर्व	रू.फा	धनस्य
१६ उत्पात	वि	रू.वा	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	प्राणनाश
१७ मृत्यु	अनु	उ.वा	श	अश्वि	मू	आश्ले	हं	मृत्यु
१८ क्षणारव्य	ज्ये	अभि	पू.भा	भर	आ	मं	चि	केश
१९ सिद्धि	मू	श्र	उ.भा	क	पुनर्व	रू.फा	स्वा	कार्यसिद्धि
२० शुभ	रू.वा	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	कल्याण
२१ अमृत	उ.वा	श	अश्वि	मू	आश्ले	हं	अनु	राजसन्मान
२२ पुसल	अभि	पू.भा	भ	आश्ले	मं	चि	ज्ये	धनस्य
२३ गदाख्य	श्र	उ.भा	क	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	असपअविद्या
२४ मातंग	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.वा	कुलवृद्धी
२५ रासस	श	अश्वि	मू	आश्ले	हं	अनु	उ.वा	महाकष्ट
२६ वर	रू.भा	भ	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	कार्यसिद्धि
२७ स्थिर	उ.भा	क	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्रव	गृहारंभ
२८ प्रवर्धमान	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.वा	धनि	विवाह

चरयोग ॥ १२ ॥ रवौ पूर्णगुरौ पुष्यशने मूलभूमौ मया ॥ भौमे
 ब्राह्मविशा भौमे चंद्रे द्रोचरयोगः ॥ १३ ॥ ककचयोग ॥ रवौ
 तुलादशी प्रोक्ता भौमे च दशमीतया ॥ चंद्रे चैकादशी प्रोक्ता
 नवमी बुधवासरे ॥ १४ ॥ शुक्रे च सप्तमीने पाशने चैव तु
 पश्चिका ॥ गुरौ चाष्टमिका ज्ञेया योगस्तु ककचो बुधैः ॥ १५
 ॥ मध्ययोग ॥ बुधतृतीयाजुज च मीनबह्व्या गुरोरष्टमि
 शुक्रवारे ॥ रुद्रादशीलोपशनिर्नवम्या द्वादशमकोवि
 ति मध्ययोगः ॥ १६ ॥ मृत्युदायोग ॥ रवौ भौमे भवे च द्वाभ
 द्वाजी च शशांकयोः ॥ जयाशुके बुधेरक्ताशनौ पूर्णो वधुत्स
 दा ॥ १७ ॥ मित्रियोग ॥ शुक्रे च द्वादशे भद्राजवा भौमे प्रकी
 र्तिता ॥ शनौ रिक्ता गुरौ पूर्ण सिद्धि योगा उग्रहनाः ॥ १८ ॥
 उदयादि योग ॥ निशास्वादिवलुं क्तु भास्करादिक्रमेण
 तु ॥ उत्तराजमृत्युकालारब्धसिद्धि योगः प्रकीर्तिताः ॥ १९ ॥
 यमदंष्ट्रयोग ॥ यथाधनिष्ठापूर्णे तु चंद्रे पुरुषि शारवके ॥ कनि
 काभारणी भौमे सौम्ये पूषा पुनर्वसु ॥ २० ॥ गुरौ पूषाश्विनी
 शुके रोहिणी चानुराधका ॥ शनौ विष्णुः शतभिषकपुष्य
 दंष्ट्रः अकीर्णतजरा ॥ यमचतुष्टययोग ॥ रवौ शशां बुधे मूलतु
 रौ चैव चरुतिक्ता ॥ भौमे चार्द्रा शने हस्तः शुके चैव तुरोहि
 णी ॥ २१ ॥ चंद्रे विष्णुस्तो योगो ययस्य दंष्ट्रः प्रकीर्णितः ॥ सुत
 रुद्रजयोग ॥ चंद्रे चिन्मृगे ज्येष्ठाशनौ चैव तुरेवती ॥ नाद्र
 ने तु धनिष्ठाकारवौ तुभ्रणीतया ॥ उषाश्चैव तु भौमे च गुर
 रौ चैव कोत्तरानवा ॥ अयं सुसहस्रकारयोगो वज्रः शुभो
 बुधैः ॥ २२ ॥ अमृतसिद्धि योग ॥ ॥ आदिस्थ हस्ते गुरु उ
 व्ययोगे बुधानुराधाशनिरोहिणी च ॥ सौम्ये च विष्णुर्भृगु
 रेवती च भौमाश्विनी च मृतसिद्धि योगः ॥ २३ ॥ ॥ ॥

टी० चरयोग १२ और १३ चरगृहचक्रमे देवता और चरनक्षत्राणि
 भौमोपायेतो चरादि १३ योगजानना - योगचक्र ॥ ॥

योगनाम	आनुवार	इंदुवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१ चरयोग	पूर्वषा	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२ क्रकचयोग	१२ ति	११ ति	१० ति	९ ति	८ ति	७ ति	६ तिथी
३ दग्धयोग	१२ ति	११ ति	५ ति	३ ति	६ ति	८ ति	९ ति
४ मृत्युयो	१६१०ति	१७१२ति	१६११ति	१६१४ति	१७१२ति	१८११ति	१९११ति
५ सिद्धियो	० ति	० ति	३८१३ति	१७१२ति	१९११ति	१६११ति	१६१४ति
६ उत्तातयो	विशाखा	पूर्वा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७ मृत्युयो	अनुरा	उत्तरा	शतता	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त
८ कारुयो	ज्येष्ठा	अ	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९ सिद्धियो	मूल	श्रवण	उत्तरा	रुक्मि	पुनर्व	पूर्वा	स्वाती
१० यमदंष्ट्रयोग	मघा-ध	मूल-वि	रु-भ	पूर्वापुन	उ-षा-अ	रो-अनु	श्र-शत
११ यमदंष्ट्रयोग	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	रुक्मि	रोहिणी	हस्त
१२ सुसलवज्जयोग	भरणी	चित्रा	उ-षा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३ अमृतसिद्धियो	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुरा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

रासचक्र ॥ ॥ नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थं मृत्युसंघ्र
हे ॥ शीर्षे श्रीप्यर्शलाभस्यान्मुखे त्रीणि विनाशनं ॥ २५ ॥
हृदि पंचधनं धान्यपादेषट्कंदरिद्रना ॥ पृष्ठे द्वे प्राणसंदे
होना भौवेहाः शुभावहं ॥ २६ ॥ गुदे द्वे भयपीडाचदसहस्रै
कमर्शकं ॥ एकं वामे नाशकरं मृत्युभात्सामिभांतकं ॥ २७ ॥

टी० नौकररखने के वास्ते सुहृत्तमपुष्य
के आकार चक्र लिखना उम्मीद नक्षत्र का
न्यास करना नौकर के नक्षत्र से मालिक
के नक्षत्र तक गिनना प्रथम मस्तक पर १
नक्षत्र फल द्वय लाभ मुख पर ३ नक्षत्र
फल नाश हृदय पर ५ नक्षत्र फल धन धान्य
पाद पर ६ नक्षत्र फल दरिद्र पीठ पर २
नक्षत्र फल प्राण संदेह नाभी पर ४ नक्षत्र
फल शुभ गुदा पर २ नक्षत्र फल भय

दास



बीजा दक्षिणहस्तपर १ नक्षत्रफल दक्षिणाश्री वायव्यहस्तपर १ न
क्षत्र फल नाशकारक ऐसा दासचक्र जानना -

दासीचक्र ॥ दासीचक्रप्रवक्ष्यामिदा दासीभाक्ताभिधां
तके ॥ शीर्षे श्रीणिमुखे श्रीणिस्कंधोऽप्युदयेऽप्युदये ॥ २८ ॥
॥ हृदये पंचक्रमाणि भागौ पंच भगैकके ॥ जानुद्वये द्वये
क्षेत्रे पादौ द्वयं त्रयं ॥ २९ ॥ फल ॥ शिरस्थाने भवेत्ता
भो मुखे हानिः प्रजायते ॥ स्कंधे दस्ताभ्यां मृत्युर्हृदये पु
ष्टिर्धनं ॥ ३० ॥ नाभौ हानिः प्रदं प्रोक्तं भगैर्नैव पलाय
ता ॥ जानौ सेवाल भेनि स्थं पादौ स्तु धनक्षयः ॥ ३१ ॥ ॥

टी० दासीरखने का मुहूर्त स्त्री के आ
कारचक्रलिखना उत्तर नक्षत्र न्यास
करना दासी के नक्षत्र से स्वामी नक्षत्र
तक देर खने का क्रम प्रथम ममस्तक पर
१ नक्षत्र फल ला भमुख पर ३ नक्षत्र
फल हानि दूनों स्कंध पर २ नक्षत्र फल
स्वाभीका मृत्यु हृदय पर ५ नक्षत्र फ
ल शरीर सुख जानी पर ५ नक्षत्र फ
ल हानि भग पर १ नक्षत्र फल पलाय
न गोरुक दूनों देउने पर २ नक्षत्र फल सेवा प्राप्ती पाद पर ६ नक्षत्र
फल धनक्षय इस प्रकार से दासी चक्र जानना -

दासी



गोरुपमादिर्षीचक्र ॥ शीर्षे त्रयं मुखे द्वे च पादे द्वौ विवि
दिषीत ॥ हृदये पंचक्रमाणि स्थाने भगैर्भगैर्कके ॥ ३२ ॥
फल ॥ शिरस्थाने भवेत्ता भो मुखे हानिः प्रजायते ॥ पादौ
रक्षता भवयात् हृदये सौख्यवर्धनं ॥ ३३ ॥ स्तनयोस्तु म
हत्ता भोगस्थाने महत्तयं ॥ अर्यमादिगवां तेषां माहि
ष्यां सूर्यभान्यसेत् ॥ हृदये वरुणे जैषणि शेष पल्लवोऽश ॥ ३४ ॥
टी० गो बैल भैस लेने का मुहूर्त गो के आकारचक्रलिखना उत्तराफाला
नीति विमल नक्षत्र नक्षत्र देर खने का क्रम प्रथम ममस्तक पर ३ नक्षत्र फल

लाभसुखपर २ नक्षत्रफलहानी पादपर ८ नक्षत्रफलद्रव्यलाभ हृद
यपर ५ नक्षत्रफलसुखवृद्धी स्तनपर ८ नक्षत्रफलमहालाभ भगपर
१ नक्षत्रफलमहाभयपरंतु बैलकेचक्रमे पादपर १६ नक्षत्रजाननाभौर
महिषीचक्रपर नक्षत्रन्याससूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक ऐसे साक्रमजान
गौ

दृष



अश्वचक्र ॥ ॥ अश्वेतुसूर्यभाचैवसाभिजिज्ञा निविन्यसे
त ॥ पंचस्कंधे जन्मभानपृष्ठे तु दशकं न्यसेत ॥ ३५ ॥ पुच्छे
ज्ञेयं दूयं प्राज्ञैश्च नुष्यादेचतुष्टयं ॥ उदरे पंचधिष्ण्यानि मु
खे द्वेच प्रकीर्तिते ॥ ३६ ॥ फल ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीना
शौर्यभंगता ॥ नाशश्च अर्थलाभश्च फलं प्रोक्तं मनीषिभिः

॥ अश्व ॥ ॥ ३७ ॥

टी० घोडालेने कामुहूर्त घोडाके आकारच
कलिसुखनासूर्यनक्षत्रसे अभिजितके सहित
जन्मनक्षत्रनक्षत्रन्यासकरना प्रथम स्कंधग
रदनके पीछे का भाग उसपर ५ नक्षत्रफल सौभा
ग्यपीठपर १० नक्षत्रफलद्रव्यलाभ पुच्छपर
२ नक्षत्रफलस्त्रीनाश ४ पादपर ४ नक्षत्रफ
लरणमे भंगपेटपर ५ नक्षत्रफलनाश सुखप
र २ नक्षत्रफलद्रव्यलाभ ऐसा अश्वचक्र देखना शुभ आवे तो लेना -



गजचक्र ॥ ॥ गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभातं च सूर्यभातं ॥
 कर्णोशीर्षदिजे पुच्छेद्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥ ३८ ॥ शुंङ्गापां नु हय
 यो ज्येष्ठे दाः पृष्ठोदरे मुखे ॥ षड्विंशतुर्ध्वपादेषु साधिति हैन
 संक्रमात् ॥ ३९ ॥ फल ॥ कर्णे चैव महालाभो यस्तु केलाभ ए
 व च ॥ दंते चैव भवेत्लाभो पुच्छे हा नि प्रजायते ॥ ४० ॥ शुंङ्गपां
 तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखं सन्पदः ॥ उदरे रोगसंभूतिर्मुखे सुख
 धर्मस्तृणं ॥ ४१ ॥ पादयोश्च भवेत्लाभो ज्ञेयं च विनिर्दिशेत् ॥

टी० हाथीले नेका मुहूर्त हाथी के आकार चक्र लिखना और पूर्व के दे
 ला विधी सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक

हाथी

देखना प्रथम कान पर २ नक्षत्र फल म
 हा लाभ मस्तक पर २ नक्षत्र फल लाभ
 दंत पर २ नक्षत्र फल लाभ पुच्छ पर दो
 नक्षत्र फल हाथी शृंङ्गा पर २ नक्षत्र फ
 ल शुभ ग्रीव पर ४ नक्षत्र फल सुख
 पनि पेट पर ४ नक्षत्र फल रोग प्रा
 पी मुख पर ४ नक्षत्र फल मध्यम पाद पर ६ नक्षत्र फल लाभ इस
 प्रकार से गजचक्र जानना शुभ आवे तो लेना -



पालकी चक्र ॥ ॥ सूर्यभादि नभं यावत्पंचपंचचतुर्दि
 शि ॥ मध्ये तु सप्तदेशानि चक्रे ते पंचमुखं बह ॥ ४२ ॥ फल
 पूर्वभागे तु चारो ग्यं दक्षिणे कर्कटकारकं ॥ पश्चिमे कृशाता
 नैव उत्तरे व्याधिसंभवः ॥ मध्यस्थं च शुभं प्रैतमा पुटं
 हि करं परं ॥ पर्वकारोपणं चैतहा र कत्वनुधैर्हि नम् ॥ ४३ ॥

पालकी ॥

टी० पालकी लेने का मुहूर्त पालकी के
 आकार चक्र लिखना और उसो चार
 दिशा कल्पना करना पालकी के पूर्व भा
 ग पर ५ नक्षत्र फल आरोग्यता पालकी
 के दक्षिण भाग पर ५ नक्षत्र फल दुःख
 तारक पालकी के पश्चिम भाग पर ५ नक्षत्र फल



लक्ष्मणकारकपालकीकेउत्तरमे५नक्षत्रफलरोगकारकपा०मध्यभा
गमे७नक्षत्रफलशुभआयुष्यवृद्धिकारकऐसापालकीचक्रदेखना
औरबालककोपलंगकेऊपरप्रथमवैठावनेकोयहीचक्रविचारकरना।

छत्रचक्र॥ ॥ अचरारोहिणीरौद्रपुष्पश्चशततारका
॥ धनिष्ठाश्रवणश्चैवशुभानिछत्रधारणे॥ फल॥ मूलेत्री
णिसप्तदण्डकंठेचैवतुपंचकं॥ मध्येवसुप्रदातयंशि-
खरेवैदग्धवच॥ ४५॥ मूलेचजायतेनाशोदंडेहानिर्धन
क्षयः॥ कंठेचराजसन्धानौमध्येछत्रपतिर्भवेत्॥ ४६॥ शि-
खरेकीर्तिवृद्धिश्चजन्मभात्सूर्यभोगं॥ ४७॥ ॥ छत्र॥

टी० प्रथमसूत्रधारणमुहूर्त्त तीनोउत्तरा०

रोहिणी. आर्द्रा. पुष्य. शततारका. धनि

श्री. श्रवण. यह नक्षत्र मेरा जाने छत्र धार

णकरना और छत्रके आकारचक्रलिखना

जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्र तक देखने का क्रम

पप्रथमसूत्रकेमूलमें ३ नक्षत्रफलनाशकारकदण्डमें ७ नक्षत्रफल

हानीकंठमे नक्षत्रफलराजासे प्रतिष्ठाप्यमे = नक्षत्रफलखत्रप

तीराजाहोयकलशपर४नक्षत्रफलकीर्त्तिकीरुद्धिऐसाचक्रजानना-

मंचकचक्र॥ ॥सूर्यभक्षणयेच्चांद्रमंचमूलेषतुश्रुतः

॥ गान्धर्वत्वे कविं ध्यासु मध्ये सप्तविनिर्दिशेत् ॥ ४७ ॥ फल

॥ मूलेतसखसौभाग्यगात्रे प्रोक्तं भयं महत् ॥ मध्ये सत

पुत्रलाभाय आसुर्वहिकरं परं ॥ ४६ ॥ अ ॥ अ ॥ अ ॥

॥ पलंग ॥

टी० पलंग अथ वास्वटिया का मुहूर्त

पलंगके आकार चक्रलिखना और

सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतक देखने

काक्रमप्रथममूलचारैगोडमेचार २

नमः १६ फल सुखसौभाग्ययुक्त ग

नामैऽनसुत्रफलमहाभयऔरमध्य

पै७ नमस्तत्र फल पुत्रलाभ सुखे सामं च कश्चिज्जनना ॥ ॥



बाणधनुषचक्र॥ ॥ सूर्यभाज्जनिभांतचधनुषेचैव यो
जयेत्॥ बाणप्रेबाणसंख्याकं शराप्रेपंचयोजयेत्॥ ॥ १॥
शरमूलेनथापंचयंचसंधौ प्रकीर्तयेत्॥ इत्युदयतुदया
द्वेधनुषधनुषके मुनये ॥ ५० ॥ फल॥ अथोहानिःशरेलाभो
शरमूलेनपस्तबा॥ बाणसंधौ तु शीर्षे स्यादंडे भंगवता गते ५१
टी० धनुषबाणमुहूर्ते धनुषके आकारचक्रलिखना सूर्यनक्षत्रसे
जन्मनक्षत्रतक देखने का क्रम प्रथम धनुषके अग्रपर ५१ नक्षत्रफल
हामी बाणके अग्रपर १२ नक्षत्रफल लाभ
बाणके मूलपर ५१ नक्षत्रफल जय धनुष
केटके संधीपर ५१ ५१ नक्षत्रफल मूरता
बाणके मध्यपर १२ नक्षत्रफल संग्राममें भंग
ऐसे प्रकारसे धनुषचक्र जानना ॥ ६॥

॥ धनुष ॥



रथचक्र॥ ॥ रथाकारं हि खेचक्रं सूर्यभाज्जनिभं च सेत्॥
रथाप्रेत्रीणि च स्त्रीणि वदुः केषु न तो न्यसेत्॥ ५२ ॥ नक्षत्र
यमध्यदंडेरथाप्रे भवयेत्तथा॥ यूपे च भवयेत्ते मेषदुर्धर्ष
ति मे ध्वनि ॥ ५३ ॥ शेषमृत्सत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वगौरये॥
फल॥ शेषे मृत्पुर्जं पश्चक्रे सिद्धिर्तेषां दंडके ॥ ५४ ॥ रथाप्रे
दंड अध्वानं मध्ये चैव सुरवंसुभं॥ यूपेरेवं फलं ज्ञेयं जन्म
भांतं क्रमेण च॥ गर्भे जीत्तानि च काणि विद्वेया नि सरा बुधैः॥

टी० रथचक्रका मुहूर्ते रथके आकारचक्र लिखना सूर्यनक्षत्रसे
जन्मनक्षत्रतक देखने का क्रम प्रथम रथके मृगपर १२ नक्षत्रफल म

त्यु नक्षत्रफल जग मध्यदं
अग्रपर १२ नक्षत्रफल सिद्धि रथके अग्रपर
५३ नक्षत्रफल राजदण्ड जुष्टे ५
५३ नक्षत्रफल उत्तर मार्ग पर ५
नक्षत्रफल सुन और शेष १२ नक्षत्र
सोम वरिषामे फल सुभ ऐसा न
र्षिक गोपे चक्र कथित किया है -

॥ रथ ॥



॥ तेलकाचक्र ॥ ॥ पाणाचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेव च
त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ॥ ५६ ॥ त्रीणि त्रीणि तु
भान्यत्र योजयेद्वाण केशु मे ॥ फल ॥ हानि रैश्वर्यमारोग्यं विना
शो द्रव्यमेव च ॥ स्वामिघातो निर्धननामृत्युरेव सुखं क्रमात् ।

टी० तेलनिकालनेकाचक्र सूर्यनक्षत्र
से दिननक्षत्रतक गिननेकाक्रम तेलके
यंत्रमेनो ९ भाग कल्पना करना नक्षत्र
और चक्रके क्रमसे फल जानना ॥ ॥

ऊखकाचक्र ॥

वेदहिनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमा
त् ॥ फल ॥ प्रथमं चलभेलुक्ष्मीहिनीये
हानिमेव च ॥ तृतीये सर्वलाभं च चतुर्थे च क्षयं तथा ॥ ५७ ॥ पं
चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेषु भंस्तृत्तं ॥ सप्तमे चैव पीडा स्या
दष्टमे धनधान्यदं ॥ ५८ ॥ सूर्यभाङ्गणयेच्चांद्रमिसुयंत्रेनियोजयेत्



टी० ऊखकारस निकालनेकाचक्र
सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिन
नेकाक्रम ऊखनिकालनेके यंत्रमे
भाग कल्पना करना नक्षत्र और च
क्रके क्रमसे फल जानना । —

॥ पाणाचक्र ॥



कोल्हचक्र ॥

१ प्रथमभाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग
३ भाग

हानि
रैश्वर्य
आरोग्य
नाश
द्रव्य
स्वामिघात
निर्धन
मृत्यु
सुख

४ प्रथमभाग
२ भाग
२ भाग
१ भाग
५ भाग
५ भाग
२ भाग
६ भाग

लक्ष्मी
हानि
सर्वलाभ
क्षय
मृत्यु
शुभ
पीडा
धनधान्य

इसमे जिस दिन शुभफल आवे उस दिन करना ।

सुविमुक्तस्य ॥ स्वातीषा ह्यमृतेन रादिनि पुणेन पा
सुतु फे मारे वत्पु नर विष्णु मं हृषि विरोही आदिवाप
विरोही ॥ गोकुलाद्यप्यनाथाया सुभदावाराः कुजा कीर्त
रंषीहा दशिरिका पर्वसुतया नृन्येहि नायाद्वयं ॥ ६० ॥

श्रीः स्वती रोहिणी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा म
कर मूला मघा रेवती उषा श्रवण पक्ष्मस्तमे औरवृष कन्या
मीन मिथुन पक्ष्मस्तमे सेती करनको आरंभ करना चतुर्विंशदे
खक आगे मंगल शनी इस बार का त्याग करना और तिथी पकी दु
दशिरिका तिथी ॥ ६१ ॥ पर्व और अहिती पार स्कं ठु विकर्म मेल्या

हलकं ॥ ॥ त्रिकं त्रिकं त्रिकं पंच त्रिकं पंच त्रिकं त्रिकं ॥ सु
मं मातृ पण्ये चान्द्रमसु भं च सुभं कमात ॥ ६१ ॥ अ ॥

श्रीः मृगशिरा मने को सुहृत्तरा रैन हलकनेदि
नन हलकनेदि नन का कय हा कय करे आठ
भाग कल्याण करना मृगशिरा मने को सुहृत्तरा
सुभ द्वितीय मृगशिरा मने को सुहृत्तरा
सुभ फल अशुभ चतुर्थ मृगशिरा मने को सुहृत्तरा
पंचम मृगशिरा मने को सुहृत्तरा
सुभ सप्तम मृगशिरा मने को सुहृत्तरा



हलकनेदि नन - तिसदिन सुभतसत्र आशुत बहल जोत मा
नौका सुहृत्तरा ॥ ॥ श्रवणादिनि स्तुरग वारुण मित्र विवरी
तोष्ण रश्मि वसु जीवक भाव्य मूर्ति ॥ शारे च जीव भृगु नन्दन
के प्रशस्ते नौका नि संघटन वा हे नमे पुकुर्यात् ॥ ६२ ॥

श्रीः रेवती पुनर्वसु अश्विनी शततारका अनुराधा चित्रा मृगश
स्त भनिहा पुष्य पक्ष्मस्तमे मृगशिरा मने को सुहृत्तरा
को अरंभ करना अथ राजहमे होइता - नौका चक्र

विषुक्त हर्षा न भुवि श्री पण्ये चान्द्रमसु भं च सुभं कमात ॥ ६३ ॥
मिष्टुष्टे भूरा र्शे मंत्रा ॥ ६३ ॥ सुक्ता न विमिष्ट मध्ये नौका चक्र
भसा स्थितः ॥ उपरस्थं च ध्वजं पश्चिमं च परेन तन ॥ ६४ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे गिनने का क्रम ऊपर
स्तंभ पर ६ नक्षत्र नाली में तीन नक्षत्र
हृदय पर तीन नक्षत्र पीठ पर १ नक्षत्र
बाजू पर ३ नक्षत्र कान पर ३ नक्षत्र म
ध्य में ६ नक्षत्र ऐसे नौ का पर नक्षत्र



न्यास करना उपरस्थ मध्यस्थ नक्षत्र शुभ और अन्य अशुभ जान
नौ का को लग्न बल ॥ ॥ त्रिषडा यगतः सूर्यश्चंद्रो द्वि

त्र्यायगः शुभः ॥ कुजा कीं त्रिषडा यस्थौ त्रिषट्खेतरे
गोगुरुः ॥ ६५ ॥ हि सुतास्ता शूरिः फायरि पु संस्थो बुधः स्मृ
तः ॥ सुखां त्यारी त्विना यत्र नौ याने शुभदः सितः ॥ ६६ ॥

टी० नौ का में बैठना अथ बाजल में छोड़ना तो ग्रह बल तृतीय पक्ष
एकादश इतने स्थान में सूर्य शुभ और २३/११ इतने स्थान में चंद्र
शुभ और मंगल शनी यह ३६/११ इतने स्थान में शुभ और ३६/१०
इतने स्थान में वर्जित कर को गुरु शुभ और २५/७८/१२/११/६ इ
तने स्थान में बुध शुभ ४/१२/६ इतने स्थान वर्जित कर को शुक शु
भ ऐसा नौ का गमन में लग्न बल देखना —

नौ का के स्थान में ग्रह ॥ ॥ ना त्यां पा परवगाः सौम्याः

शुक्लाणे शुभकारकाः ॥ व्यस्ता मृत्युकराः क्रूरः पृष्ठे कू
र्षे च भीतिरुत् ॥ ६७ ॥ अने बाह्ये स्थिता स्ते च ह्यलाभा

यस्मृता बुधैः ॥ एवं विचार्य देव तौ नौ यान समये वदेत् ॥ ६८

टी० प्रथम नाव की कुण्डली लिखना जो ग्रह जिस स्थान में होय उसका
फल नाली में पाप ग्रह शुभ और शुक्लाण पर शुभ ग्रह शुभ यह विपरी
त होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर अथवा कूस्व पर आवे तो भय
दायक हो ते है और भीतर अथवा बाहर आवे तो द्रव्य लाभ होय
ऐसा जानना यह नौ का गमन में विचार करना चाहिये ।

दीपिका चक्र ॥ ॥ दीपिका या मुखे पंचला भसन्मान

लाभदाः ॥ कंठे नवधन प्राप्तिर्मध्ये शैस्वामि मृत्यु
दाः ॥ ६९ ॥ दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्निं कृत्वा च दीपिकं ॥

॥ दीप ॥

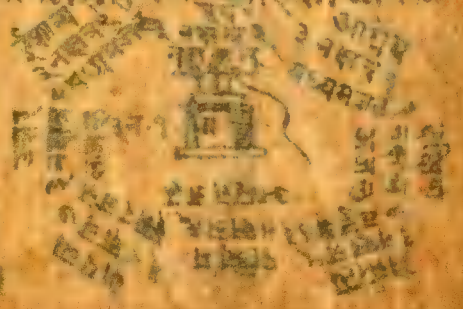


प्री० दीपकचक्रकाहूतं शीघटकेभाकारच
 क्रलिरना और कनिका नक्षत्रसे दिनात सत्रव
 कन्यासकरना प्रथमसुरव १२५ नक्षत्रफलरा
 जमानल्लभ कंड पर ९ नक्षत्रफल धनप्राप्ती म
 ध्यमे ० नक्षत्रफल स्वामिपुत्र्युदं पर ५ नक्षत्र
 फलराज्यदयक ऐ सादीयटकाचक्रजानना -

कूपचक्र ॥ ॥ कूपवाप्यास्तुचक्रं वैरिहरेपं विबुधैः शुभ ॥
 रोहिणीमर्धमेतस्य त्रिचक्राणि चंद्रमं ॥ ७० ॥ म ॥
 पूर्वतया प्रेयेयाम्ये चैव तु नैर्कने ॥ पश्चिमे चैव वा प
 म्यां सौम्यमृ लदिशि क्रमात् ॥ ७१ ॥ फलराशी घंजलं
 नजलं मध्यमजलं नजलं बहुजलं च ॥ असृजलं व
 हुसारं सजलं मध्यजलं क्रमात् लेपं ॥ ७२ ॥ मन्त्रे कुली
 रेशकरे जलं बहुतयैव साईं दृष्टुं भयोश्च ॥ अलौच
 तैलौ नजलापतामता शेषां च सवैः जरुतामकीर्तिताः ७३

टी० कूपवाप्यलौखोदने के वास्ते कूपचक्रं कूपके भाकारचक्र क्रलिरना
 रोहिणीनक्षत्रसे दिनात सत्रव कन्यासकरना प्रथमसुरव १२५ नक्षत्रफलरा
 जलजुदी जलल गंगा पूर्वमे ३ नक्षत्र फल जलमही अग्निदिशामे ३
 क्षत्र फल मध्यमजल दक्षिणदिशामे ३ नक्षत्र फल नही नैर्कतीदि
 शामे ३ नक्षत्रफल बहुजल पश्चिममे ३ नक्षत्र फल उत्तमजल वापु
 दिशामे ३ नक्षत्र फल सारजल उत्तरमे ३ नक्षत्र फल जलपुत्र दैशामे
 मे ३ नक्षत्रफल मध्यमजल हेसालग्रसे नीच करी मकर इसराशीके
 चैवयामे जल बहुत और चक्रं भरस्वो अर्धजल दक्षिण तुला दसो
 जलघोडा और शेषराशी के चंद्रयामे जलल गंगानदी ऐसा जानना -

चमौ चालगावने का सुहूर्त
 गोसिंहारिगतेषु चोत्तर
 ते भानौ बुधादिवये ॥ च
 त्वा केच सुभातये र्मिदि
 ताराप्रतिष्ठा विद्या ॥ ७४ ॥



टी० बगीचाल गावने का मुहूर्त वृषसिंहवृश्चिकयह राशी के सूर्यमे अथवा
उत्तरायणमे और बुध गुरु शुक चंद्र सूर्य इन के वारमे बगीचा की प्रतिष्ठा करना

अन्य मत ॥ ॥ आश्लेषा भरणी हयंशतभिषकृत्यत्काविषा

एवांकुहं रिक्तापसतिशीष्टमीपरिहरेत्तृतीयपिद्वादशी ॥

टी० आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावास्या रि
क्तातिथी पक्षतिथी अष्टमी षष्ठी द्वादशी इतने का त्याग करना और ब
गीचाल गावना -

सिक्काचलावने का मुहूर्त

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्तेशनिचंद्रवर्ज्ये ॥ वारे

तथा पूर्णजलाब्धे च मुद्राप्रशस्ता शुभदा हिराजा ॥ ७६

टी० सिक्काचलावने के वास्ते मुहूर्त मृदु नक्षत्र मे ध्रुवनक्षत्र मे क्षिप्र नक्ष
त्र मे चरनक्षत्र मे और उत्तम योग मे शुभ शनिचंद्र यह वार त्याग करना
और पूर्ण योग या जल योग मे राजाने रुपया बनावना -

त्रयोदशदिन पक्ष फल ॥ ॥ एकपक्षे यदांति निथयश्च

योदश ॥ त्रयस्तत्र यदांति वाजिनो मनुजा गजाः ॥ ७७ ॥

टी० एक पक्ष मे १३ तिथी आवेतो घोडा मनुष्य और गज इन का नाश जा
नना -

आषाढ १५ को वायु परीक्षा ॥

आषाढ मासस्य च पौर्णिमा स्यात्सूर्यास्तकाले यदि वातिवातः ॥

पूर्वस्तदा सस्य युना च मेदिनी नंदं तिलोकाजलदायि नो घनाः ॥ ७८

टी० आषाढ मास मे पौर्णिमा के दिन सूर्यास्त काल मे वायु परीक्षा उत्का
प्रकार पूर्वदिशा का वायू होय तो पृथिवी धान्य युक्त लोक सुखी मेघ वृ
ष्टि करेगे ऐसा फल जानना -

रुशानुवाते मरणं प्रजानां अन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ॥ या

स्ये मही सस्य विवर्जिना स्यात्परस्परं यांति नृपा विनाशः ॥ ७९

टी० अधिकोण का वायू होय तो प्रजा का मरण अन्न नाश और वृष्टि
नाश यह फल अधिकोण का दक्षिणदिशा का वायू होय तो पृथ्वी धा
न्य करके वर्जित होय और परस्पर राजा लोक नाश को प्राप्त होय यह
फल दक्षिणदिशा का जानना -

वैशाख रोवाति यदा त्रयातो नवारि होय च्छति वारि भूरि ॥ नदा

प्रहोमस्थविन ईतास्या भूदंतिलोकाः सुधया प्रवीडिताः ॥
टी० निर्जन्तिलोका का वायू होय तो पृथ्वी स्वल्प और पृथ्वी धातु करके
बर्जित सुधा करके पीहित होकर रोदन करे ऐसा फल जानना -

आवाहमासे यदि गैर्णिमास्यां सूर्यस्तकाले यदि वा सुनेनितः ॥
प्रगानि रत्नः सुरविनः प्रजास्युते लाभ दुक्ता न सुधा तदा स्यात् ॥
टी० आवाहमास में गैर्णिमा १५ के दिन सूर्योस्तकाल में यदि यदि
का वायु होय तो प्रजासुखी रहे और प्रजोत्तम अन्न इस कर को सुक
हेता फल पश्चिम दिशा का जानना -

वायव्या वा तेजलदा गमः स्यात्पश्चिमाशो पवनो दूता वै ॥ सी
धिनिले धान्यजलाकुलधरा नंदनिलोका भयदुःखवर्जितः ॥
टी० वायुकोण का वायू होय तो जल का आगमन अन्ननाश पृथ्वी
पर्वत वापू कर को सुक ऐसा फल वायुकोण का और उत्तर दिशा का वा
यू होय तो धान्यजल दत्त का पृथ्वी धातु लोक सुखी भयदुःखकर
को बर्जित ऐसा फल उत्तर दिशा का जानना -

एतेन यदि रितुवारि रुरिता धरावगा बोधु दुःखसंयुताः ॥ भ
वीतरसा पुरुष्यरायिनो वाते भिनर्दतिरुप्रः पश्यरं ॥ २३ ॥
टी० ईशान्यकोण का वायू होय तो पृथ्वी जल धूरित गैर्दुग्ध करके प
रित रुद्ध फल पुष्यदायक राजा का परस्पर युद्ध ऐसा फल ईशान्य को
ण का जानना -

रतीपाशुभीमा
केतू रथफलं ॥ एकोन रशानं लेके सहस्रमपरे वि
दुः ॥ एक अश्वहथाभाति ग्राह केनारहो मुनिः ॥ २४ ॥
टी० केतू रथ का विचार कोई आचार्य कहते हैं कि १०१ प्रकार के केतू हैं
कोई हजार प्रकार के कहते हैं परन्तु नारद मुनी कहते हैं की केतू रथ
ही है बहुत प्रकार का भास होता है -

अन्यमतः ॥ यावत्पुननिह श्येत वा कन्याः कलंभ
वेत् ॥ मासेः समाश्रिते पादतूत्सुर्नयः विल ॥ २५ ॥
टी० केतू जितने दिन कन्या पडे उतने मास फल और जितने मास
जल पडे उतने वर्ष पर फल जानना -

अन्यमत ॥ ॥ सुस्त्रिंशोरुचिरः सूर्योऽक्रजुः शुक्रः शु

भप्र दः ॥ विपरीतोऽशुभः केतुस्त्रिंशिरं द्रधनुप्रभः ॥ ३ ॥

टी० केतुकेवर्णकाविचार चिकना शोभायमानमहीनसीपाश्वेत यहशु
भ-इत्सेविपरीतअशुभ-तीनशिखा-द्रधनुषकेऐसीकांती यहअशुभ

मुक्ताकनकसंकाशाः सशिखाः पंचविंशतिः ॥

प्राक्परस्याचनेदृष्टाः सूर्यपुत्राभयप्रदाः ॥ ४ ॥

टी० मौनीसुवर्णऐसावर्णशिखायुक्तऐसे २५सूर्यपुत्रयह पूर्वमेअ
शवापश्चिममे उदयहोयतो भयकारकजानना -

बहुवर्णानिसंकाशाः पंचविंशतिसंख्याकाः ॥

आग्नेयांदिशिसंहृष्टास्तेऽग्निपुत्राभयप्रदाः ॥ ५ ॥

टी० बहुतप्रकारकावर्णऐसे २५अग्निपुत्र-यहअग्निदिशामे उ
दयहोयतो भयकारकजानना -

अन्यमत ॥ ॥ याम्याशाः संस्थिताः रुष्णाः सूर्यावक्र

शिखास्तथा ॥ तावन्तोवैमृत्युसुताः प्रजाः सयकरात्मृताः ६

टी० दक्षिणदिशामेस्थितरुष्णवर्ण-महीन-टेढीशिखाऐसे २५य
मपुत्रइत्येप्रजाकासयऐसाफलजानना -

अन्यमत ॥ ॥ वृताकाराश्चिविशिखाजलतैलसमप्रभाः

॥ ह्यविंशदुर्मितनया दुर्भिसापेशदिग्गताः ॥ ७ ॥

टी० गोलाकार शिखारहित-जल-तैलकेसमानकांति-ऐसे २२भूमि
पुत्रयहईशान्यदिशामे उदयहोयतो दुर्भिसजानना -

अन्यमत ॥ ॥ हिमरश्मिहिरण्याभास्त्रयश्चंद्रसुताः

स्मृताः ॥ उत्तरस्यायदादृष्टास्तदाशुभफलप्रदाः ॥ ८ ॥

टी० श्वेतकिरणसुवर्णकांतिऐसे ३चंद्रपुत्रउत्तरदिशामे उदयहोयतोशुभफल

अन्यमत ॥ ॥ क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिखएकोब्रह्मसुतः (जानना-

स्मृतः ॥ सर्वास्वाशसुसंहृष्टोब्रह्मदंडस्यावहः ॥ ९ ॥

टी० क्रूर-तीनप्रकारकेवर्णतीनशिखाऐसाएकब्रह्मपुत्र-सर्वदिश
मे उदयहोयतो महाप्रलुपकारकजानना -

अन्यमत ॥ ॥ विसर्पाख्यः शुक्रसुताः सुस्त्रिधाः श्वेतता

रकाः॥ चतुराशीतिसंख्याताः पुरोदहभयनः ॥ ११० ॥
टी० विसर्पनाभ-चिकना-श्वेतनखत्र-ऐसे-५४ शुक्र-उदयहृत्
उदयहोयतोभयकारकजानना- -

सुस्तिग्धाविशिखाश्चैवपहि-श्वकनकाज्ज्याः॥

शनेश्वरसुताघोरादुःखदाकेतुनारकाः ॥ १११ ॥

टी० चिकना-शिरारहितऐसे६० कनकनाभ-शनीपुत्रघोरदुःख-
कारककेतुनारकाजानना- -

एकतामसहारूपाः श्वेततारामहाप्रभाः ॥ वि

शिखारहस्योत्तेजुजाः प्रायशोदक्षिणाग्रयाः ॥ ११२ ॥

टी० एकताम-महानरूप-श्वेततारा-महाप्रभा-शिखारहित-
बृहस्पतीकेउ-द्वकाप्रायःदक्षिणदिशामेउदयजानना- -

नामतोधिकचाघोराः पश्चिपंचाधिकास्तृताः॥

सौम्यसुतास्तारकाख्याः सर्वदिक्प्रभवाश्च ॥ ११३ ॥

टी० नाममेअधिकघोरेऐसे६५ उपकेउदयहृत्कारकासर्वदिशामेउदय

नानित्यताम्यन्नसाभ्यश्वेतरूपाभयावहाः॥ (होताहै-

आदित्येश्वकनाथंचपुष्येचमगधाधिपं॥ ११४ ॥

टी० बृहत्स्पष्टनही-रूपश्वेतरूप-भयकारक-पुनर्वसुनक्षत्रपर-
उदयहोयतोपर्वतसम्बन्धीदेशकेराजाकोभयकारक-पुष्यमेउ-
दयहोयतोमगधदेशकेराजाकोभयकारकजानना- -

अशिकेशंचभोजंगेमघापांचालनायकं॥ भगे

भेषाहुनाथंचअर्थम्योयोजुयिन्धकं॥ ११५ ॥

टी० आश्लेषामेउदयहोयतोअश्विदेशकेराजाकोभयकारक-मघा-
मेउदयहोयतोपंचालदेशकेराजाकोभयकारक-पूर्वामेउदय-
होयतोमृगशिरादेशकेराजाकोभयकारक-उज्जयिनी-मेउदयहोयतो
उज्जयिनदेशकेराजाकोभयकारकजानना- -

उरुहोत्रादिकंत्वाप्रेहस्तेदंडयनायकं॥ स्वा

नौकाएमीरयनोजोहिदेनेकीगालाधिपं॥ ११६ ॥

टी० विजयमेउदयहोयतोउरुहोत्रकेराजाकोभयकारक-दृक्मेउदय

होय तो दण्डकदेश के राजा को भयकारक स्वानी मे उदय होय तो
काश्मीर और कांबोज देश के राजा को भयकारक विशाखा मे उदय
होय तो कोशल देश के राजा को भयकारक जानना -

मैत्रेपुंड्रादि नाथं च सार्वभौमपुरंदरे ॥

मूले भद्रादि नाथं च जलदेवै च काशिमं ॥ १७

टी० अनुराधा मे उदय होय तो पुंड्र देश के राजा को भयकारक ज्येष्ठ मे उ
दय होय तो सार्वभौम को भयकारक मूल मे उदय होय तो भद्र देश के रा
जा को भयकारक पूर्वाषाढा मे उदय होय तो काशी के राजा को भयकारक

यौधेमा जैन वैद्यांश्च वैश्वदेवौ शिवं तथा ॥ (जानना)

वासवेयं च नदपंश्रवणैकैक्याधिपं ॥ १८ ॥

टी० उत्तराषाढा मे उदय होय तो यौधदेश मार्जन देश वैद्य देश शिवि द
न देश के राजा को भयकारक जानना और धनिष्ठा मे उदय होय तो पंचन
द देश के राजा को भयकारक और श्रवण मे होय तो कैकेय देश के राजा को

वारुणो सिंहल प्रांते पूर्वभाद्रे च वंगपं ॥ (भयकारक जा
नना)

अहिर्बुध्न्ये नैमिषपं रेवत्यां च किरातपं ॥ १९ ॥

टी० शनतारका मे उदय होय तो सिंहल देश के राजा को भयकारक
पूर्वभाद्रपदा मे उदय होय तो वंग देश के राजा को भयकारक उ
त्तराभाद्रपदा मे उदय होय तो नैमिषारण्य देश के राजा को भयका
रक रेवती मे उदय होय तो किरात देश के राजा को भयकारक जानना

यस्यां दिश्युदयं याति केतुस्त्रानाभियोजयेत् ॥

यतो यतः शिखाया निराजागच्छेन्न तस्ततः ॥ २०

टी० जिसदिशा मे केतू का उदय होय उसदिशा सम्बन्धी तीर्थ मे स्नान
न करना जिसदिशा से जिसदिशा मे केतू का पुच्छ जाय उसदिशा मे
राजाने गमन करना ऐसा जानना -

पंचोत्तरशनं त्वेकैकेशवं प्रवदन्ति च ॥ चतुर्द

शरवैः सुत्रावरुणस्य दशैव तु ॥ २१ ॥ ७ ॥

टी० कोई आचार्य कहने है कि १० प्रकार के केतू है केशव आचार्य भी
कहने है कि १० प्रकार के केतू है उसमे १४ सूर्य पुत्र १० वरुण पुत्र जानना

अग्निपुत्रास्तुस्त्रिंशद्य पस्थनर कौर्त्तिनाः ॥

अष्टादश कुबेरस्यवायोर्विंशतिरीरिताः ॥२३॥

टी० अग्निनीकुमार के १० पुत्र पय के १० पुत्र कुबेर के १० पुत्र वायू के २० पुत्र वा

अग्निने कौर्त्तिनैः तार्यपुत्रायांस्तु द्वयविलः ॥

पेयाजलं यमुचंति हुनिं तच्च स्यादिशेत् ॥२३॥

टी० अग्निन मे कौर्त्तिक मे वृष के पुत्र पय वा दृश्यती के पुत्र उ

दय होय तो वृष्टि न होगी दुर्भिक्षकारक जानना -

चतुष्पदा विनश्यन्ति राजानः कलहप्रियाः ॥

वारुणा उदयं यांति प्रावणे च न भस्यके ॥२४॥

टी० वारुण और भाद्रपद मे वरुण के पुत्र का उदय होय तो नाभ प्र

कार के न भूखानाश और परस्पर राजा लोग का कलह हो जानना -

वृषि वीजलसस्याढ्यलोका आनंदसंयुताः ॥

मार्गमासितया पौषे वृषपुत्रे वन्ति पुत्रकाः ॥२५॥

टी० मार्गशीर्ष मे और पौष मे अग्नी के पुत्र का उदय होय तो पृथ्वी ज

ल अवश्य से पुत्र और लोक बहुत आनंद से पुत्र ही सा जानना -

अग्नि चौरभयं पुनः प्रजानां शं प्रयांति च ॥ वृषि

वीभयसं युक्ता प्राणिनां व्याधिमादिशेत् ॥२६॥

टी० मार्ग मे और फाल्गुन मे चौरभय के पुत्र का उदय होय तो अग्नि भय

और चौरभय और पुनः जानाश और प्रजा का नाश पृथ्वी भय से यु

क्त और सब प्राणि को प्राणी र पी ड है सा जानना -

चैत्रे माधवमासे तु कौर्त्तेर स्वात्मा जाः राश्रिताः ॥

यास्तु दुर्मनसा मे पावतु चारिप्रदानताः ॥२७॥

टी० चैत्र मे और वैशाख मे कुर्त्तेर के पुत्र का उदय होय तो मेघ बहुत

लकी वृष्टि करेगा सा जानना -

धनधान्यपुता पृथ्वी प्रजा आनंद संयुताः ॥ या

पुत्रजाः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठे मासे शुक्लतया ॥२८॥ ॥

टी० ज्येष्ठ मे और आषाढ मे कपूर्व पुत्र का उदय होय तो धनधान्य से

पुत्र वृष्टि वी और सब प्रजा आनंद से पुत्र होयगी सा जानना -

क्रूरकेतुदयफलं ॥ ॥ उद्धूतोवांतिवाताश्चदिशश्चरं
जसावृताः ॥ पतन्तिगिरिभृङ्गाणिनिपतन्तिमहीरुहाः

॥ २९ ॥ चोराग्निजनितापीडाराजानः कलहप्रियाः ॥

टी० जिस वर्ष में क्रूरकेतु का उदय होय उस वर्ष में बहुत वायू चले
गा और दसो दिशा धूर से व्यापार हेंगी और पर्वत के शृंग का पतन हो
गा और बहुत से पेड़ भी गिरेंगे और चोर अग्नि इन से लोक को पीडा हो
गी और राजा लोक पर स्पर कलह माने वैर करेंगे ऐसा जानना इनके तु

(फलम्)

॥ अथ अंगविद्या ॥

देवजेन शुभाशुभं दिगुदितस्यानाह तानीक्षता वाच्यं प्रष्टुनि
जापरांग घटनां चालोक्य कालं धिया ॥ सर्वज्ञो हि चराचरात्मक
तया सौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टा व्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शय
टी० पूर्वादिदिशा पृच्छक का भाषण स्थान पृच्छक ने कुछ (त्यर्थिनां ?
ले आया पदार्थ इसको देखने वाले ज्योतिषी ने पृच्छक अन्य मनुष्य इसके अं
ग की घटना (स्पर्शादिक) यह और काल (वरवत) इसको देख के पृच्छक
को शुभाशुभ कथन करना जिसके कारण यह काल स्थावर जंगम जगत
का आत्मा है इस वास्ते सर्व जानने वाला सर्व देखने वाला सर्व व्यापक है
इस वास्ते प्रश्न करने वाले को स्पर्शादि चेष्टा और भाषण इन कर के शुभाशुभ दे

स्थानं पुष्पमुहासिभूरिफलभृत्सुस्त्रिगुह्यकृत्ति (खावते है)

च्छदा सत्यसिच्युतशस्तसंज्ञिततरुच्छा योपगूढं

समं ॥ देवर्षिद्विजसाधुसिद्धनिलयं सत्पुष्पसस्योसि

तंसत्त्वादुदकनिर्मलत्वजनिताल्हादंच सच्छादुलं २

टी० प्रफुल्लित पुष्प से हास्य करने वाले बहुत फल से युक्त ओरी छाल और प
ताइन से युक्त का कोलू कादि अशुभ पक्षिरहित ऐसे पलास पीपल वर
इत्यादि शुभ नाम के जो वृक्ष उन के छाया से आच्छादित सम (ऊँचा छोटा न
है) देव ऋषि ब्राह्मण साधु सिद्ध इन के रहने के स्थान उत्तम पुष्प ओ
र धान्य इन से युक्त मीठे जल के निर्मलत्व से आनंददायक दूर्वादि हरे तण
से युक्त ऐसा स्थान प्रश्न करने वाले को शुभ होता है ॥ ३॥

द्वित्रिभिन्नरूपितानकंठकिपुष्टरूपाकुटिलैर्न सत्पुनैः ॥

कुर्यात्पुननिधनामभिः शुभश्रीणो बह्वर्णसु मेषिभ्यः
 शमशानभूत्यापतनं चनुष्यं न शमशाने विषयं सदेव यः
 अवस्करागारकपालभस्त्रभिन्निर्ननु वैशुष्कमौरेभोभनं ४
 टी. विन् भिन्न कोटे ने स्वाश कोटेका जका कूट देवा का कादि मु
 पहीसे युक्त येहा डदिनिधनाम कसु क औसलित है नहु तपरी औ
 रत्वचा जिनकी ऐसे वस से युक्त स्थान प्रश्न को सुभन ही ॥२॥ शमशान
 भूत्यापतन देव गृह उवहटा आनंद कारकनही ऊंचा नीचा सर्वकाल
 रेतीसे युक्त अवस्तर (विद्या कतवार) कोइला हाड भस्त्र इनका न
 व्याह धान्य त्वचा (भूती) और शुक्ल नगा इनकर के व्याघ्र ऐसे स्थान प्रश्न का
 प्रव्रजित नयनापितरिपुवंधनसूत के लया सु पचे ॥ (सुभन ही
 कित वरति पीडितै वृत्त वायु पय ॥ श्री करिं कृ ये न सु मं ॥३॥
 टी. तपस्ती नय नापिन कसु वंधनशा लाप शुभनी ॥ बां डाल कपटी सलाही
 गेनी आयु भृह मरा विकर इनकर के युक्त स्थान प्रश्न को सुभन ही ॥३॥
 वायुतरीश आदि श प्रशस्ता वृत्तै वाय्वं यु य मागिर सः ॥
 पूर्वाण्डकाले स्नि सुभन या श्री सा आह्वये प्रशक्तो पराण्डे ॥४॥
 टी. पूर्वोत्तरार्धमान यहा दिशेतर कय म कने गले का पु स होयने सुभे
 वायव्य पश्चिम नैर्ऋती इसतर फ होयतो का सुभ दि न के प्रथम भागमे प्र
 सुभ रात्री जात सा संस्था सय म मे और अपराण्डे ये अ सु भ होता है
 या आदि धागे हि शुभाशुभांग लो क निगिने त दि हा पि वायु
 दृष्टा पुरोवातन ताह ते च पृष्टि यंत पाणि तले य व स्ते ॥५॥
 टी. यवा प्रकरण मे जो शुभाशुभांग क निगिने कय न दि या श्री श्री प्रम स
 म पने देखना और अपने ओगे का पहारी और कोर्दे हे आयाव कार्य और म
 थ के न बाले मे हाथ मे अथवा कसु मे होय सो पता ये हे सबे शुभाशुभांग द ना ॥
 अथो गान्धर्वोष्ठस्तनवृषणकादं चरु शानाभुजौ ह स्तौ मंजो
 कच गलन त्वां गुपु मपि पत् ॥ सराख कलां स यवण मु र
 संगीति पुरुषे स्त्रियां भूना सा लिङ्ग मंजु र्द सु लेखा गुलि
 च यं ॥ जी जिह्वा यी नापि हि के पाणिं युग्म जं वै मभिः कणं
 शली कजाती ॥ वज्रं दंजु जान्व सिध पाद र्वह तान्त्र री

मेहनोरस्त्रिकंच॥९॥नपुंसकारव्यंचशिरोललाटं
आश्वत्थसंज्ञैरपरैश्चिरेण॥सिद्धिर्भवेज्जातुनपुं
सकैर्नोरुससतैर्भग्नकृशैश्चपूर्वैः॥१०॥ ॥ ॥

टी० जंघा-ओष्ठ-स्तन-वृषण-पाद-दंत-भुजहस्त-गालकेश-कण्ठ-न
ख-हस्तपादाङ्गुष्ठ-बगल-स्कंध-कान-गुद-सर्वाङ्गकीसंधी-शंख-य
हसर्व-अवयव-पुरुषसंज्ञकहै-भौ-नासिका-चून्तर-बली-उदरकी
त्रिवली-कमर-हस्तादिककीउत्तमरेषा-अङ्गुलिसमूह॥१०॥ जिह्वा
गरदन-पेंडुरी-दूनोरुद्धी-पोटरी-नाभी-कानकीपाली-ककाटी-ग
रदनकासीधभाग-यहअवयवस्त्रीसंज्ञक-मुख-पृष्ठ-जत्रु-बाहु
औरकंठइनकीसंधी-हसुली-केहुनीहाड-पार्श्व-पसुली-हृद
य-तालु-नेत्र-लिंग-वक्षस्थल-त्रिक-पीठकेदंडकेनीचेमिलाजो
तीनहाडसो॥९॥शिर-ललाट-यहअवयवनपुंसकसंज्ञक-आ
द्यकीहयेपुरुषसंज्ञक-अवयवसेशीघ्रकार्यसिद्धिहोतीहै-अप
रक-स्त्रीसंज्ञकसेबहुनकालसेकार्यसिद्धि-नपुंसकसेसिद्धिहो
तीनही-औररुस-क्षत-भग्न-कृश-ऐसेपुरुषसंज्ञकऔरस्त्रीसंज्ञकअ
वयवहोयतोसिद्धिहोतीनही-यहफलस्पर्शादिककाजानना-

स्पृष्टेवाचालितेवापिपादाङ्गुष्ठेस्मिरुग्भवेत्॥

अङ्गुल्यांदुहितुःशोकंशिरोघातेनृणाङ्गयं॥११॥

टी० पांवकेअंगूठेकोस्पर्शकरेवाहिलावेतोपृच्छककोनेत्ररोगहो
ताहै-अङ्गुलीकोस्पर्शकरकेपूछेनोकन्याकानाशहोताहै-यस्त
ककोताडनकरकेपूछेनोराजासेपृच्छककोभयहोताहै-॥११॥

विप्रयोगपुरसिस्वगात्रतःकर्पटाहतिरनर्थदाभवेत्॥

स्यात्प्रियाग्निरभिगृह्यकर्पटंपृच्छतश्चरणपादयोजितुः१२

टी० पृच्छकहृदयमेंस्पर्शकरकेप्रश्नकरेतोकोईकाभीविशोगहोताहै
स्वशरीरसेवस्त्रछोडेतोअनर्थहोताहै-वस्त्रलेकेगोडपरगोडरखके
पृच्छकप्रश्नकरेतोप्रियवस्तुकीप्राप्तिहोगीऐसाकहना॥१२॥ ॥ ॥

पादाङ्गुष्ठेनविलिखेद्भूमिंसेत्रेत्यचिंतया॥

हस्तेनपादौकंडूयेनस्यदासीमयाचसा॥१३॥ +

टी० पदं गुह्यं भूमी परे पानि काले नो बहुरूप फलं नो योत्यन वि
ता कहना हस्तने नो व खजवावे नो उ स्को दसी कुत चिंता कहना ॥१३॥

ताल भूर्ज पर दर्शनं शुक्ल चित्त पैतृ चतु पाप्मि भस्मना ॥

व्याधिराश्रयति रज्जु जाल कंवल्लव संव समवेक्ष्य वधन ॥१४॥

टी० तादृषत्र और भूर्ज पत्र इनका दर्शन होय तो पृच्छक को रस्स की चिं
ता कहना केश भूसा हाड भस्म इनका दर्शन होय तो व्याधी होली है उ
री जाल बल्लव यह प्रश्न काल मे दर्शन होय तो वधन होता है ॥१४॥

पिप्पली मरिच धुठि चारि देग प्रकुष्ठ वसना मृजी (कै॥

गंध पांसि शत पुषपाव देतु च्छतस्त गर केण चित्तन ॥१५॥

स्त्री पुरुष दोष पीडित सर्वा धनु ता र्थ धान्य तनयानां ॥

दिचतुष्पद सितो नां चिना शतः कीर्तिर्नैर्दृष्टैः ॥१६॥ ॥

टी० प्रश्न समय मे पिपर देखे तो सदोष स्त्री विषयक चिंता मरिच का
पिपर बादे सदोष पुरुष वि० चिंता पिपो वदे व्याधिन बाधुत वि० चिंता
नागर मोषादे सर्वनाश वि० चिंता लोभ दे मार्गनाश वि० चिंता कुटू
ब कुल जन दे पुत्र नाश वि० चिंता वस्त्र दे अर्थ नाश वि० चिंता च्छत
धान्य नाश कुत चिंता जीरा दे खे नो पुत्र नाश कुत चिंता जटा मासि देखे तो
दूषा फनाश कुत चिंता शन पुष्पा (सौ फ) दे चतुष्पद नाश कुत चिंता
तगर दे भूमि नाश कुत चिंता यह चिंता प्रश्न करेवाले को हरे सा कहना

न्यग्रो धम धुक्तिं दुकनं बुद्ध साधवद रिजानि फलैः ॥ १७॥

धन कनक पुरुष लोहां शुक्ल रूपा दुंबरा निरपिकर गैः ॥१८॥

टी० प्रश्न करने वाले के हाथ मे बड का फल होय तो धन प्राप्ति यौहा का फल
होय तो सुवर्ण प्राप्ति ने दू का फल होय तो पुरुष प्राप्ति जासुन का फल हो
य तो लोह प्राप्ति पांकर का फल होय तो वस्त्र प्राप्ति आष का फल होय
तो रौप्य प्राप्ति जाय फल होय नो साध प्राप्ति होगी दे सा कहना ॥१८॥

धान्य परिपूर्णा पात्रं कुंभः पूर्णः कुटुंब वृद्धि करौ ॥

गज गोशुनो पुरीषं धन युवति सुहृदि नाश कर ॥१९॥

टी० प्रश्न करने वाले के हाथ मे धान्य से पूरित पात्र वा जल पूर्ण कुंभ होय तो
कुटुंब वृद्धि होती दोनो ही हाथो की विधा होय तो धन नाश गौ की पिष्ट हो

यतोस्त्रियों का व्यभिचार कुत्ते की विष्टा होय तो मित्रनाश यह होना है ऐसा कहना १८

पशुहस्तिमहिषपंकजरजतव्याघ्रैर्लभेत सद्दृष्टेः॥

अविधननिवसनमलयजकौशेयाभरणसंघातं॥१९॥

टी० प्रश्नकालमे पशुनजरपडे तो कंबलकालाभ हाथी नजरपडे तो धनलाभ महिषन० वस्त्रलाभ कमलन० मलयज (चंदन) लाभ सौप्यन० कौशेयवस्त्र (पीतांबर) लाभ व्याघ्रनजरपडे तो अलंकारलाभ यह प्रश्न करने वाले को मिलेगा ऐसा कहना ॥१९॥ ॥

पृच्छावृद्धश्रावकसुपरिव्राट्दर्शनेनृभिर्विहिता॥

मित्रद्युतार्थभवागणिकानृपसूक्तिकार्यकृता॥२०॥

टी० प्रश्नकालमे वृद्धश्रावक (कापालिक जैन मती) इनका दर्शन होय तो मित्रार्थवाद्युतार्थपुरुषने प्रश्न किया उन्नमसंन्यासीका दर्शन होय तो वेश्या राजा सूक्तिका इस विषयमे प्रश्न किया ऐसा कहना २०

शाक्योपाध्यायार्हतनिर्ग्रंथनिमित्तनिगमकैवर्तैः॥

चौरचमूपतिवणिजांदासीयोधापणस्थवध्यानां॥२१॥

टी० शाक्य (बौद्धमतस्थापनकर्ता) नजरपडे तो चौरविषयक प्रश्न उसाध्यायनजर सेनापतिवि० अर्हत (बौद्धमतानुसारी) न० व्यापारवि० निर्ग्रंथ (दिगंबरसाधु) न० दासीवि० निमित्त (दैवज्ञ ज्योतिषी) न० योद्धावि० निगम (व्यापारी का समूह काफला) न० आपणस्थ कु ---

लपरम्परागतशिल्पज्ञकिंवा बजारमे रहनेवाला विषयक० जो लहान० वध्यप्राणि विषयक प्रश्न है ऐसा कहना ॥२१॥

तापसे शौडिके दृष्टे प्रोषितः पशुपालनं॥

हृत्ततंपृच्छकस्य स्यादुच्छरुतौ विपन्नता॥२२॥

टी० प्रश्न समयमे तपस्वी नजरपडे तो कोई प्रवासमे गया उसकी चिंता प्रश्न करने वाले के मनमे है मद्यपी न० पशुपालन कृत चिंता उच्छरुति (खेतमे सेकाटने के बाद अन्न बीन ल्यावे सो) न० विपत्ति विषयक चिंता पृच्छक के मनमे है ऐसा कहना ॥२२॥ ॥

इच्छामि प्रष्टुं भणपश्यत्वार्थः समादिशेत्सुक्ते॥

संयोगकुटुंबोत्थालाभैश्वर्योद्गता चिंता॥२३॥ ॥

टी० प्रश्न करने को इच्छा करते हैं ऐसा प्रश्नकर्ता भाषण करने तो संयोग
(भेद) विषयक चिन्ता भण (कहो) ऐसा बोले तो कुटुंबोत्पन्न चिन्ता
पश्यतु आर्यः (सत्वरूप देखे) ऐसा बोले तो लाभोत्पन्न चिन्ता समा
दिश (आशा करो) ऐसा बोले तो ऐश्वर्योत्पन्न चिन्ता प्रश्न करने वा
ले के मन में है ऐसा कहना ॥२२॥

निर्दिशेति गदिते जया भजा प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद ॥

आयुः सर्वजनमध्यगत्य यादृश्यतामिति नूनं धुचौरजा ॥२३॥

टी० निर्दिश (स्पष्ट कहो) ऐसा इच्छा कलापण करने तो जया भजा मार्ग
विषयक चिन्ता प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद (देख के हमार चिन्तित
कहो) ऐसा भा० धुविषयक चिन्ता सर्वजनमध्यगत देखने वाले
को आयुस्त्वयादृश्यता (शीघ्रतुम देखो) ऐसा पूछे तो चौरविषयक
चिन्ता प्रश्न करने वाले को है ऐसा कहना ॥२३॥

अंतस्थेन स्वजन उदितो वाह्यजे वाह्य एवं पादां गुह्यां

गुह्यकलुषादसदासीजनः स्यात् ॥ जंघेनेभ्यो भ

वति भगिनीनाभितो हृत्तनभायी पाण्यं गुह्यां गुह्यं

नयकृतस्पर्शनं पुनः कन्ये ॥२४॥ आतःजठरे पृष्ठिगुह्यं

दक्षिणवामयो ॥ बाहू आतायनस्य स्त्री स्पृष्टे वचौरजादृशत रं

टी० प्रश्नसकथने प्रश्नकर्ता अंतस्थ (गद) अंगको स्पर्शी करे तो स्वत

नचौरकथनीकथा वाह्य अंगमें स्पर्शी करे तो बाह्यका चौर कथन

रना पादां गुह्यं सार्शमे दास० पादां गुह्यं स्पर्शमे दासी० जंघास्पर्श

मे सेवक० नाभिस्पर्शमे भगिनी० हृत्तनस्पर्शमे स्वस्त्री० हस्तां गुह्यं

स्पर्शमे पुनः० हस्तां गुह्यं स्पर्शमे स्वकन्या ॥२४॥ उदरस्पर्शमे मान

शिवारस्य० गुरु० दक्षिणबाहुस्य० आतः बाहुस्य० आतः पत्नी

हस्येति से स्पर्शपर से चौरकथन करना ॥२४॥

अतरंगमवमुच्या वाह्यगसार्शं नपदिकरोति पृच्छकः ॥

लेपवृत्रशकृतस्य जन्मधः पातप्रेतकरतरुस्य वस्तुनर

॥ भृशमवनामिताग परिमोहनतोप्यश्वपानजधनरिते

आहमपलोकानुचौरकथनं ॥ हतप्रतिपत्तस्तस्य तद्विन्द

विभग्नगतोन्मुषितमृनाद्यनिष्टरवतोलभतेनहतं॥२८॥

टी० प्रश्नकर्ता अंतरंग (गुप्त) अवयव छोड़के बाह्य अवयव को प्रश्न कालमें स्पर्श करे अथवा श्लेष्मा (कफ) मूत्र विष्टा यह नीचे छोड़े वा हाथमें की कोई वस्तु नीचे गिरावे॥२७॥ अंगपरिमोटन कहिये स रीरमोडे हाडतोडे लोकने धारण किया खाली पात्र वा चोर इस्को देखे वाले गया गिरा व्रण भूले टंगरा नूटा गया उखाड़ कैले गये मरा यह शब्द किंवा ऐसे अर्थ के तीनों लिंगमें अनिष्ट शब्द प्रश्न करनेवाले को सुनाई पड़े तो नष्ट वस्तु मिलेगी नही॥२८॥

निगदितमिदं यत्तत्सर्वं तुषास्थिविषादिकैः सह मृतिकरं

पीडा नानां समरुदितस्तुतैः॥ अवयवमपि स्पृष्ट्वा तः स्थं दृढं

मरुदाहरेदतिबहुतदा भुत्कानं संस्थितः सुहितो वदेत्॥२९॥

टी० २७।२८ श्लोकमें नष्ट वस्तु विषे कथन किया सो सर्व तुष (धान्य का भूसा) हाड विष रोदन छीक इनके सहित होय तो रोगी को (रोग विषयक प्रश्न होय तो) मृत्यु कारक होता है अंतः स्थ स्थिर अवयव को स्पर्श करके वायु वाहर निकालते रहते प्रश्न करे तो प्रश्नकर्ता बहुत अन्धखाय के तृप्त होय के प्रश्न करता है ऐसा कहना २९ ललाटस्पर्शनाच्छूकदर्शनाच्छूलिजौदनं॥

उरुस्पर्शात्यष्टिकान् ग्रीवास्पर्शंचयावक॥३०॥

टी० प्रश्नकर्ता ललाटस्पर्श करे किंवा शुक (सुगा) धान्य देखेतो भात भक्षण करके प्रश्न करता है हृदय स्पर्श करे तो साठी चावल का अन्न और कंठ में स्पर्श करे तो पवान्न भक्षण किया ऐसा कहना -॥३०॥

कुक्षिकुचजठरजानुस्पर्शमाषाः पयस्तिलयवाग्वः॥

आस्वादयत्तत्रौष्ठौलिहतो मधुरं संज्ञेयम्॥३१॥

टी० कुक्षिस्तन उदर जानु इनको स्पर्श करे तो क्रमसे माष दुग्ध तिल यवागू (भात की कांजी) यह भक्षण किया और आस्वादन (मीठा सलोना) करे वा चांटे तो मीठारस प्रश्न करनेवाले ने भक्षण किया

विस्पृक्के स्फोटयेज्जिह्वामास्तेव च विकूणयेत् (ऐसा कहना)

॥ कटुतिक्तकषायोष्णोर्हिक्केतुष्वेव च संधये॥३२॥

टी० जीभचलावेतो विलुक्क पदादीरवावा हूटेटा करेना स्व
द्वस्वावा उचकी आवेतो निरु-कडुआ और कषाव पदार्थस्वावा
शुकेतो संधववा तारापदार्थ खायाहें हेलाकडना -॥३२॥

स्वेषात्यागे मुष्कतिनंतदल्पश्रुत्या कव्याद्रे
स्ववा मांसमिथा ॥ भूगण्डौ हृत्सर्शं नेशाकुनेन
दुक्ततेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम ॥३३॥ ४ ॥ ३३ ॥

टी० स्वर्गकफत्यागकरेतो-शुष्क और कडु ऐसा अल्प भक्षणकिया
मांस भक्षण करनेवाले प्राणीको दूतिवा श्रवण करनेतो मांसपुक्त न
क्षणकिया मौआरु ओह दूतको स्वर्गकरेतो पक्षिमांस दूतक
विभक्षणकिया रेका पहनिमित्त (चिन्ह) कहना ॥३३॥

मूर्धगसकेशहनुशंखकर्णजयं नत्ति च स्पृहा ॥
मजेमहिषमेषशूकरगोशशमृगमांसपुष्पं ॥३४॥

टी० मस्तक शल-केश हनु-शंख-कान-पोटरी-बत्ती-नाभीके-मो
चेकाभास-गर्भाशय इनको स्पर्शकरेतो कबसे मज-महिष-म
हा-सहस्र-गौ-खरगोस-मृग-इनके मांससे पुक्त जेजन दूतकनेहि
दुष्टे श्रुने प्य शकुने गो धामत्यागिषं रदेदुक्तं (यऐसा कहना
गर्भिणीगर्भस्य च निषत नये वं प्रकल्पयेत्प्रे ॥३५॥

टी० दुग्धकूनहेसेवासुनेतो प्रक्षकानेवालेने गोहवा मतलब इनका मांस
मज्जाकिया ऐसा कहना गर्भिणीके प्रश्रुतिपत्रके बीऐसेही मतलबक
ना-दुग्धकून दूधपुतलेयतो गर्भपातहोना ऐसा प्रच्छलको कहना ॥३५॥

संस्त्रीनपुंसका त्वेदद्वेनुमिते पुरुषस्थिते स्पृष्टे ॥
तज्जन्यमवनिषानात्तपुष्पफलदृशेनेनपुष्पं ॥३६॥

टी० गर्भप्रश्नसमयमें पुरुषद्वय-अनुमित-पुरुषस्थित-का स्पर्श होय
तो पुरुषजन्य-स्त्रीदृष्टादिहोयतो स्त्रीजन्य-नपुंसकदृष्टादिहोय
तो नपुंसकजन्यहोना ऐसा प्रश्नकर्ताको कहना मद्य-अन्न-पुष्प-
फलपह प्रश्नसमयमें होयतो तुलसेप्रसूतिलोनीऐसा कहना गर्भ
अपुष्टपुष्टद्वयं प्रतिपाद्यं द्वापृच्छेदं भवेत्तदा तदाख्यातं ॥

टी० पुरुषजन्यहोईया तब प्रश्नसे नपुंसकजात था व्याख्यात जे ॥३६॥

टी० स्त्री० अंगुष्ठ करके० भों अथवा उदर वा अंगुली इस्को स्पर्श करके प्र
श्र करे तो गर्भ के विषे प्रश्र ऐसा कहना० अथवा मधु० घृत० पुरुष नाम के
उत्तम फल सुवर्ण० रत्न० मूंगा० माता० धात्री (दायी) पुत्र यह आगे होय
और प्रश्र करे तो गर्भ के विषे प्रश्र ऐसा कहना० -

गर्भयुता जठरे कर गे स्याद्दुष्ट निमित्त वशात्तदुदासः॥

कर्षति तज्जठरं यदि पीठोत्तौ डनतः कर गे च करेपि ३८

टी० गर्भयुक्त स्त्री उदर पर हाथ रख के प्रश्र करे और उस काल मे छीक इत्यादि
दुर्निमित्त होय तो गर्भ पात होगा ऐसा कहना० अथवा आसन काम देन करे उदर ख
जवावे किंवा हाथ से हाथ धर के प्रश्र करे तो गर्भ पात होगा ऐसा कहना॥ ३८

घ्राणाद्यादक्षिणे द्वारे स्पृष्टे मासोत्तरं वदेत्॥

वामे द्वौ कर्ण एवं माद्विचतुर्ध्रः श्रुतिस्तने॥ ३९॥

टी० नाक के दहिने तरफ स्पर्श करके स्त्री० गर्भ के विषे प्रश्र करे तो एक
महिने से गर्भ ग्रहण होगा० बाए तरफ स्पर्श करे तो दो वर्ष से० बाए कान
को स्पर्श करे तो दो वर्ष से० दहिने कान को स्प० दो महिने से० स्नान का
स्पर्श करे तो चार महिने से गर्भ धारण होगा ऐसा कहना० - ॥ ३९ ॥

वेणी मूलैः त्रीन्सुतान्कन्यके द्वे कर्णे पुत्रान्यंच हस्ते वयंच॥

अंगुष्ठान्ते पंच कंचानुपूर्व्या पादांगुष्ठे पार्श्वे युग्मेपि कन्यां ४०

टी० स्त्री० वेणी मूल को स्पर्श करके प्रश्र करे तो तीन पुत्र और दो कन्या
होगी० कान को स्पर्श० पांच पुत्र० हाथ से हाथ को स्प० तीन पुत्र० हाथ के क
निष्ठिका को स्प० १ पुत्र० अनामिका को स्प० २ पुत्र० मध्य को स्पर्श० ३
पुत्र० तर्जनी स्पर्श करे तो ४ पुत्र० अंगुष्ठ को स्प० ५ पुत्र होंगे० पाँव का
अंगुष्ठ० दूनों एडी इन को स्पर्श करे तो १ कन्या होगी ऐसा कहना॥ ४०

सव्या सव्यो रुसं स्पर्शं सूते कन्या सुतद्वयं॥

स्पृष्टे ललाट मध्यां ते चतुस्त्रितनया भवेत्॥ ४१॥

टी० बाए वा दहिने जंघा को स्पर्श करे तो दो कन्या और दो पुत्र होंगे
ललाट के मध्य मे स्पर्श करे तो ४ पुत्र० ललाट के अंत मे स्पर्श करे तो
तीन पुत्र होंगे ऐसा कहना० ॥ ४१ ॥

शिरो ललार भ्रू कर्ण गंड हनुर दागलं॥ सव्या पस

अथ स्वयं भवन्तीति बुक्ता ह ॥ ४५ ॥ उरः कुन्दादि
षा मध्यसंध्यं ह तारु मेयं ज उरं च दिश्व ॥ किं कनासु
संभूत पुग कजा नू जं चेष्ट फ हा विनिरुत्तिका दो ॥ ४६ ॥

टी० प्रथम मध्यमे गिणी ली शिरदि अत्र व को को स्पर्श करे तो वरसु
कनिकादि नम्रमे प्रसूत होती है सा जानना कि स्पर्श करे तो कनिका
हलार स्वोदिनी भुक्तो रस भुगिरि मणी स्वरी आर्त्ता मारस
उन्नमसु तवस्य सुष्य दंतस्य आम्हेषा कंठ मया दहिना खंडा
पूर्वा बाबाखंडा उन्नरा हाथ हस्त निबुक् ओठ के नीचे का भाग वि
द्या कंठ की नली स्वाती ॥ ४२ ॥ उरः विधाखा दहिना स्तन अनु राधा
का एस्तन म्योहा हृदय मूल दक्षिणा पार्श्व पूर्वा पादा वाम पार्श्व
पल्लवा पादा उदर प्रवण कटि धविष्ठा चूत दुधौ गुद दस्की संधी
बायोनि शततारका दहिनी जंघा पूर्वा भाग वाम जंघा उन्नरा मा
ठेडगा रेवती पेडु रो अश्विनी पाद स्पर्श भरणी इस प्रकार से जानना

रतिनिगदिन येत सा जंघा शैल कप्रकटमभिधाना ४३

हं रीपयशार प्राणिसम्यक् मयिपुल मतिरुदारो वेत्ति य

स रं मेव न्यत्यतिजननाभिः पुन्यनेवौ सदैव ॥ ४४ ॥

टी० अष्टम कर के ब हुन पगस्य देख के इच्छित अनोरथ की प्राप्ती हो परस
कालेशरीर स्पर्श लक्षण स्पष्ट कयन कि नाय ह सर्व बहुल बुद्धिमान और
उदार (निर्दोषी) ऐसा जो ज्योतिषी जानता है सो राजा को और बहुत
लोक को सर्व काल पूज्य होता है ॥ ४४ ॥ ॥ इति अंशविद्या ॥ ॥ ॥

यपं मूल बुनाव ने का प्रकार ॥

शैल ज्योतिष स्वचंद्र आगुण्यो बुक्ता उद्विष्टक ॥ अष्टाश्या भजे
सुधांजनि वासर दष्ट बुक्ता ॥ तथैव सप्तवारि स्यु रं स्या सप्तशिविने

टी० प्रथम वर्ष का वाग दिष्ट बुक्ता बने का प्रकार शैल ज्योतिष स्वचंद्र
२१ ॥ १० ॥ ७ संगताब्द की पुग देना ॥ १० ॥ १० ॥ ७ से भाग लेना जो लब्धी भागे
सो वारादि उस्मेज न्य हास का वार और दृष्ट से प्रल जो ह देना और
जर स्थान में ७ से शेषित करना तो वर्ष का वार और दृष्ट से प्रल स्थ
होने दे उदाहरण सरत १९०८ शके १०७१ अनाह १०२ ओम वार ५१

ज्योतिषसार २३९

पल ५४ मृगशिर नक्षत्र घ० ५४१०६ वृद्धि योग घ० २ पल २ सूर्योदयसे
 गत घटी ५५ पल ३५ यह कि सी का जन्म काल इस्का वर्ष प्रवेश साधन
 यह शके १७७१ इस्को वर्तमान शक १८०२ इस्मे घटाया दिया तो शेष ३१
 यह गताब्द इस्को १००० से गुण दिया तो यह ३१२१७ भया इस्को ८००
 सै से भाग लेने से फल वारादि आया सो यह ३९११९६३० इस्मे जन्म वा
 रादि युक्त किया ३१५५३५ तो यह फल ४३५६५१३० भया इस्को वा
 र स्थान मे ७ से शेषित किया तो ०५५६५१३० यह सावयव वर्ष प्रवेश
 भया शानि वार दृष्ट ५६५१ इस प्रकार से वर्ष फल का इष्ट बनावना स्त ३३।
 यदा सूर्यो जन्म समो तदा वर्ष प्रवेशनं ॥ ११॥

टी० जिस --- दिन मे जन्म काल के सूर्य समान सूर्य जिस दिन आ
 वेगा उस दिन यह पूर्वोक्त वारादि दृष्ट काल जानना तिथी मे कही १
 हीन करना अथवा युक्त करना

तिथ्यानयनमाह ॥ शिव ११ प्रोब्दोऽब्द भू पां १६ शाब्दो जन्म
 तिथि संयुतः ॥ खाप्रि ३० तष्टः शेष तुल्य तिथाब्द प्रवेशनं ॥ २
 टी० वर्ष की तिथी बनावने का प्रकार गताब्द को ११ से गुण के उसमे गता
 ब्द का षोडशांश युक्त करना और जन्म तिथी युक्त करना नंतर ३० से शेष
 षित करना जो शेष रहे उसके तुल्य तिथी अब्द प्रवेश मे जानना उदा
 हरण गताब्द ३१ इस्को ११ से गुणा तो यह ३४१ इस्मे गताब्द का षोड
 शांश २ युक्त किया तो यह ३४३ भया इस्मे जन्म तिथी युक्त किया तो य
 ह ३७० भया इस्को ३० से शेषित किया तो शेष १० यह अब्द प्रवेश
 की तिथी इस प्रकार से अब्द प्रवेश तिथी बनावना ॥ २॥

वर्ष प्रवेश समये नक्षत्रयोगानयनमाह ।

रुद्र प्रोब्दः स्वभूपांश १६ युग्मीनः स्वदिगंश १० कैः ॥

जन्मोदयोग युक्त तष्टो २७ भैः स्यातां भयुतीक मातृ ॥ ३ ॥

टी० गताब्द को ११ से गुण के उसका षोडशांश उसी मे युक्त करना और
 उसमे जन्म नक्षत्र युक्त करना २७ से शेषित करना तो अब्द प्रवेश का न
 सत्र होता है ११ से गुणित जो गताब्द उसका दश मांश उसी मे ही नक
 ना और उसमे जन्म योग युक्त कर के २७ से शेषित करना तो वर्ष प्रवेश

समंका योग होता है ॥ उदाहरण- गताब्द ११ हस्को १० से गुणा तो ११०
 यह हस्को दसीका १० दशांश ११ युक्त कि पातो १२१ यह हस्को जन्म
 सत्र ६ युक्त किया तो यह १२६ हस्को २० से शेषित किया तो शेष १०
 यह वर्ष प्रवेश नक्षत्र मया गताब्द ११ हस्को ११ से गुणा तो १२१ यह
 स्कादशांश १० हस्को मेहीन किया तो यह १०० मया हस्को जन्म १०० युक्त
 किया तो ११० यह हस्को २० से शेषित किया तो शेष ११ यह वर्ष प्रवेश
 शशो गमना दस प्रकार है नक्षत्र और योग दशांश ३

श्रीसंवत् १९१० शके १९०९ आषाढ शुक्ल १० मंदवा सरे पं. २३

पं. २६ विशाखानक्षत्र पं. २४ पं. ४५ शुभकोप पं. २७ पं. ७८ नक्ष

योदयादिष्टमं घट्यः ५६ पं. ५९ श्रीमतां दर्ब नवेशः ३२ गताब्द ३९

ग्रहचालन ॥ स्वेष्टकालोपहाये स्या संक्षिप्तशोधये

द्वनम् ॥ पंक्तिश्चैव पदाः प्रे स्यादिष्टं यशोधये दृष्टम् ॥ ॥ ॥

टी० चालन बनावने का प्रकार ॥ स्वेष्टकाल पंचांग स्या पंक्ती से आगे हो
 प तो पंक्ती मे हस्को काल शोधन करना तो चालन बन होना है पंक्ती
 हस्को से आगे हो प तो हस्को पंक्ती शोधन करना तो चालन बन हो
 ता है ॥ इस रीति से चालन करना अथवा हस्को से प्रकार से करना ॥ ४ ॥

ग्रहसाधनमाह ॥ ॥ गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निर्णीतव्य

इह ता ॥ लब्धमंशादिकं शोधयेत् ज्योतिष्यो भवेद्गृह ॥ ५ ॥

टी० गतदिन से अथवा आगत दिन से स्वर्यादि ग्रहां की गती गुणा देना
 और ६० से भाग देना लब्धि अंश दिजो आवे सो गत दिन का होय ॥ यह
 प्रक्रम करना और आगत दिन का होय तो युक्त करना तो यह स्पष्ट हो
 है ॥ उदाहरण- गतदिन १ हस्को पूर्व की २५ ॥ १० गति गुणा तो यह २५०
 हस्को ६० से भाग दिया तो ४ ॥ १५ ॥ यह पंक्ति स्वर्या से ३ भाग ५ भाग
 न किया तो ३३ ॥ १५ ॥ यह स्वर्या स्वर्य भया हस्को प्रकार से भोजादि
 हवन बनावना ॥ ५ ॥ ॥ भयातम भोगदनावने की रीति ॥ ॥

गतदिनान्तरांतरात्पुनराह- सपौदयादिष्टं प्रतीष्टं पुनः

अधुना येन निजं गतिनाः पुनः सुपुक्ता अभिगताः

टी० गतनक्षत्र की धली १० पुनः का ग- दर्ब मे स पौदय से जो हस्को प्रती

यसोयुक्तकरना तो भयात होता है ६० मेषु हकिया जो नक्षत्र उस्तेवर्त
मानन सत्र की घड़ी युक्त करना तो भभोग होता है ३५।४२ यह ६० मेषु हकिया तो ३५।१५ यह इस्ते सूरी द
यसे इष्ट घटी ५६।५१ युक्त किया तो यह ३२।०६ भयात भया ६० मेषु
हकिया जो नक्षत्र ३५।१५ इस्तेवर्त मानन सत्र घड़ी युक्त किया तो ५०
।८ यह भभोग भया इस प्रकार से भयात और भभोग करना ॥६॥

वर्ष प्रवेशे चन्द्र साधन माह

रव वट ग्रं भयातं भभोगो हृतं सत्त्वतर्क ६० ध्रुविष्णोषु

युक्तं द्विनिघ्नं नवांशं शशी भाग पूर्वस्तु भुक्तिः खखा

आष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥७॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी० भयात को ६० से गुण के भभोग ६० से गुणना पुनः भयात को ६० से
गुणना जो लब्धी आवे उस्ते अश्विन्यादिगतन सत्र नक्षत्रों संख्या हो
यसो ६० से गुणना पूर्व लब्धी में युक्त करना नंतर उस्को द्विगुणित
करके ९ से भाग लेना लब्धी अंशदि अंशस्थान में ३० से भाग लेना
तो तात्कालिक राश्यादि चंद्र होता है ॥ उदाहरण वर्ष प्रवेश समय
में अत्र राधान सत्र की पूर्व में घड़ी ३५।१५ यह इष्ट घटी में ५६।५१ यु
क्त किया तो अत्र राधान सत्र की युक्त घड़ी ३५।६ यह भई यह ६० से
गुणा तो १९२६ यह भया नक्षत्र का भोग ५७।८ पुनः भाज्य १९२६
यह इस्को ६० से गुणा ११५५६ नंतर भाजक को ६० से गुणा तो ३४२८
यह इस्से भाग लेने से लब्धी ३३।४२।३८ अश्विन्यादिगतन सत्र नक्ष
त्र संख्या १६ इस्को ६० से गुण जो ९६ यह पूर्व लब्धी में ३३।४२।२८ युक्त किया तो
९९३।४२।३८ इस्को द्विगुणित किया १९८७।२५।१६ इस्को ९ से भाग
दिया तो अंशदि लब्धी २२०।४९।२८ अंशस्थान में ३० से भाग लिया
तो तात्कालिक राश्यादि चंद्र ७।१०।४९।२८ भया अथ गति ४८०००
इस्को ६० से गुणा तो २८८०००० यह भया इस्ते भभोग से भाग लिया
तो ८४०।८ यह चंद्र गति भई इस प्रकार से चंद्र और चंद्र गति स्पष्ट
करना ॥७॥

वर्षकासीनग्रहसंगतिः

लग्नसाधन

र	म	म	सु	र	सु	र	म	के
१	७	४	३	११	६	८	३	३
३	१०	२	२०	२०	६	१५	१५	१५
८	४९	३१	५३	४९	३३	१६	१६	१६
५६	२०	१	५७	७	७	५५	५५	५५
१६	४७	३७	१२	३	११	९	९	९
५०	८	४०	३०	४०	२५	१९	१९	१९

समागणकरन्दरुशानु
निष्प्रखचन्द्रवत्तोजनि
लग्नपुनःभतहोदिनेशैः
किलवर्षलघुसामान्यतो
मान्यतैर्निरुक्तम् ॥५॥

टी० पूर्वमेकलग्नसाधनकथित है उस प्रकार से करना अथवा सूर्यके
दिनासामान्य लग्नसाधन करना गताब्द को ३१ से गुणा के १० से भाग
लेना उसी जन्मलग्नपुनःकरण १२ से शेषित करके जो शेष रहे सो सा
मान्यरीति से वर्षलग्न जानना उदाहरण। समागण ३१ इसको ३१ से
गुणा तो ९६१ यह इसके १० से भाग लिया तो ९६ यह इसके जन्मलग्नपु
नः कियानो ९९ यह इसको १२ से शेषित किया तो ३ यह सामान्य वर्षप्र
वेश लग्न भवा ॥८॥

जन्म

वर्ष

३३	४	३५	१५
१५	३	१२	११
६	९	१०	११

३३	४	३५	१५
१५	३	१२	११
६	९	१०	११

अथ मुंथा ॥ ॥ सैकागताब्दाविहना पतं
गेस्तच्छेषभावे सुयहाज बुभीत ॥ ॥

टी० गताब्दमे पुनः करना १० से भाग देना जो शेष रहे सो जन्मलग्न प्रसे मुं
थाका स्थान जानना

अथ पंचाधिकारी

मुंथेशो १ वर्षलग्नेश २ स्वप्नेश राशिकनायकः ३ अदिवा के राशिका
यन्त्ररात्रौ चंद्रसनायकः ४ ॥ १ ॥ जन्मलग्नेश्वर ५ स्वैव वर्षे पंचाधिका
टी० वर्षमे पंचाधिकारी बनावने का क्रम मुंथेश १ वर्षलग्नेश (दिना)
२ निराशियती ३ दिनमे वर्षप्रवेश होय तो सूर्य के राशीका स्वामी ४
जोमे वर्षप्रवेश होय तो चंद्र के राशीका स्वामी ५ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्ष
मे यह पंचाधिकारी युक्त भूपरल के बाले ग्रह के अधिकार देखना जि

ले दोनीन अधिकार आवे सो बलवान ज्ञानना आगे वर्षे शका ज्ञान

एतेषु बलवान् लघु पश्येद्यः सो बलनायकः ॥

हिंसादि वीर्यकस्ते तु दृगाधिकादि निर्णयः ॥ १० ॥

टी० यह पंचाधिकारी मे जो बलवान होय के लघु को देखता होय सो वर्ष पति ज्ञानना अथवा दोनीन ग्रह देखते होय तो उसमे जिस्की दृष्टी अधिक होय

अधिकाराधिकस्ते तु बलाधिकादि निर्णयः ॥ (सो वर्ष पति ज्ञानना बल साम्ये दिवार्कः स्याद्वा चौरात्री श्वरो रूपः ॥ ११ ॥)

टी० अधिकार अधिक होय तो बल से निश्चय करना सर्व बल समान होय और दिन मे वर्ष प्रवेश होय तो सूर्य वर्ष पति रात्री मे वर्ष प्रवेश होय तो चंद्र राशी श

पंचाधिकारि गोल ग्रंथ पश्यंति यदा नदा ॥ (वर्ष पति होना है वर्ष लघु प्रवेश होयस्तु स एवा रूप निर्वेत् ॥ १२ ॥)

टी० यह पंचाधिकार मे वर्ष लघु को कोई न देखे जब तब वर्ष लघु प्रवेश र उस वर्ष का वर्ष पति होता है ॥ १२ ॥

वर्षे शार्थ त्रिराशी शाः ॥ ॥ त्रिराशिषाः सूर्यसिता
किं शुक्रादिने निशी ज्येदु बुधमाजाः ॥ मेघाच्चतुर्णा
हरिभाहिलो मंनितं परे खार्कि कुजे ज्यचन्द्राः ॥ १३ ॥

मे	र	मि	क	मि	क	तु	र	प	म	कुं	मी	राशीना
स्व	शु	शु	र	ब	बु	मं	श	मं	र	वे	दिनेशः	
र	च	तु	मं	स्व	शु	शु	श	मं	र	च	रात्रीशाः	

टी० वर्ष मे त्रिराशि पति जानार्थ चक्रम् स्वष्ट हस्तोच्च स्वहृद् स्व

द्रेष्काण स्वनवमांश यह ५ अधिकार भी देखना ॥ १४ ॥

वर्षे शुभाशुभ ज्ञानार्थ त्रिपताकी चक्रम्

रेखा चयंति र्गयोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविहा प्रकमीशकोणात् ॥

स्मृतं बुधेस्तत्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रवर्षलग्नात् ॥ १४ ॥

टी० रेखा ३ देही और ३ सीधी करना और ९ रस्पर ईशान कोण से रेखा को वेध करना इ स्को बुध त्रिपताकी चक्र कहते है इस्मे पूर्व के मध्य रेखा पर वर्ष लघु का न्यास करना ॥ १४ ॥



तत्र ग्रह न्यासमाह

मुंथाफलमाह ॥ ॥ वर्षलघात्सुखा ४ स्तो ० त्य १२
रिपुर्ध्वं ० स्वः शोभना ॥ पुण्य २ कर्मा १० य ११ गा
साम्यं दत्तेन्यत्रो २ ३ ५ द्यमादूनम् ॥ १॥ ७ ॥

टी० मुंथावर्षलग्नसे चतुर्थः सप्तमः द्वादशः षष्ठः अष्टमः दत्तेन्यत्रो नमे अ
शुभः नवमः दशमः एकादः सप्त १ २ ३ ५ यह स्थानमे उद्यमसे धनत्रा

तनुस्थान ॥ ॥ शत्रुक्षयमानसतुष्टिलाभं (ततोताहै

प्रतापवृद्धिं नृपते प्रसादम् ॥ शरीरपुष्टिं विवि

धोद्यमांश्च ददाति विवि तं मुथहातनु १ स्थान ॥ २॥

टी० मुंथावर्षलग्नमे होयतो शत्रुक्षयः मनको संतोषः लाभः प्रताप
वृद्धिः राजाका प्रसादः शरीरपुष्टिः नाना प्रकारके उद्यमसे इव्यदेता है
धनस्थान ॥ ॥ उत्साहतीर्थगमनं यशश्च (॥ २॥

स्वबंधुसन्माननृपाश्रयाश्च ॥ मिश्रान्नभोगो ब

लपुष्टिसौख्यं स्यादर्थ २ भावे मुथहायदा ५ द्ये ॥ ३॥

टी० मुंथाद्वितीयस्थानमे होयतो उत्साहतीर्थमे गमनः यशः स्वकीयबंधुसे
सन्मानः राजाका आश्रयः मिश्रान्नभोजनः बलपुष्टिः सौख्यः यह फल होता है ॥ ३॥

तृतीयस्थान ॥ ॥ पराक्रमद्विजयशः सुखा

निसोदर्थं सौख्यं हि जदेव पूजा ॥ सर्वोपकारस्त

तुपुष्टिकांती नृपाश्रयश्च मुथहातृतीया ॥ ४॥

टी० मुंथातृतीयस्थानमे होयतो पराक्रमसे धनयशः सुख इस्की
प्राप्तिः भ्रातृसुखः ब्राह्मण और देव इनकी भक्तीः सर्वोपकारिपुष्टिशरी
रकान्तिपुक्तः राजाश्रय यह फल होता है ॥ ४॥

चतुर्थस्थान ॥ ॥ शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्गवै

रं मनस्ताप निरुद्यमत्वे ॥ स्यान्मुथहायां सुख ४ भा

वगायां जनापवादा मपवृद्धि दुःखं ॥ ५॥ ७ ॥ ॥

टी० मुंथाचतुर्थस्थानमे होयतो शरीरपीडा शत्रुभयः स्ववर्गसे वैरः
मनको संतापः उद्यमरहितः जनापवादः रोगवृद्धिः दुःख यह फल हो

पञ्चमस्थान ॥ ॥ परिधिहापंचम ५ गान्दवे (तेहै ॥ ५॥

शे सद्बुद्धिः सौख्यात्मजविजलाभाः ॥ प्रतापवृद्धिं

विविधावित्तासादेव हि जार्पोनृपतिप्रसादः ॥ ५॥

टी० मुंघापंचमस्थानमेहोयतोऽपानुसूते सुख पुत्र धन इत्यादि लाभ प्रसापकीरुही नानाप्रकारके विलास देव और जाहान इन की पूजा राजा का प्रसाद यह फल होते हैं ॥ ५॥

बहुस्थाना ॥ ॥ रुशत्वमंगेषु रिदृष्टव्यमभयं रुज
स्तस्करतो नृपात् ॥ कार्गर्थनाशो मुच्यते रिदृ
गाचे दुर्भुदिरिदृष्टिः स्वहृतेनुतापः ॥ ६॥ ॥ ७ ॥

टी० मुंघाषष्ठस्थानमेहोयतोऽपानुसूते शरीरके विषे रुशता शत्रूका उदय रोग और तस्कर इनसे भय अथवा राजासे भय कार्यनाश और अर्थनाश दुष्ट दुष्टीकीरुही स्वकीयरुत संताप यह फल होते हैं ॥ ६॥ ॥

सहस्रस्थाना ॥ ॥ कलत्रबंधूव्यसनादिभीतिरु
त्साहभंगो धनधर्मनाशः ॥ द्यूनेऽपगाने नृप
हंतनो स्याद्दुजागमो मोहविदुचेष्टा ॥ ७॥ ॥

टी० मुंघासप्तमस्थानमेहोयतोऽपानुसूते संधूसे भय व्यसनसे भय शत्रूसे भय उत्साहभंग धन और धर्म इनका नाश रोग का आग मन मोह विष रीत चेष्टा यह फल होते हैं ॥ ७॥

अष्टमस्थान ॥ ॥ भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो ध
र्मार्थयोर्दुर्व्यसनाय यश्च ॥ मृत्युस्थिता चेन्मुच्य
तु नराणां बलक्षयः स्यात्तु गमनं सुदुरं ॥ ८॥ ॥ ९ ॥

टी० मुंघा अष्टमस्थानमेहोयतोऽपानुसूते शत्रु भय और और भय धर्म और अर्थ का नाश दुष्ट व्यसन रोग वदृष्टय दूर देश में गमन यह फल मुन्युक्तो नचमस्थाना ॥ ॥ स्वामित्वमर्थोपममोनये ॥ १० ॥

धर्मोत्सवः पुत्रकलनसौख्यं ॥ देवहिजा गोपशं
यश्च भ्राग्योदयो भ्राग्य १ गते शिहो स्यात् ॥ ११ ॥

टी० मुंघा नवमस्थानमेहोयतोऽपानुसूते राजासे धन का आग मन धर्म उत्साह पुत्र स्त्री इनका सुख देव ब्राह्मण भक्ति महानृपश भाग्योदय यह फल होते हैं ॥ ११ ॥ नृपयमादं स्वजनो गकारं ॥ १२ ॥ सत्कर्मोति हि हि ज देव भक्ति ॥ गरीभियी हि विवि

धार्यलाभंदनेंबर १० स्थामुग्रहापदाग्निं ॥ १० ॥

टी० पुंशादशमस्थानमेहोयतो राजा का प्रसाद स्वजन से उपकार उ
त्तम कर्म की सिद्धि हिज देव इन की भक्ती यश की रुद्धि नाना प्रकार के
द्रव्य कालाभ श्रेष्ठ पद प्राप्ति यह फल होते हैं-

एकादशस्थान ॥ ॥ यदिंशिहालाभ ११ गता विला
ससौ भाग्य नैरुज्यमनः प्रसादाः ॥ भवन्ति राजाश्रयतो
धनानि सन्निवृत्ताभिमतान्नयश्च ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

टी० पुंशा एकादशस्थानमेहोयतो विलाससौ भाग्य निरोगता प्रसन्न मन रा
जाश्रय से धन होय उत्तम भित्त और पुत्र इन की इच्छित प्राप्ति यह फल होते हैं-

द्वादशस्थान ॥ ॥ व्ययोधिको दुष्टजनैश्च संगो
रुजातनौ विक्रम तोष्य सिद्धिः ॥ धर्मार्थहानिर्मु
खा हाव्यप १२ स्थायदातदा सज्जनतोपि वैरं ॥ १२ ॥

टी० पुंशा द्वादशस्थानमेहोयतो अधिक व्यय दुष्टजन का संग शरीर मे
रोग पराक्रम से भी कार्य सिद्ध नही धर्म अर्थ इस्की हानी सज्जन से
वैर यह फल होते हैं इति पुंशा फलं ॥ १२ ॥

द्वादशभावफलमाह ॥ जोभावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तो
यमेधने ॥ पापदृष्टयुतौ नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ ११ ॥

टी० जोभाव अपने स्वामी सेवाश्रुभग्रह से दृष्ट या युक्त होय तो शुभ फल दे
ता है जोभाव पापग्रह दृष्ट या युक्त होय तो नाश मिश्र होय तो मिश्र फल कह
स्वोच्चैर्मित्रभांशस्थो ग्रहो भावार्थि कृन्मत् ॥ (आ० ॥ ११ ॥

उदासीनग्रहांशादावश्यं वध्यफलप्रदः ॥ २ ॥

टी० स्वकीय उच्चमे स्वक्षेत्रमे मित्रक्षेत्रमे मित्रके अंश मे स्थित ऐ
सा जो ग्रह सो भाव की रुद्धि कारक जानना उदासीन के ग्रह मे होय उ
दासीन के अंश मे स्थित ऐसा ग्रह अवश्य समफलदायक होता है २

नीचारिभास्तगः खेटो वश्यं भावविनाशकृत्

॥ षष्ठाष्टव्ययभावानां विपरीतं फलं वदेत् ॥ ३ ॥

टी० नीच ग्रहमे शत्रुक्षेत्रमे अस्संगत ऐसा ग्रह अवश्य भाव का ना
श कर ता है षष्ठ अष्टम द्वादश यह भाव का फल विपरीत कह ना ३

सोऽप्योऽवष्टेति सुप्रः स्युः पापं स्त्रेद्विषये भवेत् ॥

सूक्तोपभास्युहाविपापास्युकसंगताः ॥४॥

ली० ब्रह्मस्थानमे शुभग्रहहोयतो शत्रुनाश पापग्रहहोयतो शत्रुमे
 भय अहमस्थानमे शुभग्रहहोयतो मृत्युका नाश औ० पापग्रह
 होयतो मृत्युकारक होसा जानना -

मयनाशं व्यपेक्षो म्याः पादभेदाकारकाः पदेः रिधाः शुभाः

वापास्त्ववश्यं विष्णुना शशाङ्कवराहविहिरस्त्वाहमर्चये शान्त्यया

टी. हाहास्थानमे शुभग्रह होय तो व्यय नश और पाप ग्रह होय तो व्यय पता
कि शुभस्थानमेषु भहोय तो शुभनाश पापग्रह होय तो अवश्य शत्रुनाश
बराहमिहिर कहते है कि सर्व ग्रह १ और २ अशुभ जानना - ॥६॥ ॥

वर्षाणि ये तीर्थेषु ते सुखानि नैरुज्यमर्थी गमनं विश्वासः॥

अथ गणपेयध्यानेऽत्यसौख्यं गादि कंचाल्पधनस्य लाभः ॥३॥

टी० वर्षलग्नपतीवीर्ययुक्तहोयतो सुख निरोगता धनलाभ
विलासग्रहहोताहै वर्षलग्नपती मध्यबलहोयतो अल्पसौख्य
रोगादि अल्पधनलाभ ग्रहहोताहै ॥७॥

स्यादल्पमार्गे विपदो र्थनाशारोगादिवृद्धिर्वनितादिनाशः॥

टी० वर्षलघुपती अल्पबलहोयतो विपत्तः अर्शनाश रोगादिरि
हि० स्त्रीनाशः यहफल जायना -

लभं पापयुतं सौम्यैरहमहितं नृणाम् ॥

विवाहं वचनादहमग्रतः कपिचिदिति ॥८॥

टी० वर्षलग्नपापग्रहपुनःप्रभृत्संभट्टहोयतोपनुषकोन
चनसिदिवाहदृष्टभोजनं यद्वशात्ततोताहै ॥१८॥

अस्मिन्नेषु भेदेषु नो राज्याय मोखादः॥

श्री-सकपनस्थानमेभुमहृवायुनहोयर्त्तौ राज्य अर्थ लौक्यवेताह
शनौवितेः कार्येनशोलाभोत्योद्यधनव्ययः॥

दौ-दर्वरूपसे शान्ति र स्थान मे हो शान्ति कार्य नाश, अस्य लाभ औ
र भन का व्याप हो ता है - ॥

शनीज्यो धन गोश्रात सात दो बलि नो पदि ॥

धनेशनी ज्यौचशुभेर्दृष्टौ बहुधनातिदौ ॥१०॥

टी० वर्षलग्नसे शनी और गुरु धनस्थानमे होय तो भ्रातृसुख
दायक बलवान् होय तो जानना धनस्थानमेशनी और गुरु
शुभग्रहसे दृष्ट होय तो बहुत धन प्राप्ति दायक जानना - ॥१०॥

अब्दे शोके पाप पुण्डरीने बलिनिबिक्कमे ॥

सौदराणां मिथः सौख्यं व्यत्ययाद्यत्ययं वदेत् ॥११॥

टी० वर्षेशसूर्य पाप पुन और दृष्टि रसकर के हीन बलवान् होय के ३
स्थानमे होय तो भ्राता का परस्पर सौख्य होता है विपरीत होय तो विपरीत
वर्षेश भृगु जे पाप हीने बलिनिबिक्कमे ॥ (कहना ११)

सौख्यं मिथः सौदराणां व्यत्ययाद्यत्ययं भवेत् ॥१२॥

टी० वर्षेश और शुक्र पाप ग्रहसे हीन बलवान् होय के ३ स्थानमे
होय तो भ्राता का परस्पर सुख होता है विपरीत होय तो विपरीत होना
सहजे ३ शोऽब्दे दुष्ट स्थान ४। ८। १२। ६ गे संतंगने स (है ॥१२॥

ति ॥ कलिर्मिथः सौदराणां युद्धं वापि वदेदुधः ॥१३॥

टी० तृतीय स्थान पति और वर्षेश दुष्ट स्थानमे ४। ८। १२। ६ होय अथ
वा अस्तंगत होय तो भ्राता मे परस्पर कलह और युद्ध भी बुधने कहना
शनी सहोत्ये ३ भौम १। ८ रोगाः स्युर्भ्रातृणां ध्रुवं ॥ (१३)

भौमे सहोत्ये ३ रक्ष ३। ६। स्थेऽनुजे मां दं स्पृष्टं वदेत् ॥१४॥

टी० शनी भौम सेवका होय के ३ स्थानमे होय तो भ्राता को निश्चय
से रोगादि जानना भौम बुध के सेवका होय के ३ स्थानमे होय तो
भ्राता का मां द (थोडा) स्पृष्ट कहना ॥१४॥

भौमे मंद १०। ११ भगे सौम्य पुत दृष्टेऽनुजे ३ सति ॥

सावीर्ये सहजानां तु मिथः सख्यं सुखं बहु ॥१५॥

कुजभे १। ८ शोऽनुजे ३ सौम्य पुत दृष्टेऽनुजा सुखं ॥

टी० मंगल बलवान् शनी के सेवका होय के शुभग्रहसे युक्त दृष्ट ३
स्थानमे होय तो भ्राता का परस्पर सौख्य और बहुत सुख कहना बुध भौ
म के सेवका होय के ३ स्थानमे शुभग्रह युक्त दृष्ट होय तो भ्राता से सुख होता
है १५
सहजे शस्त्र तीयस्थः सौम्य शुभ पुते सितः ॥

ताहुनजेनुजेरायेतोहराणांमुखापहि॥१६॥

टी० जैसे जन्म काल में तृतीये शत तीव्र वेशु प्रहनु कट्ट होय तो ते
वर्ष में तृतीये श होय तो आता का मुख होता है ॥१६॥ तृतीयः ॥

सुखे ४ शिवः पाप पुने शित श्रेष्ठितुः शरीरे जनये च पीडा ॥

वैशेषादिधुः पाप पुने शित तो वा मानुस्त नौ जानि रुजादि कष्ट ॥१७॥
टी० वर्ष रुद्र से वतुर्ष स्थान में सूर्य पाप प्रह से पुक्त वाट्ट होय तो पिता के
शरीर में पीडा उत्पन्न करता है और ४ स्थान में वृद्ध पाप प्रह से पुक्त वा
ट्ट होय तो माता के शरीर में अति रोग से कट्ट होता है ॥१७॥

सूतौ सुखेशो ४ नष्टौ जायर्षे चारिष्टकृतयोः ॥

टी० जन्म काल में सुखेश ४ नष्ट ने होय तो नव वर्ष में अरिष्टकारक होता है च

रवौ वर्षे श्वरो लाभ ११ सुत ५ गः सत्सु पुत्र दः ॥ (तुर्षी)

भौमे ब्दपो लाभ सुते स्थितः पुत्र सुखावहः ॥१८॥

बुधो ब्द पश्चात् ११ सुते ५ गः सत्सु न सौख्य कृत्

शुक्रो ब्द पः सुते ५ वा ११ पुत्र सौख्याय चैत्सु तः ॥१९॥

रव्यार जे ज्य सुक्रो ब्द पश्चात् चूर पीडिताः ॥

(दुःख प्रदाः पुत्रतः स्युरस्तं याता श्रुते तथा ॥२०॥

टी० सूखे वर्ष पति होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र दायक भौम वर्ष

पती होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सुख होता है बुध वर्ष पती

होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सौख्य कर क होता है शुक्र व

र्ष पती ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सुख जानना स्तुर्ष भौम बुध शुक्र

शुक्र यह वर्ष पती पाप प्रह से पीडित होय तो पुत्र से दुःख प्राप्ती और

अस्तंगत होय तो भी पुत्र से दुःख प्राप्ती जानना ॥१८॥१९॥२०॥॥

रुद्र पुत्रेश्वरौ पुत्रे ५ पुत्र द्वौ चलि नौ यदि ॥

चेद्रौ जी वोथ वा शुक्र स्वेच्छाः सुतः सुते ॥२१॥

टी० वर्ष रुद्र और वंश में श्वर वान होय के ५ होय तो पुत्र दायक चंद्र पु

रुद्र या शुक्र स्वेच्छा के होय के ५ स्थान में होय तो पुत्र दायक जानना ॥२१॥

मंदे ब्द पश्चात् ननु गतौ पति ते रिद्रो न स स्तुति पात न वभी

रुधि शर्ति शूलम् ॥ सुख्या शिरो गविष पञ्च रभीः शुभे

श्वेतसंवीक्षिते सकल दोषविना शमाहुः ॥२२॥

टी० शनीवर्षपती होय वक्रगति पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो सन्निपात से भय रक्तपीडा शूल गुल्म नेत्ररोग विषमज्वर से भय यह होता है शुभग्रह से दृष्ट होय तो समपूर्ण दोष कानाश होता है ॥२२॥

भौमोब्धपोऽनृजुगतिः क्रूरितोरिगतो ह यदि ॥

रक्तजातविकारेण महान् रोगः प्रजायते ॥२३॥

टी० भौमवर्षपती वक्रगती पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो रक्त विकार से महान् रोग उत्पन्न होता है ॥२३॥

सूर्योब्धपः क्रूरितोरौ धितो द्रेकाद्विजस्तनौ ॥

सूर्योब्धपः क्रूरितोष्टगो हृच्छूलरुजार्निहः ॥२४॥

टी० सूर्यवर्षपती पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो पित्त से शरीर में रोग उत्पन्न होता है सूर्यवर्षपती पापाक्रान्त होय के ८ स्थान में होय तो हृदय में शूल और रोग से पीडा होती है ॥२४॥

लग्नां गेशौपापमध्यगतौ रोगप्रदावुभौ ॥

टी० वर्षपती धनी पापग्रह के मध्य में होय तो दूनों रोगदायक होते हैं २५

बलीसिनोब्धाधिपतिः स्मरस्य ७ स्त्री (बृहः ॥

पक्षतसौरव्यकरो विचिंत्यः ॥ ७ ॥

टी० शुक्रवर्षपती बलवान् होय के ७ स्थान में होय तो स्त्री पक्ष से सौरव्यकार

शुक्रेब्देशे कुजदृशा विवाहः स्यात्सुखावहः (कहोता है ॥२६॥

टी० शुक्रवर्षेश भौमदृष्टि युक्त होय तो उस वर्ष में विवाह सुख हो गऐता जा

धनुःसिंहाजगे भौमेब्देशोरं प्रेप्तिनो भयं ॥

टी० धनुःसिंह भेष इस्का वर्षपति भौम होय के ८ स्थान में होय तो अग्नि

अब्देशो दिने सार्के कुजे नृपभयं दिशेत् ॥ (भयजानना

वर्षवेशो दिनेब्देशे कुजे सार्के नृपाद्वयं ॥१॥

टी० वर्षप्रवेश दिन में होय भौम सूर्य के सहित होय वा अष्टम होय तो राजा से भय वर्षप्रवेश दिन में होय और वर्षेश भौम सूर्य के सहित होय तो राजा से

अधिकारी बुधः क्रूरदृशा दृष्टः कुजे न चेत् ॥ (भयजानना

रक्तदोषादिना रोगाः स्युरब्धे तत्र निश्चितं ॥२८॥

टी० वर्षके पंचाधिकारी मे बुध का अधिकार होय वह क्रूर ग्रह से दृष्ट होय और भीम से दृष्ट होय तो रक्त दोष से रोगादि उस वर्ष में निश्चय से होय

भीम युक्ते बुधे सार्के विदेशे बंधन मृतिः ॥ (२०)

मंदोधिकारी खे १० लोह हते पीडा कर सृत्तः ॥ २१ ॥

भीमेष्टमे भयं वन्देः शास्त्रघातो नृपाद्वयं ॥

आरेख १० स्थे चतुष्पाद्वः पानोदुःखरुजोः सृजः ॥ ३०

टी० वर्ष १० स्थान भौम युक्त और बुध सूर्य के सहित होय तो देशान्तर मे बंधन और मृत्यु पंचाधिकारी मे शनी का अधिकार होय वह १० होय और भीम से ताडित होय तो पीडा कारक जानना भौम अष्टम होय तो अग्नी से भय शास्त्रघात राजा से भय और १० स्थान मे होय तो चतुष्पाद से पाक (भिरवा) दुःख रक्त विकार से रोग उस वर्ष में जानना ॥ ३० ॥

विना २ दृष्ट गोव्द प्रोजीवः खलदृष्टो धनापहा ॥

मंदे बुधे ७ दुर्वचनोः पचाद्वलि भर्त्सना ३१ ॥

टी० वर्ष पती गुरु २ वा ८ होय और पच दृष्ट होय तो धन नाश होय तद्द्वे वर्ष लघु से सप्तम स्थान मे शनी होय तो दुर्वचन अपवाद कर हानिदा यह फल होते है ॥ ३१ ॥

सर्वत्र शुभ शुभ दृष्ट्या शुभं बलवतः फलं ॥

टी० सर्व स्थान मे शुभ ग्रह युक्त और दृष्टि ग्रह शुभ जैसा बल होय तैसा फल शुकेन्द्र पेत्रिन चगे चूरा युक्ते बलान्विते ॥ (जानना अष्टम)

गमनं जायते मार्गे सौरव्यं लाभादिवं नतः ॥ ३२

टी० वर्ष मे शुक्र वर्ष पती ३१ स्थान मे होय क्रूर ग्रह से दृष्ट होय बल युक्त होय तो मार्ग मे गमन होय सौरव्य लाभादिव होते है ॥ ३२ ॥

शुकेन्द्र पेत्रिन चगे वक्रिण्यस्तं गतेषु वा ॥

मंतव्यं देशाद् व्यान्न गमनं कार्यं नाशनं ॥ ३३ ॥

टी० वर्ष मे शुक्र वर्ष पती ३१ स्थान मे होय और वक्रिण्य अस्तं गत होय तो जिस देश मे गमन किया है उस देश से अन्य देश मे गमन और नाशन वा यह फल जानना ॥ ३३ ॥

बुधेन्द्र रोमि चगे क्रूर युक्ते न लां विते ॥

देवयात्रा तथा तीर्थयात्रा स्याद्दुर्मसिद्धिदा ॥ ३४ ॥

टी० बुधवर्ष होयके ३९ स्थानमे और क्रूर ग्रह से दृष्ट होय बल युक्त होय तो देवयात्रा और तीर्थयात्रा यह धर्मसिद्धिदायक होती है ऐसा फल जीवे ब्रह्मेशे त्रिनवगे पापायुक्त बलान्विते ॥ (जानना)

देवोद्देशेन यात्रावातीर्थयात्रार्थसिद्धिदा ॥ ३५ ॥

टी० गुरुवर्ष होयके ३९ स्थानमे पापग्रह से अपुक्त बल युक्त होय तो देवके निमित्त यात्रावातीर्थके निमित्त यात्रा अर्थसिद्धिदायक होती है ऐसा फल जा धर्मे ९ शनिर्नाधिकारी चौरदुःखयुता ध्वदः ॥ (नना)

टी० अधिकारहीन ९ स्थानमे शनी होय तो मार्गमे चौरादी से दुःख होता है धर्मे ९ गुरुर्नाधिकारी वर्षेन वमगोयदि ॥

दूरयात्रा राजसंगो भूयात्प्राप्त्यादिजं सुखं ॥ ३६ ॥

टी० जन्ममे ९ स्थानमे अधिकारहीन गुरु रहते वर्षमे नवम होय तो दूर यात्रा राजसंग और नानाविध प्राप्ती से सुख होता है ॥ ३६ ॥ नवम ॥

सबले ब्रह्मपतौ १० स्वस्थे राज्याप्ति सुख कीर्तय ॥

बल्य ब्रह्मपः खो १० न केन्द्रन्यस्थानातिगृहान्नयः ॥ ३७ ॥

टी० वर्षपती बल युक्त १० स्थानमे होय तो राज्य प्राप्ति सुख कीर्ति यह फल होता है वर्षपती बल युक्त १० स्थान विना अन्य केन्द्र स्थानमे होय तो गृह प्राप्ती ऐसा जानना ॥ ३७ ॥

सूर्यो ब्रह्मो वलीलाभे ११ स्त्रेहो मात्स्यनृपादिभिः ॥

रविस्थाने पिहालग्रे १२ स्त्रे १० वाराज्याप्ति सौख्यदा ॥ ३८ ॥

टी० सूर्यवर्षपती बल युक्त ११ स्थानमे होय तो मंत्री राजा इत्यादिकों से स्त्रेह यह फल ॥ सूर्यके स्थानमे मुंथा ५ राशीका लग्नमे वा १० स्थानमे होय तो राज्य प्राप्ति सौख्यदायक फल होता है ॥ ३८ ॥

जीवे ० र्कः सखलः ख १० स्थो भूपाद्वंधवधेदिशेत् ॥

टी० वर्षमे तुलाका सूर्य पाप युक्त १० स्थानमे होय तो राजा से बंधन बंध होय ऐसा कथन करना ॥ दशम ॥

वर्षेश्वरे लाभगते शुभग्रहयुते क्षिते ॥

पठनाह्वे खनाह्वामस्तत्रैव व्यवहारतः ॥ ४० ॥

टी० वर्षपती ११ स्थानमे होय शुभ ग्रह पुनः पट्ट होय तो पञ्चम
ने से हेरवा करने से लाभ जानना नै से व्यवहार से भी जानना ॥४७॥

वर्षेशो जे कूरि ते त्या १२ र्य ६८ मे पाप बीक्षिते ॥

व्यवहार से लाभः स्याच्छुभ दृष्टे लाभ लाभकृत् ॥४८॥

टी० वर्षशुभ कूरग्रह से पुनः १२ ६८ स्थानमे पाप दृष्ट होय तो व्यव
हार से लाभ नही और शुभ दृष्ट होय तो अल्प लाभ कारक होता है ॥४८॥

जीवे व्यपे कूरि ते गोपन हानि भयं दृष्टात् ॥

टी० गुरु वर्ष नीपाप पुनः लग्नमे होय तो धन हानि और राजा से भयानक
सर्वे पिला भोपगता ग्रहें द्रा सौरव्यार्थ दाही र्य पुनः नदगा ॥

ने निर्वला स्ते धन सौरव्य लाभ शायदे न जवरे निरुक्त ॥४९॥

टी० सर्वग्रह ११ स्थानमे बीर्य पुनः होय तो सौख्य अर्थ दापक होते है
अस्त गत न होय वह ग्रह निर्वल होय तो धन सौरव्य लाभ रस्त गत
है सा मे दृष्टोति पीने कथन किया - ॥४९॥

व्ययस्ये वर्षये वंदे शुभ ग्रह पुनः क्षिने ॥

आयास निर्मिता भूमि प्राप्ति न विनिर्दिशेत् ॥५०॥

टी० वर्षपती शनी १२ स्थानमे होय और शुभ ग्रह पुनः पट्ट होय तो
उत्तम प्रकार के ग्रह सहित भूमि प्राप्ति जानना ॥५०॥

वर्षागेशोष्टमे भौम पुनः दृष्टे विपत्त्युक्तिः ॥

वाद्याष्टे शंगे भौम पुनः दृष्टे विपत्त्युक्तिः ॥५१॥

टी० वर्षलग्नपती ८ स्थानमे भौम पुनः पट्ट होय तो एस्त्रा विपत्ती से
मृत्यु जानना अथवा वर्षपती ८ पती लग्नमे भौम पुनः दृष्ट होय तो
शस्त्र से मृत्यु जानना ॥५१॥

अब्दलपेशरं ध्रुवौ व्यपाष्टिह बुकोपगौ ॥

मुच्यतां संयुतो मृत्यु प्रदौ तद्वा लुकोपगौ ॥५२॥

टी० वर्षलग्नश और अष्टमेश १२ ८ ४ स्थानमे मुंघा संयुक्त होय तो वर
ग्रह के आहु को पसे मृत्यु कारक जानना

॥५२॥ त्रहो की प्रहती

स	च	म	कु	शु	ह	र	क	प्र	म
वि	क	वि	वि	क	क	वा	वा	म	म

त्रिपष्ट लोभो ११ ११ तैर सौख्ये नें द्रविको

जोपगतैश्च सौम्यैः॥१॥ रत्नांबरस्वर्णयशःसु

खाप्तिर्नाशोप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः॥४७॥

टी० वर्षलग्नसे ३६।११ पापग्रहहोय और केंद्रत्रिकोणमेषु भग्रहहोय तो
रत्न वस्त्र सुवर्ण यशः सुख प्राप्ति और शरीर पुष्टि यह फल जा
केंद्रत्रिकोणगैः सौम्यैरिष्टनाशः सुखाल्पता॥ (नना

त्रिषट्लाभोपगैः पापैर ल्यं राज्यसुखं भवेत्॥४८॥

टी० केंद्रमे १।४।७।१० दस्येषु भग्रहोय तो अरिष्टनाश और अल्पसुख ३।
६।११ स्थानमे पापग्रहहोय तो अल्पराज्य और सुख होता है॥४८॥

चतुष्टये वा तनये च धर्मे सौम्यास्त्रिषष्टापगताश्च पापाः॥

कुर्वन्ति लक्ष्मीं मणिवारणाश्चैः पूर्ण सुवर्णविरभूषणैश्च॥४९॥

टी० केंद्रमे वा पंचम नवम दस्येषु भग्रह ३।६।११ दस्येषु भग्रहहोय तो
मणि गज अश्व इनकरके पूर्ण लक्ष्मी करते है सुवर्ण वस्त्र भूषण यह भी

चंद्राशीश्वरोरुग्रराशिपश्चस्वलैर्वियुक्त॥ (करते है-

रिष्टं तदालयं याति यथा व्याधिः स दोषधैः॥५०॥

टी० चंद्राशीश्वर और रुग्रराशिपती यह पापग्रह से युक्त न होय तो अरि
ष्टनाश होते है जैसे उत्तम औषध से व्याधि नाश होती है॥५०॥ द्विवर्षक

अथ प्रश्नप्रकर्णं । निष्ठा दियुक्तप्रश्न॥ निधिग्रहर (लुविचारः

संयुक्ता तारका वारमिश्रिता॥ अग्निभिस्तु हरेद्वांगशेषं

सत्त्वं रजस्तमः॥१॥ फल॥ सिद्धिस्तत्कालिके सत्त्वे रजसा

तु विलंबता॥ तमसानिष्फलं कार्यं तात व्यं प्रश्नकोविदैः॥२॥

टी० प्रश्नकालमे जो तिथी वार नक्षत्र और ग्रह जो होय उसको एक प्रक
रना ३ से भाग लेना शेषमे सत्त्व रजस्तम यह फल सहित जानना उदा
हरण तिथी ५ वार ३ नक्षत्र ७ ग्रह २ इस्को एकत्र किया तो १७ भया
३ से भाग लिया शेष २ रहे तो रजो गुण जानना फल कार्यमे देरी होगी
यह प्रकारसे ३ शेष रहे तो तमो गुण फल कार्यनिष्फल १ शेष रहे तो स
त्व गुण फल तत्काल सिद्धि इस प्रकारसे प्रश्न फल जानना

अपने छायाका प्रश्न॥ आत्मछाया त्रिगुणितान्न सो दशस

मन्विता॥ वसुभिश्च हरेद्वांगशेषं चैव शुभाशुभं॥ फल॥ +

लाभाश्रेयकेपिके सिद्धिर्द्विपंचमसप्तके॥

द्वयोर्हानिश्चतुःशोकं पञ्चाष्टमरणं ध्रुवम् ॥ ४॥

टी० प्रश्नकरते ही अपनी न्यायजितना गोल आये उरमे और १३ मि
लावना ७ से भागलेना जो शेष आवे सो फल देखना-

शेष १ शेष २ शेष ३ शेष ४ शेष ५ शेष ६ शेष ७ शेष ८
लाभ हानी सिद्धी शोक रुद्धी मरण रुद्धी मरण

पञ्चाप्रश्न ॥ ॥ लिपिः प्रहरसंयुक्तावारकावारमिश्रिता ॥

सप्तभिस्तु हरेद्वागंशेषं तु फलमादिशेत् ॥ ५॥ वर्तमानं च

नक्षत्रं गणयेत्स्त्रीकादितः ॥ सप्तभिश्च हरेद्वागंशेषं प्रश्न

स्य लक्षणं ॥ ६॥ प्रश्नासरे रुद्रयुक्तं सप्तभिर्भोजितं तथा ॥

फलमेव क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि शुभाशुभम् ॥ ७॥ ४॥

टी० प्रश्नकरते ही जोतिषी प्रहर और दारनक्षत्र होष सोर कत्र करना
७ से भागलेना शेष जो रहे सो फल जानना दूसरा प्रकार कृतिकानक्ष
त्रसे दिननक्षत्रनक्षत्रगिनना ७ से भागलेना शेष फल जानना तीसरा
प्रकार प्रश्नके जो अक्षर होष उरमे १३ मिलावना ७ से भागलेना शेष आ
वे सो फल जानना तीनों उदाहरण का फल देखना-

शेषका फल ॥ ॥ एकेशेषे तथा स्थाने हि तीये पथि

वर्तते ॥ तृतीये पथि मार्गं तु चतुर्थे ग्राममादिशेत्

॥ पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिपुतं वदेत् ॥ शून्यं

ज्ञेयं सप्तमे वै वै नक्षत्रस्य लक्षणं ॥ ८॥ ५॥ ॥

टी० पूर्वके प्रश्न का फल शेष १ रहे तो स्थान पर जानना शेष २ रहे तो रस्ते
मे शेष ३ रहे तो अर्धमार्ग मे शेष ४ रहे तो ग्राम के पास शेष ५ रहे तो रस्ते मे
से फिर गया शेष ६ रहे तो गेग युक्त शेष ७ रहे तो मृत्यु ऐसा पञ्चाप्रश्न ती
न प्रकार का क्रम से जानना-

दूसरा प्रकार ॥ ॥ धनसहजगौ सिता मरे ज्यौ

कथं यत्नान्त्वगमनं प्रयासिषुं सी ॥ तनुहि बुकर

नाविमौ नत हत सति निवृणां कुरुतो गृह प्रवेशं ॥ ९०

टी० प्रश्नका लगे हि तीये स्थान मे ध्रुव होष और न तीये स्थान मे ध्रुव होष

तोप्रवासीपुरुषकाआगमनकहनाअथवाप्रश्नलग्नमेषुकऔरच
तुर्थस्थानमेगुरुहोयतोप्रवासीपुरुषकाजलदीआगमनकहना

कार्यकार्यप्रश्न॥ ॥दिशाप्रहरसंयुक्तातारकावारमि

श्रिता॥अष्टभिस्तुहरेद्भागंशेषंप्रश्नस्यलक्षणं॥११

॥फल॥पंचैकेत्वरितासिद्धिःषट्त्वर्येचदिनत्रयं॥

त्रिसप्तकेविलंबश्चद्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ॥१२॥

टी० प्रश्नकरनेवालेकासुखजिसदिशामेहोयवहदिशाऔरप्रहरनक्ष
त्रवारइस्कोइकट्टाकरना८सेभागलेनाशेषमेषुभाशुभफलजाननाशेष
१अथवा५रहेतोजलदीकार्यसिद्धीशेष६अथवा४रहेतोतीनदिनमेका
र्यशेष३७रहेतोविलंबशेष२८रहेतोकार्यहोगानहीऐसाजानना

अंकप्रश्न॥ ॥अंकंदिगुणितंकृत्वाफलनामाक्षरैर्यु

तं॥त्रयोदशयुतंकृत्वानवभिर्भागमाहरेत्॥१३॥फल

॥एकेहिधनवृद्धिश्चद्वितीयेचधनक्षयः॥तृतीयेक्षेम

मारोग्यंचतुर्थेव्याधिरेवहि॥१४॥पंचकेचस्त्रीलाभः

स्यात्पृष्ठेबंधुविनाशनं॥सप्तमेर्द्धसितासिद्धिरष्टमेम

रणंधुवं॥१५॥नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंयथा॥

टी० प्रश्नकालमेष्टकसेकहना९अंकमेसेकोईअंककहोतबउत्पे
काजोअंकहोयउस्कोटूनाकरनाफिरकोईफलकानामउत्सेकहावना
तबफलकेनामकेजोअक्षरहोयउस्कोपूर्वमेदूनाकियाजोअंकहैउ
त्पेमिलावनाफिरउत्पे१३मिलावनाऐसासबएकत्रकरना९सेभा
गलेनाजोशेषआवेसोफलशुभाशुभजाननाशेष१रहेतोधनलाभ
शेष२रहेतोधनक्षयशेष३रहेतोआरोग्यताशेष४रहेतोरोगशेष५रहे
तोस्त्रीलाभशेष६रहेतोबंधुनाशशेष७रहेतोकार्यसिद्धीशेष८रहेतो
मरणशेष९रहे तोराज्यप्राप्तीऐसाअंकप्रश्नगर्गमुनीनेकथनकियाहै

नवग्रहयंत्र॥ ॥नवग्रहात्मकंयंत्रंकृत्वाप्रश्ननिरी

क्षयेत्॥फलपूर्वोक्तमेवात्रद्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः॥१६॥

टी० प्रश्नदेखनेकेवास्तनवग्रहात्मकयंत्रलिखनापूर्वमेविधी

जोकेहाहैसोदेखना

॥अन्यमत॥

७	३	८
२	५	१
३	७	६

समवयोरुक्तयनिपातौ न वै कपं सत्त्वरितं न दन्ति ॥ अ

शौहिनी येन तिका र्पसिद्धिरसा म्पने हारति का चयं च ॥ १७

टी० अथ गते पूर्व मे भं क प्रयत्न है वै सही परं तु क ह भिन्न शेष ० अथ
क २२ हे तो नार्थ वण हो नी शेष १५ ॥ २२ हे तो न क हो वा पी मि ही शेष ०

२२ हे तो कार्य हो गा व ही शेष ५ ॥ हे तो नी न दि व मे क र्प सिद्धी ऐ सा ज न

वार न स च युक्त पंथा प्र ५ ॥ ५ ॥ वृषे चं द्रे व शा नार्गे स

मी पे सु त मु न यो ॥ २२ वै नो म न र्गो दू रे श नो व परि पी

इय ते ॥ नि जी व स त्त क सा गि स जी वौ द्वा द शो भु वे त् ॥

व्या धि तो न व क स्य पि स र्प धि ष्य पा तु चा त्म न ॥ १८

टी० प्रथम बुध अथ चं द्रे वार को दू रे तो मार्ग जे है पुरु कार को वा मु क
वार को र रे सो स मी प आ या है और ती वे मंगल वार को प्र वारी दू र है श
नि वा र को पी हित और वि शेष स र्प न स र्प री टि न न स म त क दे त न लो व
थ ५ ॥ न द्वा व मे च द्र हो य तो नि जी व सि ती प ५ ॥ न द्वा व मे च द्र हो य तो जी
व युक्त तृती य १ ॥ स र्प वे चं द्र हो य नि जी व पु त्र ऐ सा पं था म्प ज्ञान न

न ह व त्त प्र ५ ॥ ॥ नि धि क र च न स न ल प्र व नि

वि मि धि तं ग पं च भि र्नु त्त र द्वा गं शं ष त न्व ति नि र्दि

शे त ॥ २० ॥ प्र क ॥ पृ थि वी नु र्ध्व री त यं अ सु जी वि

न ल भ्य ते ॥ ने त्त त्त ॥ ज गं दे य वा यो शो कं वि मि र्दि शे त् ॥

टी० म म्प क र ते ही जी ति यो वार न स त्त ल प हो य द को २ युक्त कर न और
५ मे भा ग ले ना और पं च त त्त पृ थ्वी न ल आ का श त्त व द्वा व ह क प से न ह
व त्तु का र्क न ज्ञान का शो ५ ॥ हे तो पृ थि वी प र्ति ह है शो ५ ॥ हे तो न
ल मे प्रा पु न ही शो ५ ॥ हे तो अ का श प र्ति ह है शो ५ ॥ हे तो न
के द्वा प र्ति शो ५ ॥ हे तो वा यु शो क प्र ती ऐ सा न ह व त्त का त्त न क र

ग मि वी प्र ५ ॥ ॥ त त्त त्त त्त र वि जी व यो मे

तृ ती य स त्त न व पं च मे च ॥ ग र्भः पु मा न्यै क मि

धिः प्र णी तं ना त्प ग्र हे स्त्री वि नु यै व णी तं ॥ २१ ॥

टी० स्त्री ग र्भ का प्र क र ते ही सो प्र म्प क प्र हो य द स्वे ग्र ह दे त्त न क प्र
से न नी य अथ वा स प्त म न व न पं च स त्त न मे वि नु क मं क हो प लो ग र्भ

पुत्रहोय और यह स्थान मे अन्य ग्रह होय तो गर्भ मे कन्या होय ऐसा जानना-
 मुष्टिप्रश्न॥ ॥ मेषे रक्तवर्षे पीतमिश्रु ने नीलवर्ण
 कम्॥ कर्के चण्डुरं ज्ञेयं सिंहधूम्रं प्रकीर्तितम्॥
 ॥२३॥ कन्यायां नीलमिश्रं तु तुलायां पीतमिश्रित
 म्॥ वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिश्चितं॥
 ॥२४॥ नक्षत्रे कुंभे कृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः॥

टी० पृच्छ कके मूठी मे कौन वर्ण का पदार्थ है सो कहना उक्ताक्रम मेष
 लग्न होय तो मूठी मे लाल पदार्थ कहना और वृष लग्न होय तो पीला पदा
 र्थ कहना मिथुन होय तो नीलवर्ण कर्क होय तो सफेद वर्ण सिंह होय तो
 धूम्र वर्ण कन्या होय तो नील मिश्रित तुला होय तो पीत मिश्रित वर्ण वृश्चि
 क होय तो लाल मिश्रित वर्ण धन होय तो पीत वर्ण मकर और कुंभ होय
 तो कृष्ण वर्ण मीन होय तो पीत वर्ण ऐसा प्रश्न काल मे लग्न से वर्ण जानकर ना-

लग्न से मन चिंतित प्रश्न॥ ॥ मेषे च द्विपदा चिंता वृषे चिंता
 चतुष्पदः॥ मिथुने गर्भचिंता च व्यावसायस्य कर्कटो॥२५॥
 सिंहच जीवचिंता स्यात्कन्यायां च स्त्रियंतथा॥ तुले च धन
 चिंता च व्याधिचिंता च वृश्चिके॥२६॥ चापे च धनचिंता स्यात्कर्क
 रेश्च चिंतनं॥ कुंभे स्थानस्य चिंता स्यान्मीने चिंता च दैविकी॥

टी० लग्न से प्रश्न का उत्तर प्रश्न काल मे मेष लग्न होय तो मनुष्य की चिंता
 कहना वृष लग्न होय तो चतुष्पद की चिंता मिथुन लग्न होय तो गर्भ की
 चिंता कर्क लग्न होय तो उद्योग की चिंता सिंह लग्न होय तो जीव की चिंता
 कन्या लग्न होय तो स्त्री की चिंता तुलारु लग्न होय तो धन की चिंता वृश्चि
 क लग्न होय तो व्याधी की चिंता धन लग्न होय तो धन की चिंता मकर ल
 ग्न होय तो शत्रु की चिंता कुंभ लग्न होय तो स्थान की चिंता मीन लग्न होय तो देव
 ना से बधि चिंता ऐसा प्रश्न काल मे प्रश्न लग्न से जानना -

द्वादशलग्नकी संज्ञा॥ धानुर्मूलं जीवश्चरस्थिरद्विस्वभाव
 श्व॥ मेषादयः क्रमेण ज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः॥२७॥

टी० मेषादि क्रम से द्वादशलग्न की संज्ञा एक राशी मे २ नाम जानना मेष
 लग्न मे धानुचिंता और चर संज्ञा वृष लग्न मे मूलचिंता स्थिर संज्ञा मि

पुनरुपमेजीववितादिस्वभावसंज्ञाककलप्रमेधानुविताचरसं
ज्ञासिंहलप्रमेयूलवितास्थिरसंज्ञा कन्वालग्रमेजीववितादि
भावसंज्ञा तुलालप्रमेधानुविताचरसंज्ञा रश्मिकलप्रमेयूलविता
स्थिरसंज्ञा धनलप्रमेजीववितादिस्वभावसंज्ञाप्रकारलग्रमेधानु
विताचरसंज्ञा तुलालप्रमेयूलवितास्थिरसंज्ञा जीनलप्रमेजीव
वितादिस्वभावसंज्ञा इत्यप्रकारसेद्वादशराशीकीसंज्ञाज्ञानना-

अंकप्रश्न॥ ॥ अशोत्तरशनेदेवपथिकोन्मयाचरेत्
॥ शोषेद्वादशभिर्मन्त्रं शोषेत्तु शोषमाशुभं॥ २९॥ फल॥ ए
कंदुगोसप्तकेवैतिलं च म्नात्येनुर्वेदि सुभूतेषु वाशः॥ ३०

टी० प्रश्नपृच्छावसेधशेनत्वात् अंकमेसेअंककहेवावनफिरजोअ
कआवेउत्को ॥ २९ से भागलेना शेषफलज्ञानना शोष १॥ २९॥
हेनोकार्यविलंब शेष २॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥
शेष २॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

शेगीप्रश्न॥ ॥ तिथिचारनमस्तुलग्रप्रहरएव॥ ॥ अष्टभि
स्तुहरेद्वागंशेषंतुफलकादिशेत्॥ ३१॥ फल॥ हजगोदेवताज
धामेदेविनेत्रदंतपुष्पदन्तपुष्पवाधानना धाएवापेको॥ ३२

टी० प्रश्नपृच्छाककरतेही तिथीचारनस्तुलग्रप्रहरएव सप्तएकचक
रत्वासेभागलेना शेषफलज्ञानना शोष १॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥
शोष २॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
हेनोकोईभीवाधानहीऐसाज्ञानना यद्वेगप्रश्नविधीज्ञानना -

शेगप्रश्नप्रपरले॥ ॥ शेषेचदेवीशेषस्यात्तुषेदेवप्र
पैत्रिकः॥ मिश्रनेशाकिनीदोषाकर्कटेभूतलोषकः॥ ३३॥ सिंह
सहोदराणां ॥ मया पादुलमातृजः॥ ३४॥ दोषां डिवाया
नाडीदोषोहृदि॥ ३५॥ सापेचवसिणीपीडामकोश
मदेवतान्॥ अष्टबाहुरिजःकुंभेभीनेआकाशगामिनः॥ ३६॥

टी० प्रश्नपरोपप्रश्नकालमेधफलचहंपतोदेवीसंनधीतेनरुवरुप्रले
यतोपिदोषसेरोम मिश्रनलग्रहेगतो प्रादितीदेवसेरोम कर्कलप्रले

पतो भूतदोषसेरोगसिंहलग्नहोयतो भ्रातृदोषसेरोग कन्यालग्नहोयतो
कुलमातृकादोषसेरोग तुलालग्नहोयतो चंडिकादोषसेरोग वृश्चिक
लग्नहोयतो नाडीदोषसेरोग धनलग्नहोयतो यक्षिणीदोषसेरोग मक
रलग्नहोयतो ग्रामदेवतादोषसेरोग कुंभलग्नहोयतो पुत्रहीन स्त्रीकेटु
द्विदोषसेरोग मीनलग्नहोयतो आकाशदेवतादोषसेरोग ऐसारोग प्रभजा

पर्जन्यप्रश्न ॥ ॥ आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादि (वना
दि नवमे ॥ रोहिणी कालमाख्याति समदुर्भिक्षलक्ष
णं ॥ ३६ ॥ रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघदंबरं ॥ म
ध्यान्ते जलविन्दुः स्यान्नदादुर्भिक्षलक्षणम् ॥ ३७ ॥

टी० पर्जन्यविचार आषाढ शुक्लपक्षकी १० ११ १२ तिथीको रोहिणी
होयतो क्रमसे सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष यहती नो फल जानना और रा
त्रीमे मेघ खुल जाना प्रातः कालमे मेघ आवना और मध्याह्नमे जल
विन्दु गिरना यह दुर्भिक्ष काल लक्षण जानना -

वृष्टिलक्षण ॥ ॥ प्रावृट्काले शीत रश्मि र्यदा
स्याच्छुकादस्ते सीम्यदृष्टश्च मंदात् ॥ बुद्धिस्थाने
सप्तमे वा त्रिकोणे वृष्टिर्वा ज्योदैव विद्धिः पुराणे ॥ ३८

टी० वर्षाकालमे जो चंद्रमा शुक्रसे सप्तम स्थानमे और शुभग्रहसे दृष्ट शनी
से पंचम स्थानमे होय अथवा ७ स्थानमे होय वा त्रिकोणमे होय तो वृष्टि

कुम्भः कर्कटौ मीन मकरौ वृश्चिकस्तु (लक्षण जानना)
ला ॥ जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वनेषु सूर्यमं
॥ ३९ ॥ ल भत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥

टी० जलकेन सप्त सूर्य महान सप्त कुंभ कर्क अथवा वृष मीन मकर
वृश्चिक तुला यह जल लग्न है इस लग्नमे होय तो वृष्टि उत्तम जानना -

नयदावानि पवनः स्थलं यांति दूषादयः ॥

शब्दं कुर्वन्ति मंडूकास्तदा स्याद्वृष्टिरुत्तमा ॥ ४० ॥

टी० वर्षाकालमे वृष्टिलक्षण वायूनचले और जलसे वाहर मच्छनिक
से मेषुका शब्द करे ऐसालक्षण होय तो उत्तम वृष्टि जानना -

पर्जन्यनक्षत्र ॥ ॥ अश्विनी मृग पुष्येषु पूष विष्णु म +

यासु च॥ स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः॥४१॥

टी० अश्विनी भृगु पुष्य पूर्वोषाहा अश्विनी मघा स्वाती बह्वश्व
ज्येष्ठसूर्यमहाः सप्तमी आवेता उत्तराश्विजानना -

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्रम् ॥ आर्द्रादिदशके स्त्री
पुंविशारत्तात्रिनपुंसके ॥ मूलान्तरुदशोपुंस्त्रीनक्षत्रा
धिकमाहये ॥४२॥ वायुनपुंसकेभेदस्त्रीपुंभेदाभेद
र्शनम् ॥ स्त्रीपुंनपुंसकसंयोगेदृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥४३॥

टी० प्रथम आर्द्रानक्षत्रसे १० नक्षत्र स्वाती तक स्त्री संज्ञा तिशाखा
से २ नक्षत्र ज्येष्ठातक नपुंसक संज्ञा मूलसे १४ नक्षत्र ज्येष्ठतक पुरु
ष संज्ञा ऐसी २७ नक्षत्रकी स्त्री नपुंसकपुरुष संज्ञा जानना -

अल्पदृष्टिलक्षणम् ॥ अप्रैयति यद्भोजः पश्चाच्चल
ति भास्करः ॥ तत्र दृष्टिर्न विपुला जायते नात्र संशयः ॥४४॥

टी० योदी दृष्टि कालक्षण सूर्यसे आश्विनी शीघ्रमेव लहो यतो अल्पदृष्टिजा
सूर्यनक्षत्रचंद्रनक्षत्र संज्ञा ॥ अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रा (नना)
देः पंचकं तथा ॥ पूर्वोषाहादिचत्वारिंशे नरा रेवती हये ॥४५॥

उत्तानि शशिमान्यमश्विनसूर्यमान्यम् ॥ रोहिणी च मृग
श्रवणपूर्वोपलुनिकानथा ॥४६॥ सूर्यसूर्यं भवेत्तदुपलु
चंद्रेववर्षति ॥ चंद्रसूर्यो भवेद्योगस्तदावर्षति मेघगट ४७

टी० अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा
हृषा उषा अश्विनी धनिष्ठा उत्तरा रेवती यह चंद्र नक्षत्र जानना और
रशेष सूर्यनक्षत्र जानना आगे फल चंद्रनक्षत्र और सूर्यनक्षत्र यह दू
नो सूर्यनक्षत्र होय तो वायू बहुत और दू गो चंद्रनक्षत्र होय तो पृथ्वी
नहीं जब चंद्रनक्षत्र और सूर्य नक्षत्र आवेता दृष्टि होय ऐसा जानना

॥ घरसे पशुनिकस जायति स्कात्रम् ॥

शुभणि भास्वमेधुवने स्थितं न दनुषट् सुचकर्ण पथे स्थि
ते ॥ अचलमेधुगते गृहमागतं द्रवणने म तमेव मृते त्रिषु ४८

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिक् नक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम नक्षत्रमे न
पूरुष नक्षत्र जानना और ६ नक्षत्रमे गणीय कार्यमे जानना और १० नक्षत्र

मेजलदीपिले २ नक्षत्रमेमिलेगानही ३ नक्षत्रमेमृत्युऐसापशू
घरमेसेनिकसजानेकाप्रश्नदेखना-

संक्रांतौवारफल॥ ॥संक्रांतिर्जायतेयत्रभास्करेभूसु
नेशनौ॥नस्मिन्मासेभयंघोरं दुर्भिक्षंरुष्टिचोरजं॥४०॥

टी० रवि मंगल शनि इनकेवारमेसंक्रांतिलेतेउसमासमेभय
दुर्भिक्ष अरुष्टिचोरभयजानना- ACC. No.

राजभंगादिकयोग॥ ॥ यदि भवति कदाचि
च्चाश्विनीनष्टचंद्राशनिरविकुजवारेस्वानिरासु
ष्मयोगे॥गगनचरपशूनां जंगमस्थावराणां
पतिजनविनाशोराज्यभंगस्तुचोक्तः॥५०॥ ॥

टी० कदाचित् अमावास्याकेदिन शनिवार रविवार मंगलवार औ
र अश्विनी अथवा स्वाती और भाषुष्यान् योग ऐसायोगहोयतोप
क्षिपशुजंगमस्थावर राजा जन इतनेकानाशजानना-

सूर्यचंद्रकामंडलविचार॥ रविशशिपरिवेषेपूर्वयामेच
पीडारविशशिपरिवेषेमध्ययामेचरुष्टिः॥रविशशिपरिवे
षेधान्यनाशस्तृतीयेरविशशिपरिवेषेराज्यभंगश्चतुर्थे॥५१

टी० सूर्य और चंद्र इनकोमंडलपडेतिस्काविचार सूर्यकोअथवा चं
द्रकोमंडलप्रथमप्रहरमेहोयतोपीडा दूसरेप्रहरमेरुष्टि तीसरेप्र
हरमेधान्यनाश चतुर्थप्रहरमेराज्यभंगऐसासूर्यचंद्रकेमंडलकाविचार

इन्द्रधनुष्यादियोग॥ ॥ रात्रौ धनुर्दिनेउल्काता (करना
रात्रैवदिनेतथा॥ रात्रौ च धूमकेतुश्च भूकंपश्च तथैव
हि॥ एतानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणि च॥५२॥ ॥

टी० रात्रीमेइन्द्रधनुषनिकसेऔरदिनमेउल्कापातनक्षत्रपातऔर
रात्रीमेधूमकेतु और भूकंप यह सब दुष्टचिह्नहोयतोदेशनाशहोनेहै
अथग्रहचक्रप्रकरणम्॥ (ऐसाजानना-

॥सूर्य॥कसेसंक्रमणंयत्रहेवक्त्रेविनियोजयेत्॥चत्वारि
रिदक्षिणेबाहौत्रीणित्रीणिचपादयोः॥५३॥ चत्वारिवा
मबाहौचहृदयेपंचनिर्दिशेत्॥ अक्षोर्द्वयं हयं योज्यं मूर्ध्नि

चैकैकं कुरु दे॥५५॥ फल॥ रोमोला भस्मया ध्यानं च भव
 त्या भव च॥ ऐश्वर्यं राजपूजा च अपमृत्यु विनिर्गम मातृ ॥
 ५५॥ चंद्र॥ चंद्रनक्षत्रं प्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनं ॥ श्री
 वैषहकं सुस्ते त्वेकं त्रीणि दक्षिणे हस्तके ॥५६॥ हृदये त
 कं प्रहृतं भवता महस्ते च पंगथा ॥ कुर्योः षट्कं च दानं धी
 पादैकैकं विनिर्दिशेत् ॥ ५७॥ फल॥ मुखे चंद्रव्यहरण
 शीर्षे लाभकरं भूतं ॥ हनिदं दक्षिणे हस्ते हृदये च सुखा
 वृहं ॥ कामहस्ते तु रागाः प्रकुर्वन्तः शोकस्तथैव च ॥ पाद
 पोर्हानि रोमो च न न्यधिष्ययादि चंद्रभं ॥ ५८॥ भौष ॥
 भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ययादि भौमभं ॥ श्रीर्षे ष
 ट्कं मुखे त्रीणि त्रीणि दक्षिणे कुरे ॥ पादयोः षट्प्रहृत
 योऽयमहस्ते च पंगथा ॥ मुखे चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये च षमे
 कच ॥ ५९॥ फल॥ विजयं धैर्यं रोगप्रलक्ष्मीः पथा भ
 गंतथा ॥ मृत्युर्लोकः सुखं चापि फलं जैय विवर्षणे ॥ ६०

चंद्र			चक्र			मंगल		
रूपं चक्राणि नक्षत्रा जन्मनक्षत्रं तत्कुर्यात् स्यात्तत्कुर्यात् शुभाशुभं ज्ञा			जन्मनक्षत्रं तत्कुर्यात् तत्कुर्यात् तत्कुर्यात् नक्ष शुभाशुभं ज्ञात्वा तत्कुर्यात्			जन्मनक्षत्रं तत्कुर्यात् तत्कुर्यात् तत्कुर्यात् नक्ष तत्कुर्यात् तत्कुर्यात् तत्कुर्यात्		
स्थान	न	फलं	स्थान	न	फलं	स्थान	न	फलं
मुखं	३	रोगप्रति	मस्तक	६	लाभ	शिर	६	विजय
रहिनाक्ष	४	लाभ	मुख	१	प्रवर्द्ध	मुख	३	रोगप्र
नोड	५	मार्गचल	हृदय	३	लेखक	हृदय	३	मार्गचल
बायाहा	४	बंधन	हृदय	६	मुखप्र	नोड	६	मार्गचल
हृदय	५	लाभ	बायाहा	३	रोगप्र	बायाहा	३	भय
नेत्र	४	रुग्णीया	मंगल	६	शोक	मुख	१	मृत्यु
मस्तक	१	रजःपद	हृदय	१	हानि	नेत्र	२	दुःख
पुटा	१	अपमृत्यु	बायाहा	१	रोगप्र	हृदय	३	मुख

॥ शुभ ॥ ॥ शुभं च जन्मनक्षत्रं जन्मनक्षत्रं कुर्यात् तत्कुर्यात् ॥

शिरसि त्रीणि राज्यं स्यात् वक्रैकं धनं धान्यदं ॥ ६३ ॥ नेत्रे
 द्वे प्रीति लाभौ च नाभौ श्रीः पंचकं तथा ॥ पादयोः षट्प्रवा
 सश्च वा मे वेदाधनं तथा ॥ ६४ ॥ चत्वारिदक्षिणे हस्ते ध
 नलाभस्तथैव च ॥ गुह्यस्थाने महयं च बंधनं मरणं फ
 लं ॥ ६५ ॥ गुरु ॥ गुरुचक्रं प्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्मक्र
 शकं ॥ दद्याच्चिरसि चत्वारि चत्वारिदक्षिणे करे ॥ ६६ ॥ एकं
 कंठे मुखे पंचपादयोः षट्प्रदापयेत् ॥ हस्ते वा मे च चत्वा
 रि त्रीणि दद्याच्च नेत्रयोः ॥ ६७ ॥ फलं ॥ राज्यं लक्ष्मीर्धनप्रा
 प्तिः पीडा मृत्युस्तथैव च ॥ मुखे नैव क्रमेणैवं फलं ज्ञेयं वि
 चक्षणैः ॥ ६८ ॥ शुक्र ॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तु
 जन्मभं ॥ मुखे त्रीणि महालाभः शीर्षे पंचशुभावहः ॥ ६९
 ॥ त्रिकं तु दक्षिणे पादे कुंशहानिकरं सदा ॥ नथैव वा मपादे
 च त्रीणि भानितु योजयेत् ॥ हृदये द्वे धनं सौख्यं भाएकं ह
 स्तयोर्द्वयोः ॥ मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्ये त्रीणि तथैव च ॥
 स्त्रीलाभश्च फलं प्रोक्तं भृगुपुत्रस्य सूरिभिः ॥ ७१ ॥ ॥

बुधः			गुरु			शुक्रः		
जन्मन सत्रसे बुधकेन			गुरुकेन सत्रसे जन्मन			शुक्रकेन सत्रसे जन्मन स		
सत्रतकदेखना स्थान			सत्रतकदेखना स्थानसे			त्रतकदेखना स्थानसे शु		
से शुभाशुभफल जानना			शुभाशुभफल जानना			भाशुभफल जानना-		
स्थान	न	फल	स्थान	न	फल	स्थान	न	फल
मस्तक	३	राज्यप्रा	मस्तक	४	राज्यप्रा	मुख	३	महाला
मुख	१	धन	द. हात	४	लक्ष्मीप्रा	मस्तक	५	शुभ
नेत्र	२	प्रीतिला	कंठ	१	धनला	द. गोड	३	कुंशहानि
नाभि	५	लक्ष्मीप्रा	मुख	५	पीडा	बा. गोड	३	कुंशहा
गोड	६	प्रवासक	गोड	६	मृत्यु	हृदय	२	धनसौ
बापाहा	४	धनला	बा. हा	४	सुखप्रा	हाथ	८	मित्रसुख
द. हा	४	धनला	नेत्र	३	सुखप्रा	गुह्य	३	स्त्रीला
गुद	२	बंधनमर	•	•	•	•	•	•

॥शनि॥ ॥सौरचक्रं प्रवक्ष्यामि शो रिभाज्जन्मसं॥
 मूर्ध्वैकं चतयावचैकरेचत्वारिदक्षिणे॥७५॥ विचसेत्ता
 द्युग्मौषद्वयमबाहौचतुष्टयं॥ हृदयेपंचक्राणिकमाञ्च
 त्वारिनेत्रयोः॥७६॥ मूर्द्धिद्वयं गुदेवैकं पदस्थपुरुषाकनेः
 ॥फल॥ मूर्द्ध्वचक्रस्थभेरांगौलाभौवैदक्षिणेकरे॥ स्यादध्या
 चरणद्वेदेवधौवामकरेनृणां॥७७॥ हृदयेपंचलाभौवैनेत्रेपी
 तिरुदाहता॥ पूजाप्रस्तेपरानूनं गुदेमृत्युं विनिर्दिशेत्॥७८॥
 ॥राहु॥ राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुचक्रसं॥ मूर्ध्वित्री
 णितथाप्रोक्तं करेचत्वारिदक्षिणे॥७९॥ पादयोः षट्प्रदात
 व्यं वामहस्तिचतुष्टयं॥ हृदयेत्रीणिकंठैवं मुखेदौनेत्रयोर्द्वे
 यं॥८०॥ गुह्येद्वयं क्रमेणैवराहुचक्रं स्वभावतः॥फल॥ रा
 ज्यं रिपुक्षयः पंथा मृत्युर्लोभो यरोगकः॥ जयः सौख्यं तथा
 कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः॥केतु॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्म
 भात्केतुचक्रसं॥ मूर्ध्विपञ्चजयश्चैव मुखेपंचमहद्भयं॥८१॥ ह
 स्तयोर्भौमिचत्वारिविजयश्च जयस्तथा॥ पादयोः षट्च सौख्यं स्या
 त् हृदिद्वेशोककारके॥८२॥ कंठेचत्वारिचव्याधिगुह्यैकं चमहद्भयं॥

शनि			राहु			केतु		
शनिनक्षत्रसेजन्मनक्षत्रकदेखना स्थानसे शुभाशुभफलजानना			जन्मनक्षत्रसेराहुके नक्षत्रकदेखना स्थानसे शुभाशुभफलजानना			जन्मनक्षत्रसेकेतुनक्षत्रकदेखना स्थानसे शुभाशुभफलजानना		
स्थान	न	फल	स्थान	न	फल	स्थान	न	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्र	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	द.हा.	४	रिपुनाश	मुख	५	बहुतम
द.हाथ	४	लाभ	गोड	६	मार्गव	हाथ	४	विजय
गोड	६	मार्गचल	बा.हा.	४	मृत्यु	गोड	६	सौख्य
बा.हा.	४	बंधन	हृदय	३	बहुतदया	हृदय	३	शोक
हृदय	५	लाभ	कंठ	१	रोग	कंठ	४	व्याधि
नेत्र	४	मीति	मुख	२	जय	गुह्य	१	बहुतम
प्रस्तक	१	पूजा	नेत्र	२	सौख्य			
गुह्य	१	मृत्यु	गुह्य	३	क			

उक्तचक्रमेवक्षत्रदेखना॥ ॥ शीर्षत्रीणि मुखे वयं चरविभा
देकैकभंस्कंधयोरेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पंचोदरे
॥ नाभौ पुस्तले च जानु पुगुले एकैकं ससिपेज्जंतोः केचिदि
तिष्ठन्ति मणका शेषाणि पादद्वये ॥ ८२ ॥ अल्पायुश्चरणस्थि
तेन गमनं देशं तज्जानु भेगुह्ये स्यात्तरदारलं भनमहौनाभौ
चमोभयं ॥ ८३ ॥ नस्य करयोर्बल्लोर्बलं वै मुखे
॥ गाराज्यं स्थिरं मूर्धनि ॥ ८३ ॥ ॥

नक्षत्रसे जन्म नक्षत्रतक देखने का क्रम प्रथम
कर फल राजप्राप्ती. सुख पर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्न भोजन स्कं
१२ नक्षत्र फल बलवान्. भुजा पर २ नक्षत्र फल बल. हाथ के नलवे पर २
१ नक्षत्र फल चोर. हृदय पर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य नाभी पर १ नक्षत्र फल सुख
पुष्ठा पर १ नक्षत्र फल स्त्री से लंपट जानू पर २ नक्षत्र फल देशवास. पाद
पर ६ नक्षत्र फल थोड़ा आयुष्य ऐसा जन्म नक्षत्रसे स्थान विचार करना
लगुशुद्धी पंचक देखना ॥ ॥ गत तिथि पुतल ग्रंथ दहत शो
षकं च वसुधम पुगवद्दे सोणि संख्या क्रमेण ॥ रुगनल नृप चौर
मृत्युदं पंचकं स्याद्भूत गृह नृप मार्गो हाह केवर्जनी यम् ॥ ८४ ॥
टी० गत तिथी मेल ग्रयुक्त करना २ से भाग लेना शेष ८ रहेतो रोग पंचक सो
जनेऊ मे वर्ज्य शेष २ रहेतो अग्नि पंचक सो गृहारं भ करान ही शेष ४ र
हे तो राज पंचक और शेष ४ रहेतो चौर पंचक ऐसे दूनों मे ग मन करान
ही शेष १ रहेतो मृत्यु पंचक उस्मे विवाह करान ही इसे दूसरे उ
क शेष रहेतो पंचक नही ऐसा जानना.

वार पर त्वसे पंचक ॥ ॥ रवौ रोग कुजे बन्धि सोमे तु नृप पं
चकं ॥ बुधे चौर शनौ मृत्युः पंचकानि तु वर्जयेत् ॥ ८५ ॥
टी० रविवार को रोग पंचक त्याग करना मंगल को अग्नि पंचक. चंद्रवा
र को राज पंचक बुधवार को चौर पंचक शनिवार को मृत्यु पंचक ऐसा य
ह वार पंचक त्याग करना. ॥ दिन मान रात्रि मान ॥
अयनादिक वासर रामहता गगना नल बाण शशांक पुताः ॥
परिभाजित शून्यर सैर्घटिका कर्कादि निशामकरादि दिन ८६

ज्योतिषसार २६

टी० अथनकहिपेककसंक्रांतीसे ६ मकरसंक्रांतीतक १२०
 क्रांतीसे ६ कर्कसंक्रांतीतक इत्येजि सतिथीकादिनगानकरनाहोय
 उहातक गिननातवउस्को १ सेगुणदेना जो अंकहोयउम्मे १५३० मिला
 बना ६० सेभागलेना शेषजोरहे सीरत्रिमान जानना कर्क संक्रांतीसे
 देखना औरमकरसंक्रांतीसे दिनमानजातना-

दिनकितना आगामो

अथनारहि

ताचमेघात्पटुस्तिनुनात्रि

दिनदलस्थनगाहतस्य पूर्वगतोऽस्य

टी० प्रथमअपनी व्यापागोउसेगिननाजो अंकऔप
 औरमेषसंक्रांतीसेकन्यातक १ अंकउस्तोकमकरना इस्त
 सेमीनतक संक्रांतीके दोपककमकरना सोतुला ३ वृश्चिक ४ ध
 कर ५ कुंभ ४ मीन ३ यहरितसेकमकरना ऐसा अंककमकरकोजूता
 १२ खनामनतरदिनकादल १५ इस्को ७ सेगुणदिपातो १०५ अणाइस्के
 पीछेरखे अंकसे भागलेना जो अंकआवे सो पटिका परनुदिनकेपू
 र्वाधकी पड़ी भई औरउत्तरार्द्धमेइतनादिनरहाऐसाकहना-

गनकितनी भईसेदेखना ॥ सूर्यभावाध्यनसूत्रेमात्रसे

ख्याविशोधितं ॥ विंशति घनवहतंगतारात्रिः स्फुटाभवेत्

टी० एतको मध्यमे जोनसूत्र आयाहोयउतनानसूत्रसूर्यनसूत्रसे
 नना औरउस्मे ७ कमकरना शेषजोरहे उस्को २० सेगुणदेना २ सेभा
 लेना शेषजोरहे उत्तरी रातगत भईऐसाजानना-

अंतरंगबहिरंगनसूत्र

सूर्यभाद्रपदगणपुनः पुनर्गण्यतामिति चतुष्टयं च ॥

अंतरंगबहिरंगसंज्ञकतत्र कर्मविदधी तता दृशं ॥ ८९

टी० सूर्यनसूत्रसेदिननसूत्रनकदेखना प्रथम ७ नसूत्र भीतर ३ न
 सूत्रबाहर ऐसेकमसे अंतरंग बहिरंगनसूत्रना चहपमूलना
 रनेको औरदेनेको कथित है

IGNCA RAB
 ACC. No. 183

५ इति भाषा टीकासाहितज्यातपसारः समाप्तः ॥

